RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 16, Issue: 1, January-June, 2024

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से डॉ. अजयपाल कौशिक (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक - प्रो. दामोदर शास्त्री।

14वां दीक्षांत समारोह 06

34वां स्थापना दिवस समारोह 09

विश्वविद्यालय को मिले 4 पेटेंट 12-13

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 14

तीन दिवसीय शोध उन्मुखीकरण कार्यक्रम 29

Grade 'A' by NAAC & Category 'A' by Ministry of Education

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, District- Didwana-Kuchaman (Raj.) India

Acharya Mahaprajna Medical College & Hospital of Naturopathy and Yoga

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit.
Ph.D.
M.A./
M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Political Science
Yoga and Science of Living

- English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Online/Offline Certificate Courses

Regular and Distance Education

New Initiative : Center for Rajasthani Language & Literature

Upcoming Programme : Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- Grade 'A' by NAAC, Bangalore
- Category 'A' by Ministry of Education, GoI, New Delhi
- 12B Status by UGC, New Delhi
- India's 10 Best Universities to Watch in 2021 by Education Stalwarts magazine
- "Dr Shri Prakash Dubey Smriti National Philosophy Award" by All India National Philosophy Council.
- 'Best in Class University award' in 2018 at World HRD Congress
- "Best Deemed University in Rajasthan" by Asia Education Summit & Awards, 2018
- Ranked 10th in Top-25 Private/ Deemed Universities in India-2017 by Higher Education Review Magzine
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association of North America
- Presidential award conferred to four faculty members
- 7 World records by the students of Dept. of Yoga and Science of Living
- Smart Classrooms
- Wi-Fi Equipped Safe and Secure Campus
- Rich Placements
- Hostel and Canteen Facility
- Air Conditioned Auditorium
- More than 15 highly Equipped Labs

For more details please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

प्रायश्चित्त से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया— **पायच्छित्तकरणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?** भंते! प्रायश्चित्त करने से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया— **पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छितं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ।** प्रायश्चित्त करने से पापकर्मों की विशुद्धि होती है और आदमी निरतिचार हो जाता है। सम्यक् प्रकार से प्रायश्चित्त को स्वीकार करने वाला व्यक्ति मार्ग और मार्ग फल का विशोधन करता है तथा आचार और आचार के फल की आराधना करता है।

व्यक्ति के जीवन में यदा-कदा गलतियां हो सकती हैं। ऐसे लोग तो बहुत कम मिलेंगे, जिन्होंने लम्बा जीवनकाल प्राप्त किया हो और कभी भी कोई गलती उनसे न हुई हो। सामान्यतया गलती होना बहुत संभव है। एक सामान्य आदमी की बात तो दूर, साधक के साधनाकाल में भी प्रमाद हो जाता है। कभी छोटा प्रमाद हो सकता है और कभी बड़ा प्रमाद भी हो सकता है, क्योंकि अभी उसने सिद्धत्व को प्राप्त नहीं किया है। वह साधना की प्रक्रिया से गुजर रहा है। हाँ, गलती का समर्थन नहीं करना चाहिए, गलती को गलती मानना चाहिए और फिर गलती के परिष्कार का प्रयास करना चाहिए। प्रमाद चाहे साधु-जीवन में हो या श्रावक-जीवन में, प्रमाद के विशुद्धिकरण का लक्ष्य रहना चाहिए।

'जैन सिद्धान्त दीपिका' में प्रायश्चित्त को परिभाषित करते हुए कहा गया है— **अतिचारविशुद्धये प्रयत्नः प्रायश्चित्तम्,** दोष-विशुद्धि के लिए किया जाने वाला प्रयास प्रायश्चित्त कहलाता है। जहाँ कोई टूट-फूट हो गई, उसे ठीक करने का प्रयास अथवा कपड़ा फट गया, उसे सीलने का प्रयास अथवा कहीं धब्बा लग गया, उसे साफ करने का प्रयास करना ही प्रायश्चित्त है।

आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया है कि प्रायश्चित्त करने से पापकर्म की शुद्धि होती है और व्यक्ति निरतिचार बन जाता है। सम्यक्तया प्रायश्चित्त स्वीकार करता हुआ साधक मार्ग और मार्गफल की विशुद्धि करता है। साधना के मार्ग हैं— ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधना, एवं मार्गफल है मोक्ष की प्राप्ति। प्रायश्चित्त कर लेने से ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना का मार्ग विशुद्ध बनता है, प्रशस्त बनता है और फिर उसका फल यानी अपने गंतव्य स्थल मोक्ष को भी प्राप्त हो जाता है।

अनुक्रमणिका

01. संपादकीय- देश में सबसे अनूठा विश्वविद्यालय है जैन विश्वभारती संस्थान 05

02. 14वां दीक्षांत समारोह
आचार्यों के निर्देशन में ही भारत विश्वगुरु बन सकता है- रमेश बैस (महामहिम राज्यपाल महाराष्ट्र) 06

03. अनुशास्ता के दर्शन/दो दिवसीय 'गुरू संबोधि' समारोह 08

04. 34वां स्थापना दिवस समारोह
संस्कृति, पर्यावरण व संसाधनों की रक्षा करें और नैतिकता का विकास व भाईचारे का निर्माण करें- विधानसभा अध्यक्ष देवनानी 09

05. एआई पर्यावरण मोनिटरिंग उपकरण को अन्तर्राष्ट्रीय पेटेंट मिला 12

06. जैविभा विश्वविद्यालय को मिला 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली' का पैटेंट 12

07. डिजीटल शिक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने की तकनीक का पेटेंट 13

08. डॉ. लिपी जैन को 'साहित्योपासक क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी अहिंसा एवं जन-चेतना पुरस्कार' 13

09. राष्ट्रीय सेमिनार- 'भारतीय परंपराओं में अहिंसक संप्रेषण की खोज' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 14

10. अन्तर्राष्ट्रीय राजस्थानी समर स्कूल- राजस्थानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में सप्त दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन 16

11. अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार- 'सामाजिक शांति' विषयक दो दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार आयोजित 17

12. विश्व दार्शनिक दिवस पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित 19

13. 'वैश्वीकरण की नैतिकता' विषयक द्विदिवसीय व्याख्यान 20

14. एंटी रैगिंग सेल एवं एंटी रैगिंग स्क्वॉड समिति ने किया विश्वविद्यालय का औचक निरीक्षण 21

15. दूरस्थ शिक्षा की चुनौतियों व अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 22

16. 15 दिवसीय सम्पर्क एवं योग प्रशिक्षण कार्यक्रम 22

17. प्रो. बच्छराज दूगड़ की 'अतीन्द्रिय ज्ञान' पुस्तक की समीक्षा 23

18. आचार्य महाप्रज्ञ के लेख की समीक्षा प्रस्तुत 23

19. विकसित भारत 2047 कार्यक्रम शृंखला 24

20. 'व्यवस्थित दिनचर्या एवं संयमित आहार' पर व्याख्यान आयोजित 25

21. 'जीवन में सफलता के मंत्र' पर व्याख्यान आयोजित 25

22. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम 26

23. सामूहिक रूप से किया गया अणुव्रत महासंगान 27

24. जैविभा संस्थान में लोकपाल की नियुक्ति 27

25. दो दिवसीय प्राणिक हीलिंग कार्यशाला आयोजित 28

26. दो दिवसीय आर्ट एंड क्राफ्ट कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन 28

27. सी.ए. फाउण्डेशन कोर्स का शुभारंभ 28

28. तीन दिवसीय शोध उन्मुखीकरण कार्यक्रम 29

29. साईबर जागरूकता वेबिनार आयोजन 29

30. सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ 30

31. अध्यात्मिक मनोविज्ञान विषय पर व्याख्यान 30

32. तीन दिवसीय वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिताएं 31

33. फिट इंडिया सप्ताह आयोजित 31

34. एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर 32

35. एनसीसी कैडेट्स को सफल प्रशिक्षण सर्टिफिकेट्स 33

36. राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ 34

37. पर्व/जयंती/दिवस विशेष 36

38. 'ग्लोबल वार्मिंग का विश्व पर प्रभाव' विषय पर व्याख्यान 39

39. मतदान जागरूकता कार्यक्रम 40

40. प्राकृत भाषा व साहित्य पर व्याख्यानमाला 41

41. आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में फेयरवेल पार्टी आयोजित 43

42. अहिंसा एवं शांति विभाग में विदाई समारोह 43

43. शिक्षा विभाग में शुभ भावना कार्यक्रम आयोजित 44

44. समाज में शांति और अहिंसक व्यवहार को कायम करने में सहायक रहती है 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली' 45

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-16, अंक- 1
जनवरी-जून, 2024

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
जिला- डीडवाना कुचामन (राजस्थान)
दूरभाष : (01581) 226110, 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

देश में सबसे अनूठा विश्वविद्यालय है जैन विश्वभारती संस्थान

आविष्कार, अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में बनाए नवीन कीर्तिमान

जैन विश्वभारती संस्थान देश भर में अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। अब यह इन विशेषताओं के साथ ही पहला ऐसा विश्वविद्यालय भी बन चुका है, जिसके प्राध्यापकगण लगातार शोध, अनुसंधान और आविष्कार के मामले में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परचम फहरा चुके हैं। यहां के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत द्वारा पर्यावरण की शुद्धता की मोनिटरिंग के लिए बिना किसी तार के चलने वाली आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी युक्त एक मशीन घड़ी का निर्माण किया गया है, जिसका पेटेंट ब्रिटेन के बौद्धिक संपदा कार्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है। कृत्रिम बुद्धि सम्पन्न इस उपकरण का उपयोग पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का अंकन और संकेतन कर सकेंगे। इससे वातावरण की शुद्धि के लिए मानव की सजगता निरन्तर बनी रहेगी। यह अपनी तरह का विश्व का पहले वायरलेस उपकरण है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अमिता जैन और अहिंसा एवं शान्ति विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. लिपि जैन द्वारा 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' कृति इजाद की गई है। जिसका पेटेंट भी हो चुका है। 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' का डिजाइन पेटेंट, डिजिटल शिक्षा को स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस द्वारा परिवर्तित करता है, जो आधुनिक हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को एक सरल प्लेटफॉर्म में जोड़ता है। यह एक अत्याधुनिक डिजिटल शिक्षा उपकरण है, छात्र और शिक्षक के सीखने में सुधार करता है, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और शैक्षिक परिणामों को शामिल करता है व विद्यार्थियों की कार्यक्षमता और उपयोगिता को बढ़ाता है। इसके अलावा प्रो. बीएल जैन एवं डॉ. अमिता जैन को 'छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक प्रणाली और विधि' पर आधारित आविष्कार का एक और पेटेंट मिला है। इस प्रकार जैन विश्वभारती संस्थान के अन्तर्गत लगतार नवीन आविष्कार एवं उनके पेटेंट हासिल होना संस्थान के लिए गौरव की बात है।

जैन विश्वभारती संस्थान को 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली' का पेटेंट अधिकार प्राप्त हो गया है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित अहिंसा प्रशिक्षण की विकसित प्रणाली को 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' के नाम से मिले इस पेटेंट के लिए जैन विश्वभारती संस्थान डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह व डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ के भारत सरकार के समक्ष आवेदन किया था। पेटेंट डिजाइन एंड ट्रेड मार्क्स विभाग के कंट्रोलर जनरल ने इसे स्वीकार कर लिया।

जैन विश्वभारती संस्थान देश का ऐसा पहला व विशेष विश्वविद्यालय भी है, जिसमें उम्रदराज पढने के इच्छुक लोग तो शिक्षा व उच्च डिग्रियां प्राप्त करते ही हैं, साथ ही यहां वैराग्य धारण कर चुके साधु-साध्वियां तक अध्ययनरत हैं और स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी तक की उच्चतम डिग्रियां प्राप्त कर चुके हैं। यह गर्वानुभूति का भाव उल्लेखनीय रहेगा कि इस संस्थान से अब तक 2300 से अधिक साधु-साध्वियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। इनमें जैन समाज के सभी सम्प्रदायों के अलावा जैनेत्तर सम्प्रदायों के साधु-संत भी सम्मिलित हैं। यह भी विशेष बात है कि इन सभी वैरागीजनों के लिए विश्वविद्यालय पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करता है। अध्ययन प्राप्त करने वाले सभी साधु-साध्वी पादविहारी हैं, जो एक स्थान पर नहीं रह कर देश भर में विचरण करते रहते हैं। इसलिए उनकी परीक्षा की व्यवस्थाएं यह विश्वविद्यालय उनके चातुर्मास प्रवास काल के दौरान उस क्षेत्र के किसी मान्यता प्राप्त स्कूल/कॉलेज में निःशुल्क करवाता है। इस व्यवस्था का लाभ लेकर 300 से 400 साधु-साध्वी प्रतिवर्ष यहां से अध्ययन करते आए हैं। ये निरन्तर भ्रमण पर रहने वाले साधु-साध्वी अपने पास कोई मोबाइल या लैपटोप नहीं रखते और इंटरनेट का उपयोग भी नहीं करते, इसलिए ऑनलाइन शिक्षा के बिना ही इनको दूरस्थ शिक्षा का लाभ दिया जाता है। सामाजिक- आध्यात्मिक व राष्ट्र की नैतिक उन्नति की दिशा में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है।

संस्थान परिसर में राजनीति, शिक्षा, फिल्म जगत, संगीत, लेखन, ज्योतिष और अन्य सभी क्षेत्रों के विद्वानों का निरन्तर आना-जाना रहता है। इनमें राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की हस्तियां व सरकार व संस्थानों में उच्च पदाधिकारीगण भी होते हैं। इन सबकी जैन विश्वभारती संस्थान को लेकर हमेशा उत्कृष्ट राय रहती है। यहां के हरितिमा युक्त वातावरण के साथ परिसर में व्याप्त शांति, पवित्रता, अध्यात्म उन्हें सम्मोहित कर देता है। फिर यहां उपलब्ध आधुनिकतम सुविधाएं, व्यवस्थाएं, शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक गतिविधियां, यहां के सबसे हट कर संचालित किए जा रहे पाठ्यक्रम आदि की जानकारी से वे भावविभोर हो जाते हैं। सुदूर रेगिस्तानी इलाके में इतने सुंदर शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, प्राचीन ग्रंथों, पांडुलिपियों, हस्तकलाकृतियों आदि के आकर्षण में वे बंध से जाते हैं। यह सब यहां के तीन अनुशास्ताओं आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण के आशीर्वाद, निर्देशन एवं सान्निध्य से संभव हो पाया है। यहां रहे कुलपतियों का योगदान भी सदैव सराहनीय रहा है। वर्तमान में अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के दिशा-दर्शन, मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, मुनिश्री कीर्ति कुमार जी के मार्गदर्शन एवं मुनि श्री कुमार श्रमण जी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षण में कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ की कुशल नेतृत्व क्षमता, प्रशानिक दृढता, प्रबंधन क्षमता और स्नेहिल कार्यशैली से यह विश्वविद्यालय दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति कर रहा है।

– जगदीश यायावर (अतिथि सम्पादक)

14वां दीक्षांत समारोह

आचार्यों के निर्देशन में ही भारत विश्वगुरु बन सकता है- रमेश बैस (महामहिम राज्यपाल महाराष्ट्र)

वाशी (महाराष्ट्र) में 14वें दीक्षांत समारोह में प्रख्यात अर्थशास्त्री केवी कामथ व वेद विद्या के मनीषी डा. दयानन्द भार्गव को मानद उपाधि सहित 25 पी-एच्.डी., 10 को गोल्ड मैडल एवं 3909 स्नातक एवं अधिस्नातक डिग्रियां वितरित

संस्थान का 14वां दीक्षांत समारोह अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में महाराष्ट्र के वाशी में 19 फरवरी को आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस थे। उन्होंने कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान वैश्विक स्तर पर मानवता के लिए, सार्वभौमिक व्यक्ति के लिए नैतिकता के जागरण के लिए अहिंसा, शांति के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहा है। वर्तमान में विश्वयुद्ध की परिस्थितियों, आर्थिक विषमताओं, विस्थापन की स्थिति आदि के लिए नैतिकता और शांति की स्थापना महत्त्वपूर्ण हो गई है। आंतरिक शांति, राष्ट्र शांति और प्रकृति की शांति इन तीनों के लिए प्रयास जरूरी है। भारत शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की बात को प्रसारित कर रहा है।

आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण के विचारों से ही हम नई पीढी को चरित्रवान बना पाएंगे। उन्होंने दीक्षांत समारोह के सम्बंध में कहा कि दीक्षा का अंत हो सकता है, लेकिन शिक्षा का कोई अंत नहीं होता। सीखने के लिए ज्ञानप्राप्ति के लिए कोई उम्र नहीं होती। ज्ञान किसी भी उम्र में प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र द्वारा वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के विकास की ओर दिए जा रहे ध्यान की प्रशंसा की और कहा कि नई शिक्षा नीति से काफी परिवर्तन आया है। आज शिक्षा नैतिकता के लिए, चरित्र निर्माण और व्यक्ति निर्माण के लिए है। आचार्यों के निर्देशन में ही भारत को विश्वगुरु बनाया जा सकेगा।

ज्ञान प्राप्ति के लिए निष्ठा और चरित्र सबसे अधिक जरूरी

अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने समारोह में सभी दीक्षार्थियों को 'सिक्खापदं' का उच्चारण करवाया और अपने आशीर्वचन में कहा कि जीवन में ज्ञान का महत्त्व बहुत अधिक होता है। शास्त्रों में, आगमों में ज्ञान के सम्बंध में बहुत बातें भरी पड़ी है। उन्होंने अहंकार, गुस्सा, प्रमाद, रोग, आलस्य को ज्ञान-प्राप्ति में बाधक बताया और इनसे बचने का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। आचार्यश्री ने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार दिए जाने की भी जरूरत बताई और कहा कि ज्ञान और आचार दोनों जरूरी होते हैं। ज्ञान का आदान-प्रदान ही सरस्वती की साधना होती है। उन्होंने आचार्य तुलसी को शिक्षा देने और अध्यापन करने वाले बताते हुए कहा कि अणुव्रतों के माध्यम से उन्होंने जीवन में अच्छा आदमी बनने के उपाय बताए। महाश्रमण ने अणुव्रत गीत के महत्त्वपूर्ण अंशों का गान करते हुए विद्यार्थी के लिए उनकी आवश्यकता बताई और कहा कि विद्यार्थी में ज्ञान-प्राप्ति के लिए निष्ठा और चरित्र सबसे ज्यादा जरूरी है। ज्ञान-प्राप्ति के प्रति जागरूक होने के साथ ही शांति, अहिंसा व नैतिकता के मूल्यों का विकास भी होना महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान को विद्यार्थी के बौद्धिक, शारीरिक व मानसिक विकास को विद्यार्थी विकास के लिए जरूरी बताया।

आचार्य तुलसी ने मूल्य आधारित शिक्षा की नींव रखी

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलाधिपति व केन्द्र सरकार के विधि एवं न्याय तथा संस्कृति व संसदीय मामलात के मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने संकल्प सूत्र का सामूहिक पाठ करवाते हुए आचार्य तुलसी की दूरदृष्टि की सराहना करते हुए कहा कि 1991 में ही उन्होंने सोच लिया था कि मूल्य आधारित शिक्षा नहीं मिली तो श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण नहीं कर पाएंगे। अब नई शिक्षा नीति में भी मूल्य आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है। नैतिकता होना राष्ट्र की आवश्यकता है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने स्वागत वक्तव्य एवं संस्थान परिचय प्रस्तुत करते हुए संस्थान के प्रारम्भ से लेकर अब तक के सभी कुलपतियों का स्मरण किया और उनके योगदान के बारे में जानकारी दी एवं संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया। इस अवसर पर डी-लिट. की मानद उपाधि प्राप्त करने वाले विद्वान प्रख्यात अर्थशास्त्री के.वी. कामथ व वेद एवं जैन विद्या के विश्रुत मनीषी प्रो. दयानंद भार्गव ने भी समारोह को सम्बोधित किया। देश के इन प्रख्यात विद्वानों को प्रदान की गई मानद उपाधि का वाचन प्रो. नलिन के. शास्त्री ने किया। इस दीक्षांत समारोह में कुल 25 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि 10 को गोल्ड मैडल व विशेष योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए तथा 3909 विद्यार्थियों को स्नातक व अधिस्नातक की डिग्रियां प्रदान की गई। इनमें मुनिश्री आलोक कुमार, साध्वी रूचिदर्शनाश्री, साध्वी श्रुतिदर्शनाश्री भी शामिल हैं। समारोह में विद्यार्थियों व प्रमुख लोगों के साथ साध्वी प्रमुखा, मुख्य मुनि, महावीर मुनि, मुनिश्री कुमार श्रमण, विशिष्ट अतिथि विधायक गणेश नायक, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ आदि भी उपस्थित रहे। अंत में आभार ज्ञापन व समारोह का संचालन कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने किया।

अनुशास्ता के दर्शन

लक्ष्य बनाकर संकल्प से परिश्रम पूर्वक ज्ञान प्राप्त करें- आचार्यश्री महाश्रमण

संस्थान सदस्यों द्वारा वाशी में अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का दर्शन लाभ एवं संबोधन प्राप्त

संस्थान के अनुशास्ता एवं तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा है कि जैन विश्वभारती संस्थान ज्ञान की आराधना है। यह संस्थान एक महत्त्वपूर्ण कार्य में लगा हुआ है। यहां समणियों, मुमुक्षु आदि का आवागमन रहता है। यह तपोवन, तपोभूमि जैसा है, यहां ज्ञान की आराधना है, ज्ञान की आराधना में अच्छे संस्कारों का बहुत महत्त्व है। लक्ष्य बनाकर संकल्प से परिश्रम पूर्वक ज्ञान प्राप्त करने को उपयोगी बताते हुए उन्होंने मोक्ष के लिए ज्ञान प्राप्ति के लिए चरित्र की शुद्धि को आवश्यक बताया और कहा कि सम्यक् ज्ञान प्राप्त तभी हो सकता है। ज्ञान से अभय की प्राप्ति होती है, जैविभा प्रांगण में रोज अभय है। यहां मयूर बहुत आते हैं और सारे अभय होकर विचरण करते हैं। वे अपने वाशी प्रवास के दौरान 23 फरवरी को जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं से आए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, रजिस्ट्रार प्रो. बी.एल. जैन, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं अन्य स्टाफ द्वारा दर्शनलाभ प्राप्त करने के अवसर पर सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने उन्हें जैन विश्वभारती संस्थान की गतिविधियों, पाठ्यक्रमों एवं भविष्य की योजनाओं के बारे में अवगत करवाया। प्रो. त्रिपाठी एवं प्रो. जैन ने भी उन्हें विस्तार से संस्थान की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, प्रो. केएन व्यास, प्रो. एके मल्लिक, बृजमोहन शर्मा, प्रो. नलिन के. शास्त्री, धर्मचंद जैन, प्रो. जुगल किशोर दाधीच, विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी आरके जैन, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, पंकज भटनागर आदि उपस्थित रहे।

संस्थान का 34वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

संस्कृति, पर्यावरण व संसाधनों की रक्षा करें और नैतिकता का विकास व भाईचारे का निर्माण करें- विधानसभा अध्यक्ष देवनानी

संस्थान के 34वें स्थापना दिवस समारोह 20 मार्च को आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि भारत की बौद्धिकता पूरी दुनिया स्वीकार कर रही है। भारत आज ऊंचाइयों को छू रहा है। हर जगह भारतीयों का बोलबाला है। अकेले इंग्लैंड में 80 प्रतिशत डॉक्टर भारतीय हैं। उन्होंने प्राचीन भारत के 7 लाख गुरुकुलों, मध्य भारत के नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में चीन आदि विश्वभर के लोगों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने और आधुनिक भारत के जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत पहले भी विश्वगुरु रहा था, आज भी विश्वगुरु है और भविष्य में भी विश्वगुरु रहेगा। उन्होंने देश की प्राचीन विरासत के स्मारकों का उल्लेख करते हुए भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का महत्त्व बताया और कहा कि भारत युवाओं का देश है और सत्य, अहिंसा, दया, करुणा का देश है। वीरता व बलिदानों का देश है। यहां कण-कण में शंकर है। यह मैत्रेयी, गार्गी आदि विदुषियों का देश है। रानी लक्ष्मी बाई, अहिल्या बाई होल्कर आदि वीरांगनाओं का देश है। यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम का देश है। हम इन सबको पढेंगे तो हमें गर्व होगा। महावीर, गौतम बुद्ध, आचार्य चाणक्य, आचार्य तुलसी के इस देश में उनको पढेंगे, तो पता चलेगा कि हमारा जन्म किस लिए हुआ है।

जीवन का सही ज्ञान बहुत जरूरी

देवनानी ने सनातन संस्कृति और अध्यात्म को उत्कृष्ट बताते हुए कहा कि केवल स्वयं को सम्पन्न बनाने की भावना के बजाय साथ में मूल्यों को भी महत्त्व देने वाली शिक्षा भी आवश्यक है। अमेरिका में भौतिकवाद है, वहां धन-दौलत, सुविधाओं की कमी नहीं है, पर वे पागलपन और अनिद्रा से ग्रस्त हो रहे हैं। इससे बचने के लिए हमें जीवन का सही ज्ञान प्राप्त करना होगा और उस ज्ञान को अपने जीवन में उतारना जरूरी है। उन्होंने कहा कि मैकाले ने हमारी संस्कृति की जड़ों को काटने वाली शिक्षा नीति दी थी, लेकिन आज देश का नेतृत्व सही हाथों में है, हम वापस अध्यात्म की तरफ जा रहे हैं। आज समय की आवश्यकता है कि हम देश की संस्कृति की रक्षा के साथ-साथ पर्यावरण की रक्षा करें, देश के संसाधनों की रक्षा करें और देश में भाईचारे का निर्माण करें। नैतिकता का विकास करें। नैतिकता पूर्ण जीवन बनाने में शिक्षकों की भूमिका

महत्त्वपूर्ण है, उन्हें पढाने के साथ ही संस्कार भी देने होते हैं और संस्कार तभी दिए जा सकते हैं, जब शिक्षक स्वयं भी उनके अनुकूल हों।

2300 साधु-साध्वियों को दी उच्च शिक्षा की डिग्रियां

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विश्वविद्यालय की विशेषताओं, प्रगति, गतिविधियों एवं भावी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संस्थान में आधारभूत संरचना में नेचुरोपैथी मेडिकल सेंटर के साथ ही अनेक कार्य किए जा रहे हैं। यहां छात्रहित के साथ मानव संसाधन विकास के लिए निरन्तर प्रयास किए जाते हैं। यहां पुरातन ज्ञान के सुदृढीकरण काम किया जाता है। पांडुलिपि संरक्षण के लिए भारत सरकार के सहयोग से पांडुलिपियों के संरक्षण की योजनाओं पर काम हो रहा है। देश भर में यह अकेला ऐसा विश्वविद्यालय है, जहां प्राकृत भाषा के माध्यम से निरन्तर अबाध रूप से व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने शोध सम्बंधी महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स का विवरण देते हुए कहा कि जैन परम्परा के 'संथारा', 'वर्षीतप' और 'सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करने' पर वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है। यहां चल रही विभिन्न शोध परियोजनाओं के प्रकाशन का काम भी हाथ में लिया गया है। वास्तु, ज्योतिष, आहार, जैन जीवन पद्धति आदि विभिन्न विषयों पर भी पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। संस्थान में नेचुरोपैथी व क्लासिकल म्युजिक के लिए दो विभाग बनाए गए हैं। इसके अलावा राजस्थानी भाषा व साहित्य के लिए केन्द्र बनाया जाकर कार्य किया जा रहा है। यहां संचालित दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र में 900 वीडियो लेक्चर उपलब्ध हैं। ईएफआरसी स्टुडियो का कार्य चल रहा है।

दूरस्थ शिक्षा से वर्तमान में 10 हजार विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। यहां बिना सम्प्रदाय-भेद के समग्र जैन व अन्य साधु-साध्वियों की ज्ञानवृद्धि के लिए उच्च शिक्षा दी जा रही है। संस्थान ने 2300 साधु-साध्वियों को शिक्षा प्रदान करके स्नातक व स्नातकोत्तर की डिग्रियां दी हैं। 125 साधु-साध्वियों को डाक्टरेट (पीएचडी) की डिग्रियां दी गई हैं, इसके लिए उन्हें निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करवाई जाती है। उनकी सुविधाओं को ध्यान में रख कर संस्थान उनकी परीक्षा के लिए विशेष व्यवस्था करता है, लेकिन गुणवत्ता और मानदंडों के साथ कोई समझौता नहीं किया जाता। अब तक संस्थान के लिए आए सभी मूल्यांकनकर्ताओं ने इसके पाठ्यक्रमों को अद्वितीय और भविष्योन्मुखी माना है।

ऋतु-परिवर्तन सबसे बड़ा खतरा

समारोह के विशिष्ट अतिथि भारतीय कम्पनी सचिव संस्थान की पूर्वी भारत परिषद् के पूर्व अध्यक्ष विनोद कोठारी ने आचार्य तुलसी की परिकल्पना के अनुसार जीवन के लिए शिक्षा और आजीविका की आवश्यकता के बारे में बताया और कहा कि केवल आर्थिक पक्ष को लेना सबसे बड़ी समस्या है। मानव जाति के लिए उन्होंने ऋतु-परिवर्तन को बड़ा खतरा बताते हुए कहा कि संभावनाएं जताई जा रही हैं कि

2050 तक मुम्बई पानी में समा जाएगा। सारी अर्थव्यवस्था को एंकांगी बनाने का विरोध करते हुए उन्होंने जैन आगमों में निषिद्ध बताए गए उद्यमों को निवेश के लिए निषेधित करने को जरूरी बताया। इस अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सम्माननीय अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लूंकड़ व पूर्व मुख्य ट्रस्टी भागचंद बरड़िया मंचस्थ रहे। मंगलाचरण से शुरू हुए इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में भाजपा के जिलाध्यक्ष गजेन्द्र सिंह ओड़ींट, लोकेन्द्र सिंह नरूका, महिला मोर्चा की जिला महामंत्री सुनीता वर्मा, प्रो. नलिन के. शास्त्री, डा. समणी कुसुमप्रज्ञा, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. लिपि जैन, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, डा. आभा सिंह आदि मौजूद रहे। संचालन डा. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

उत्कृष्ट प्रदर्शन पर किया पुरस्कृत

संस्थान के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी तथा कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ द्वारा इन सबको ये पुरस्कार प्रदान किए गए। इसी के तहत अहिंसा एवं शांति विभाग की एम.ए. राजनीति विज्ञान की छात्रा संगीता जानू को स्नातकोत्तर स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार प्रदान किया गया। विभाग में छात्रा की सक्रिय भूमिका, अनुशासन तथा विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न सह-शैक्षणिक गतिविधियों में सहभागिता के आधार पर उसका चयन किया गया।

स्थापना समारोह के द्वितीय चरण में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मन मोहा

संस्थान के 34वें स्थापना दिवस के द्वितीय चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के सान्निध्य में हुए इस कार्यक्रम में महिला सशक्तीकरण पर आधारित नृत्य, नाटक, कविताएं, शास्त्रीय नृत्य, मराठी नृत्य, राजस्थानी नृत्य, पंजाबी नृत्य, हरियाणवी नृत्य, कठपुतली नृत्य आदि की प्रस्तुतियां देकर छात्राओं ने माहौल को खुशनुमा बना दिया। छात्राओं की कलापूर्ण प्रतिभा से सभी अचम्भित थे।

इस अवसर पर प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया। ड्रामा में मुमुक्षु राजुल एवं समूह, रंगोली में आकांक्षा शर्मा एवं समूह, एकल गान में रेणु मुणोत, आशु भाषण में मुमुक्षु भावना नाहटा, पोस्टर पेंटिंग में मुमुक्षु खुशी सुराणा, वाद विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी, पाश्चात्य नृत्य में नेहा कंवर एवं समूह, कविता में प्रकृति, मेहंदी प्रतियोगिता में आयुश्री चोटिया, अनुपयोगी सामान का उपयोग प्रतियोगिता में अपर्णा पांडेय, लोकनृत्य एवं क्लासिकल डांस (एकल) में ऐश्वर्या सोनी, पूनम सोनी व तमन्ना तंवर, लोकनृत्य एवं क्लासिकल डांस (सामूहिक) में दिलाशा एवं समूह को पारितोषिक प्रदान किए गए। खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं में महिला खो-खो में अनिता साहू की टीम, महिला कबड्डी में कविता डूकिया की टीम, महिला बैडमिंटन में तन्नू, 100 मीटर दौड़ में भूमिका सेठी, ऊंची कूद में निशा, लोंग जम्प में अनिता साऊ, महिला शोटपुट में विद्या चौधरी व 100 मीटर दौड़ (पुरुष) में कृष्ण कुमार जाखड़ को पुरस्कृत किया गया। प्रथम के अलावा द्वितीय व तृतीय स्थानों पर विजयी घोषित विद्यार्थियों को भी सर्टिफिकेट एवं मेमेण्टो प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ हरि स्तोत्र से किया गया।

इस अवसर पर प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बी एल जैन, प्रो. जिनेंद्र जैन आदि सभी विभागों के विभागाध्यक्ष एवं संस्थान परिवार उपस्थित रहा। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया।

डॉ. शेखावत द्वारा इजाद किए गए एआई पर्यावरण मोनिटरिंग उपकरण को अन्तर्राष्ट्रीय पेटेंट मिला

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत और टीम द्वारा पर्यावरण की शुद्धता की मोनिटरिंग के लिए बिना किसी तार के चलने वाली आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी युक्त एक मशीन घड़ी का निर्माण किया है, जिसका पेटेंट 28 जनवरी 2024 को ब्रिटेन के बौद्धिक संपदा कार्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है। इस समूचे क्षेत्र के लिए यह पहला वैज्ञानिक पेटेंट है, जिसमें जैविभा विश्वविद्यालय का योगदान शामिल है। बौद्धिक संपदा कार्यालय यूके के पेटेंट, डिजाइन और ट्रेड मार्क्स के नियंत्रक-महालेखाकार एडम विलियम्स ने इस पेटेंट के लिए उन्हें प्रमाण पत्र जारी किया है। उनके इस पेटेंट के लिए अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन वर्गीकरण में घड़ियां और अन्य माप उपकरण, जांच और संकेत देने वाले उपकरण, सुरक्षा व परीक्षण उपकरण श्रेणी में शामिल किया गया है। कृत्रिम बुद्धि सम्पन्न इस उपकरण का उपयोग कर पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का अंकन और संकेतन कर सकेंगे। इससे वातावरण की शुद्धि के लिए मानव की सजगता निरन्तर बनी रहेगी।

पर्यावरणीय मापदंडों का सटीक और वास्तविक समय मूल्यांकन संभव होगा

डा. शेखावत ने बताया कि यह आविष्कार व्यापक पर्यावरण निगरानी के लिए डिजाइन किए गए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित वायरलेस सेंसर नेटवर्क (डब्ल्यूएसएन) नोड से संबंधित है। यह नवोन्मेषी उपकरण विभिन्न सेंसरों से डेटा को समझदारी से संसाधित करने और विश्लेषण करने के लिए उन्नत एआई एल्गोरिद्म का लाभ उठाता है, जिससे तापमान, आर्द्रता, वायु गुणवत्ता और अन्य महत्त्वपूर्ण कारकों जैसे पर्यावरणीय मापदंडों का सटीक और वास्तविक समय मूल्यांकन संभव हो जाता है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधन संरक्षण के बारे में बढ़ती चिंताओं के कारण पर्यावरण की निगरानी तेजी से महत्त्वपूर्ण हो गई है। पारंपरिक निगरानी प्रणालियों को अक्सर मैन्युअल डेटा संग्रह और विश्लेषण की आवश्यकता होती है, जिसमें समय लग सकता है और त्रुटियों की संभावना हो सकती है। वायरलेस सेंसर नेटवर्क (डब्ल्यूएसएन) के आगमन से स्वचालित और दूरस्थ निगरानी की अनुमति मिल जाने से इस क्षेत्र में क्रांति आएगी। डब्लूएसएन्स द्वारा उत्पन्न बड़ी मात्रा में डेटा को तुरंत सार्थक अन्तर्दृष्टि निकालने के लिए बुद्धिमान प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है, इसलिए इस उपकरण की उपयोगिता बहुत अधिक बढ गई है।

विश्व के पहले उपकरण के लिए बधाइयां

इस अपनी तरह के विश्व के पहले वायरलेस उपकरण के लिए पेटेंट करवाने और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम दर्ज करवाने के लिए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें बधाई देते हुए अपने काम को निरन्तर गति देते रहने और नए-नए आयाम स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दी। इसी प्रकार संस्थान के समस्त संकाय सदस्यों व अन्य स्टाफ ने भी डा. शेखावत को इस उपलब्धि के लिए बधाई व शुभकामनाएं दी हैं।

जैविभा विश्वविद्यालय को मिला 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली' का पेटेंट

पूर्ण अधिकार के बाद अब कोई अन्य संस्थान इस प्रणाली की नकल नहीं कर सकेगा

पैटेंट धारक : डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. रविन्द्र सिंह

विश्व भर में फैली हिंसा, युद्ध और तनाव के माहौल में जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा आविष्कृत अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली को भारत सरकार के पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग द्वारा 31 मई 2024 को पैटेंट प्रदान किया गया है। इस पेटेंट के मिलने के बाद कोई अन्य इस प्रणाली की नकल नहीं कर पाएगा। पेटेंट एक ऐसा कानूनी अधिकार है, जो किसी व्यक्ति या संस्था को किसी विशेष उत्पाद, खोज, डिजाईन, प्रक्रिया या सेवा के ऊपर एकाधिकार देता है। पेटेंट प्राप्त करने वाले व्यक्ति के अलावा यदि कोई और व्यक्ति या संस्था इनका उपयोग, बिना पेटेंट धारक की अनुमति के करता है तो ऐसा करना कानूनन अपराध माना जाता है। पेटेंट ऐसी बौद्धिक संपदा है, जो उसके मालिक को आविष्कार के सक्षम प्रकटीकरण को प्रकाशित करने के बदले में सीमित अवधि के लिए दूसरों को आविष्कार बनाने, उपयोग करने या बेचने से बाहर करने का कानूनी अधिकार देता है।

इस पैटेंट के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, डा. लिपि जैन, डा. बलवीर सिंह, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने भारत सरकार के समक्ष आवेदन किया था। पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग के कंट्रोलर जनरल ने इसे स्वीकार करते हुए बायो मेडिकल इंजीनियरिंग के अन्तर्गत 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' को पैटेंट प्रदान किया है।

अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्त्तित अहिंसा प्रशिक्षण की पूर्ण विकसित प्रणाली को जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ने शिक्षण में उपयोगी बनाया और उसके व्यावहारिक स्वरूप को अपनाते हुए बड़ी संख्या में लोगों को अहिंसा प्रशिक्षण प्रदान किया। इस विश्वविद्यालय में अहिंसा एवं शांति विभाग पृथक् बना हुआ है, जिसमें स्नातकोत्तर उपाधि भी इस विषय में प्रदान की जाती है। इस विभाग के अन्तर्गत ही कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में अहिंसक व्यवहार सम्बंधी प्रशिक्षण की प्रणाली विकसित की गई। इस परिपूर्ण प्रणाली द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन किया जाकर उसे हिंसक विचारों से दूर करके पूर्ण अहिंसक बनाया जा सकता है।

संस्थान के प्राध्यापकों द्वारा ईजाद डिजीटल शिक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने की तकनीक का पेटेंट

पेटेंट धारक : प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. लिपि जैन

संस्थान के प्राध्यापकों ने हाल ही में शिक्षा जगत में नवीन प्रौद्योगिकी इजाद करके उसका पेटेंट करवाने की पहल की है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन एवं सहायक आचार्या डॉ. अमिता जैन और अहिंसा एवं शान्ति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन की कृति 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' का पेटेंट 15 मार्च 2024 को हुआ है और इसके अलावा प्रो. बीएल जैन एवं डॉ. अमिता जैन का 'छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक प्रणाली और विधि' पर आधारित एक और पेटेंट 26 अप्रेल को हुआ है। इस प्रकार जैन विश्वभारती संस्थान के अन्तर्गत लगतार नवीन आविष्कार एवं उनके पेटेंट हासिल होने को लेकर यहां खासा हर्ष व्याप्त है। उन्हें सभी ने इसके लिए बधाइयां दी है।

प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि उनके द्वारा तैयार 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' का डिजाइन पेटेंट, डिजिटल शिक्षा को स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस द्वारा परिवर्तित करता है, जो आधुनिक हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को एक सरल प्लेटफॉर्म में जोड़ता है। यह एक अत्याधुनिक डिजिटल शिक्षा उपकरण है, छात्र और शिक्षक के सीखने में सुधार करता है, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और शैक्षिक परिणामों को शामिल करता है व विद्यार्थियों की कार्यक्षमता और उपयोगिता को बढ़ाता है। यह डिवाइस शिक्षा में बदलाव ला सकता है। इसके अतिरिक्त प्रो. बीएल जैन एवं डॉ. अमिता जैन का संयुक्त पेटेंट 'छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक प्रणाली और विधि' पर आधारित 26 अप्रेल 2024 को प्रकाशित हुआ है। उन्होंने बताया कि यह उपयोगिता पेटेंट उद्देश्य व्याख्यान, पाठ्यपुस्तकें और लिखित परीक्षा सहित पारंपरिक शिक्षण तकनीकों को डिजिटल प्रौद्योगिकियों द्वारा मजबूत बनाना है। यह विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में छात्रों के लिए सीखने के परिणामों में सुधार करना, शैक्षिक प्रथाओं को मजबूत करना और सीखने के अनुभवों पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का व्यवस्थित रूप से आकलन करके साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने की जानकारी देता है।

डॉ. लिपि जैन को उनकी पुस्तक 'विकास : गांधी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ की दृष्टि में' के लिए 'साहित्योपासक क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी अहिंसा एवं जन-चेतना पुरस्कार'

प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान जयपुर द्वारा दिए जाने वाले प्राच्यविद्या एवं साहित्य संवर्द्धन पुरस्कारों में वर्ष 2023 के लिए जैन विश्वभारती सस्थान के अहिंसा एवं शान्ति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन को 'साहित्योपासक क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी अहिंसा एवं जन-चेतना पुरस्कार' प्रदान किया जाएगा। इस पुरस्कार के लिए उनकी मौलिक कृति 'विकास : गांधी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ की दृष्टि में' का चयन किया। प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान द्वारा यह पुरस्कार रेनू जैन पत्नी स्व. विजय स्वरूप जैन गांधीनगर (गुजरात) के सौजन्य से प्रदान किया जाता है।

डॉ. लिपि का चयन पुरस्कार चयन समिति द्वारा वर्ष 2023 के पुरस्कारों हेतु उनकी मौलिक कृति एवं जिनवाणी के प्रचार प्रसार व प्रशासनिक सेवा के लिए किया है। संस्थान के उपाध्यक्ष एवं पुरस्कार समिति के संयोजक प्रो. लोकेश कुमार जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि जैन दर्शन एवं प्राच्यविद्या, पाण्डुलिपि सम्पादन एवं संरक्षण, अहिंसा तथा नैतिक मूल्यों के संवर्धन, पर्यावरण जन-चेतना, जिनवाणी के प्रचार-प्रसार एवं उत्कृष्ट साहित्य लेखन-सम्पादन में बहुमूल्य योगदान करने वाले युवा विद्वानों, पत्रकारों, जैन विद्या के अनुसंधानकर्ताओं को उत्कृष्ट कार्य हेतु यह संस्था 2020 से प्रतिवर्ष तीन पुरस्कार युवा विद्वानों के प्रोत्साहन स्वरूप 'प्राध्यविद्या एवं साहित्य संवर्धन पुरस्कार' प्रदान करती आ रही है।

इन पुरस्कारों में विद्वानों को पुरस्कार राशि के रूप में 11 हजार रूपए नकद, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति चिन्ह, शाल, श्रीफल, साहित्य आदि प्रदान करके सम्मानित किया जाता है। 'प्राकृत-शिरोमणि आचार्य श्री सुनीलसागर प्राकृत युवा मनीषी पुरस्कार-2023' कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय के जैन दर्शन एवं प्राकृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. वीरचन्द्र जैन को उनकी कृति 'आचार्य नेमिचंद सिद्धान्त चक्रवर्ती के वांग्मय में कर्म चिंतन' के लिए प्रदान किया जाएगा। 'डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार जैन दर्शन एवं प्राच्यविद्या सेवी पुरस्कार-2023' इस बार सन्मति प्राकृत विद्यापीठ प्रतापगढ़ के निदेशप्रदान किया जाएगा। ये सभी पुरस्कार प्राकृत-केसरी आचार्यश्री सुनीलसागर महाराज के सान्निध्य में आयोज्य आगामी कार्यक्रम में प्रदान किये जायेगें।

राष्ट्रीय सेमिनार

विश्व-शांति व मानवता की रक्षा के लिए है अहिंसा की जरूरत- प्रो. श्रीवास्तव

'भारतीय परंपराओं में अहिंसक संप्रेषण की खोज' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

प्रायोजक - गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
परियोजना स्वीकृत - 'भारतीय परंपराओं में अहिंसक संप्रेषण की खोज' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी,
विभाग - अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव ने कहा है कि अब विज्ञान भी यह मानता है कि अहिंसा के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। विश्व शांति व मानवता की रक्षा के लिए अहिंसा की जरूरत बन चुकी है। महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत वर्तमान में बहुत प्रभावी हो सकते हैं।

वे यहां जैन विश्वभारती संस्थान व गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 27 मार्च को 'भारतीय परम्परा में अहिंसक सम्प्रेषण की खोज' विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उल्लेख करते हुए कहा कि विश्व में बिना सीमाओं के देशों की कल्पना की गई है। भारतीय अध्यात्म में अहिंसा व शांति के तत्त्व निहित हैं। आज मनुष्यों, प्राणियों व प्रकृति के बीच परस्पर समन्वय रखे जाने की आवश्यकता है। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान को विलक्षण और अपनी तरह का विश्व का इकलौता विश्वविद्यालय बताया।

संवाद से ही संभव है अहिंसा से जुड़ाव

सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बीआर दूगड़ ने अहिंसा को भारतीय दर्शन व शास्त्रों में अहिंसा व शांति को अन्तर्निहित बताया। भारतीय विधाओं का मुख्य विषय सत्य की खोज रहा है और इसी कारण भारतीय शास्त्रों में अहिंसा अनुस्यूत है। वेदों में आया है कि निरन्तर संवाद से ही सत्य तक पहुंचा जा सकता है। अहिंसा से जुड़ाव संवाद द्वारा ही होता है, यह महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने गीता, बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन का भी उदाहरण प्रस्तुत किया तथा कहा कि जैन दर्शन में 'अनेकांतवाद' आया है, जिसे गांधी ने भी स्वीकार किया है। इसमें न्याय के लिए दूसरों के दृष्टिकोण से भी देखने की बात आई है। प्रो. दूगड़ ने कंटेंट, प्रोसेस और इंटेन्शन को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि न्याय के लिए विषयवस्तु और उसे प्रस्तुत करने का तरीका एवं उसके पीछे की भावना पर ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने सामने वाले को अपने भविष्य के मित्र के तौर पर लेने की आवश्यकता बताई।

मीडिया शिक्षण में अहिंसा संवाद का समावेश जरूरी

राष्ट्रीय सेमिनार के मुख्य वक्ता पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के प्रो. मनीष शर्मा ने वेदांगों को भूलने पर चिंता जताते हुए कहा कि बाहरी लोग उसी में आई बातों को अब हमें फिर से बताने की कोशिश कर रहे हैं। सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, मैत्री, समर्पण आदि ही समाज के लिए आवश्यक तत्त्व हैं। पश्चिमी सभ्यता के लोग आज योग आदि का अनुसरण कर रहे हैं।

उन्होंने संवाद करने, चर्चाओं को महत्त्व देने, अहंकार को छोड़ने और धैर्य के साथ बातचीत करने को महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि शिक्षा में हमें कुछ नया जोड़ कर आगे प्रसारित करना चाहिए। इससे पूर्व विशिष्ट अतिथि गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदव्यास कुंडू ने सेमिनार के विषय को प्रतिपादित करते हुए कहा कि अहिंसा संवाद हमारे यहां तो कण-कण में रचा हुआ है। उन्होंने मीडिया के अहिंसक संवाद को महत्त्व देते हुए कहा कि महात्मा गांधी के मॉडल ऑफ कम्युनिकेशन में भाषा को संयमित करने की जरूरत बताई गई है। हम 'मीडिया लिट्रेसी' पर काम कर रहे हैं। मीडिया एजुकेशन से समाधान तलाश किए जाएंगे। उन्होंने विश्वविद्यालयों में मास कम्युनिकेशन विषय के साथ अहिंसा संचार को भी जोड़ कर काम करने की आवश्यकता बताई। इसके जितने भी आयाम हैं, उनमें भारतीय परम्परा के कंटेंट का अनुसरण भी महत्त्वपूर्ण होंगे। उन्होंने वर्चुअली हिंसक विचारों से आपसी सम्बंध खराब होने के बारे में भी बताया। प्रारम्भ में प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने अतिथि परिचय और स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत-सम्मान शॉल, पुष्पगुच्छ, प्रतीक चिह्न एवं साहित्य प्रदान करके किया गया। अंत में विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया।

महात्मा गांधी ने अहिंसक सम्प्रेषण को पत्रकारिता से लोगों के दिलों तक पहुंचाया- प्रो. चितलांगिया

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में 28 मार्च को मुख्य वक्ता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के गांधी अध्ययन केंद्र की पूर्व निदेशक व राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो. मीना बरड़िया ने कहा कि विश्व भर में विभिन्न देशों के टकराव व युद्धों के दौरान 24 हजार से अधिक लोग अपने प्राण गंवा चुके हैं और बड़ी संख्या में घायल व बेघर हुए हैं। आतंकवाद, नस्लवाद, धर्मांधता आदि के कारण युद्ध होते हैं और अतिरिक्त तकनीकी विकास के कारण भी हिंसा को बढावा मिला है। उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा सम्प्रेषण और उनकी पत्रकारिता पर बोलते हुए कहा कि उनके आंदोलनों में पत्रकारिता में अहिंसा का प्रयोग किया गया। उन्होंने साधन और साध्य की पवित्रता पर बल दिया और नवीन मूल्यों का सृजन कर नई दिशा प्रदान की। समाज को सही दिशा देना ही गांधी की पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य रहा। गांधी की पत्रकारिता मूल्यों पर आधारित थी। बरड़िया ने जैन प्रतिक्रमण का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रतिक्रमण से संसार के सभी जीवों से क्षमा याचना की जाती है। मन की दूषित भावनाओं के लिए क्षमा-याचना की जाती है। उन्होंने बताया कि गांधी के आंदोलन का मूल मंत्र 'अहिंसा परमोधर्मः भगवान महावीर की अहिंसा का पर्याय है और महाभारत में उसका उल्लेख है, साथ ही ऋग्वेद में आए श्लोक 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया': सबके सुखी होने की भावना है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म में अहिंसा की लम्बी परम्परा और व्यापक दायरा रहा है।

गांधी ने सत्य-अहिंसा को व्यवहार में उतारा

मुख्य अतिथि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के लोक प्रशासन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. बीएम चितलांगिया ने महात्मा गांधी के विचारों को शुद्ध वैज्ञानिक बताते हुए कहा कि जिस प्रकार विज्ञान में सिद्धांतों को व्यवहार में परिणित किया जाता है, वैसे ही गांधी ने सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा और उन पर प्रयोग किए। गांधी ने अपने विचारों तर्क, धर्म, दर्शन व राजनीतिक विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए गणितीय सूत्रों का सहारा भी लिया। उन्होंने सत्य, अहिंसा व मानवीय चिंतन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की थी। वर्तमान की चुनौतियों में गांधीवादी दर्शन समाधान में सक्षम हो सकता है। कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने अहिंसा पर आयोजित इस सेमिनार को अहिंसा का महायज्ञ बताया और कहा कि इसमें डाली गई विचारों की आहुतियों को आगे बढा कर अहिंसा प्रवृत्ति में सुधार किया जा सकता है। उन्होंने अहिंसा की व्यावहारिकता को समझने की आवश्यकता बताई।

अनुप्रेक्षा के अभ्यास से अहिंसा संवाद संभव

कुलपति के ओ.एस.डी. प्रो. नलिन के. शास्त्री ने अध्यक्षता करते हुए भारत के चिंतन में अहिंसा को चेतना का मूल भाव बताया तथा सह अस्तित्व की भावना पर जोर देते हुए दूसरों की बातों और विचारों को सुनने को जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि करुणा के चिंतन से अहिंसक संवाद का विचार उद्भूत होता है। करुणा का भाव मन में होने पर हर व्यक्ति में दिव्यता का दर्शन हो सकता है। चिंतन में आध्यात्मिकता को जरूरी बताते हुए उन्होंने अध्यात्म को जिंदगी जीने का तरीका बताया। प्रो. शास्त्री ने बताया कि व्यक्ति के प्रबुद्ध होने पर विचारों से असहमति होती है। हमें व्यक्ति, तथ्य एवं विचारों का अवलोकन करना चाहिए। भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता आवश्यक है, तभी सहानुभूतिपूर्ण वातावरण पैदा हो सकता है। हम अपने आपको बदल नहीं सकते, लेकिन दुनिया को बदलना चाहते हैं। हम जैसा चाहें, सभी वैसे नहीं हो सकते हैं। गुलदश्ते में एक ही प्रकार के नहीं, बल्कि अलग-अलग रंग होने चाहिए।

उन्होंने जैन धर्म की 'अनुप्रेक्षा' में भावना करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि अनुप्रेक्षा के अभ्यास से चित की शुद्धि व कर्मों का प्रवाह रुक सकता है। उन्होंने 12 भावनाओं की बात करते हुए मैत्री भावना के बारे में बताया और कहा कि इनसे अहिंसा संवाद में प्रवृत्त होते हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगल संगान से किया गया। स्वागत वक्तव्य व अतिथि परिचय डा. समणी रोहिणी प्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने दो दिवसीय सेमिनार की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। अंत में डा. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. लिपि जैन ने किया।

विद्वानों ने किया शोध-पत्रों का वाचन

सेमिनार के साधारण सत्रों में 'भारतीय परम्परा में अहिंसक संवाद की खोज' विषय से सम्बंधित उपविषयों पर विभिन्न विद्वानों ने अपने 20 शोध-पत्र प्रस्तुत किए। शोध पत्र वाचन करने वाले विद्वानों में साध्वी रोहिणी प्रभा, साध्वी तेजस्वी प्रभा, डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा, डॉ. समणी रोहिणी प्रज्ञा, समणी जिज्ञासा प्रज्ञा, डॉ. समणी शशि प्रज्ञा, डॉ. सुनीता इंदोरिया, डॉ. वीरेंद्र भाटी, डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. आभा सिंह, डॉ. हेमलता जोशी, यशपाल सिंह, मुनि सुविधि कुमार, मुनि कौशल कुमार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. जेपी सिंह, डा. अमिता जैन, रमेश कुमार सोनी व अन्विता भाटी ने अहिंसा के विविध आयामों और पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सम्भागी विद्वान शोधार्थी एवं विद्यार्थी तथा सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय राजस्थानी समर स्कूल

राजस्थानी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति के चहुँमुखी विकास के लिये सामूहिक प्रयास जरूरी- प्रो. दूगड़

राजस्थानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में सप्त दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन

राजस्थानी भाषा अकादमी एवं टेक्सास विश्वविद्यालय ऑस्टिन में एशियाई अध्ययन विभाग के सहयोग से जैन विश्वभारती संस्थान में आयोजित सप्त दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय राजस्थानी समर स्कूल (19 से 25 जून) कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि राजस्थानी एक समृद्ध भाषा है। राजस्थानी का साहित्य विशाल है। प्राचीनकाल से ही कवियों ने राजस्थानी में अपनी कलम चलाई और इसे समृद्ध बनाया। उन्होंने राजस्थानी में लिखी हुई पांडुलिपियों व प्राचीन अप्रकाशित ग्रंथों के प्रकाशन की आवश्यकता बताई तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आदि के चहुंमुखी विकास और उन्नयन के लिए अनेक सुझाव प्रस्तुत किए तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति के चहुंमुखी विकास के लिये सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता बताई। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान में स्थापित 'राजस्थानी भाषा एवं साहित्य शोध केन्द्र, की जानकारी दी और राजस्थानी भाषा के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया।

प्राचीन ग्रंथों व कलाओं पर हुआ विमर्श

वर्ल्ड समर स्कूल में विभिन्न वक्ताओं द्वारा राजस्थानी भाषा एवं साहित्य पर विमर्श किया गया और राजस्थान के समृद्ध इतिहास, संस्कृति वं परम्पराओं की उत्कृष्टता पर चर्चा की गई। कार्यशालाएँ 'धर्म' पर आधारित थीं और इसमें 8वीं से 19वीं शताब्दी के ग्रंथों को शामिल किया गया, जिसमें काव्य, युद्ध वृत्तांत, शहरी इतिहास और धार्मिक साहित्य शामिल थे। समर स्कूल में गहन और संवादात्मक पठन कार्यशालाएं, फील्ड ट्रिप, अतिथि व्याख्यान और नृवंशविज्ञान अभ्यास शामिल थे। कार्यक्रम में भाषा की केंद्रीयता पर जोर दिया गया। 7 दिवस में इन्हीं पर चर्चाएं-विमर्श किये गये।

राजस्थानी भाषा अकादमी के विशेष कोठारी ने राजस्थान की संस्कृति, परम्पराओं, कला, इतिहास और भाषा के बारे में बताया। इसमें राजस्थानी भाषा और साहित्य के प्रेमाख्यान, डिंगल काव्य, संत और जैन साहित्य, राजस्थानी गजल, शेखावाटी के भीत्ति चित्रों, नृवंश विज्ञान की दृश्य-कलाएं, हस्तकला और लोक संगीत पर विशेष फोकस किया गया। समर स्कूल के दूसरे दिन का जैन विश्वभारती संस्थान की समणी संगीतप्रज्ञा द्वारा कुवलयमाला पर आयोजित वाचन समूह था, जो जैन साधु उद्योतन सूरी द्वारा लिखित 8वीं शताब्दी का प्राकृत भाषा का उपन्यास है। समणी संगीतप्रज्ञा ने पाठ के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व की समझ प्रदान की, जिससे छात्रों को जैन पाठ और प्राकृत पढ़ने और भाषा के व्याकरण को समझने की जटिलताओं के बारे में जानने में मदद मिली।

प्राचीन ग्रंथों पर कार्यशालाएं आयोजित

इसके अलावा भी 12वीं से 19वीं शताब्दी तक के काव्य, युद्ध इतिहास, शहरी इतिहास और धार्मिक साहित्य जैसे क्षेत्रों से सम्बद्ध ग्रंथों पर कार्यशालाएं आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में फोकस ग्रंथों में कुवलयमाला (8वीं शताब्दी), कुमारपाल चरित (12वीं शताब्दी), दादू जन्मलीला परची (17वीं शताब्दी), सुंदरदास का सवैया ग्रंथ (17वीं शताब्दी), सतीनामा (16वीं शताब्दी), रघुनाथ रूपक (19वीं शताब्दी), छत्रपति रासो (17वीं शताब्दी), माताजी री वचनिका (18वीं शताब्दी), भ्रमविध्वंसनम् (19वीं शताब्दी), रघुनाथ रूपक (19वीं शताब्दी) आदि ग्रंथ शामिल थे। जैन राजस्थानी गजल, बीकानेर राज्य से पट्टा बही और पट्टे री गवा री बही भी इनमें प्रमुख रही। संगीतकार और हस्तकला के कारीगर समुदायों और स्थानीय तीर्थस्थलों के नृवंशविज्ञान का आईएनआर अध्ययन किया गया।

इन विद्वानों ने किया मार्गदर्शन – इस सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल में विभिन्न विषयों और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों जैसे यूटी ऑस्टिन, पाविया विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, एमोरी विश्वविद्यालय, जेएनयू, यूसीएलए, ओपी जिंदल विश्वविद्यालय और अन्य के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया। यूटी आस्टिन के प्रो. दलपतराज भंडारी, न्यूयार्क यूनिवर्सिटी के प्रो. दीप्ति खेड़ा, ओपी जिंदल ग्लोबल युनिवर्सिटी के प्रो. सौम्या अग्रवाल, लॉस एंजेल्स की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से मुकेश कुलरिया, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर के डा. नितिन गोयल, प्रो. गजादान चारण, आईआईटी जोधपुर की प्रो. आयला जॉनचेरे आदि विद्वानों के अलावा जैन विश्वभारती संस्थान के डा. समणी संगीप्रज्ञा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा, प्रो. बीएल जैन, डा. सत्यनारायण भारद्वाज आदि ने भी सम्भागियों का मार्गदर्शन किया। इस सफल वर्ल्ड समर स्कूल में प्रतिभागियों के बीच मूल्यवान अंर्तदृष्टि और विद्वानों के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।

अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

आत्म-जागरण व दृष्टिकोण के बदलाव से संभव है बुराइयों का अंत- प्रो. नरेश दाधीच

ICSSR वित्तपोषित 'सामाजिक शांति' विषयक दो दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार आयोजित

प्रायोजक - इंडियन कौंसिल ऑफ सोशियल साइंस रिसर्च (ICSSR)
परियोजना स्वीकृत - Strengthening the Innate Awareness of Affection and Unity: A Quest for Social Peace विषयक दो दिवसीय इण्टरनेशनल सेमिनार।
विभाग - अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

इंडियन कौंसिल ऑफ सोशियल साईंस रिसर्च (आईसीएसएसआर) के सौजन्य से संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन 23-24 फरवरी को सेमिनार हाल में किया गया। 'स्ट्रेंथनिंग दी इन्नेट अवेयरनेस ऑफ एफेक्शन एंड यूनिटी : ए क्वेस्ट फोर सोशल पीस' विषय पर आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के शुभारम्भ सत्र के मुख्य अतिथि वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा कि शांति कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि शांति तो वह है, जिससे हर चीज प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने शांति स्थापना के लिए किसी कानून, तंत्र या सशक्त शासक की आवश्यकता के बजाय आत्म-परिवर्तन को आवश्यक बताया। प्रो. दाधीच ने बताया कि 80 प्रतिशत लोगों को शांति के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यह आत्म-जागरूकता के द्वारा संभव है। इस द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के आयोजन हेतु वित्तीय सहयोग इंडियन कौंसिल ऑफ सोशियल साइंस रिसर्च (ICSSR) के सौजन्य से विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन (आयोजन सचिव) को मिला।

शांति के लिए स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा आवश्यक

सेमिनार के मुख्य वक्ता ब्रिटेन के राजनीतिक वैज्ञानिक डा. चन्द्रदेव भट्ट ने आंतरिक शांति और बाह्य शांति के दो भेदों पर प्रकाश डाला और भारतीय दर्शन व पाश्चात्य दर्शन के दृष्टिकोणों के बारे में विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने आध्यात्म और भौतिकवाद पर प्रकाश डालते हुए समन्वय की जरूरत पर बल दिया तथा कहा कि वर्तमान में शिक्षा को जीवन से हटा कर जगत के विषयों पर आधारित कर दिया गया है, जबकि भारतीय मूल्यों में तत्त्वज्ञान से ऊपर उठ कर ब्रह्म और आत्मा के ज्ञान का विकास करके व्यक्ति व उसकी आत्मा को परिष्कृत करने पर बल दिया गया है। उन्होंने शांति की दिशा में स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा की आवश्यकता बताई। विशिष्ट अतिथि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. के.एन. व्यास ने कहा कि विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है, लेकिन हिंसा व संघर्ष की समस्या सबके सामने है। विश्व शांति की दिशा में सम्प्रदायवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और आतंकवाद की पांच समस्याओं को बहुत बड़ी बताई और कहा कि ये पांच विचारधाराएं शांति और एकता में रूकावट बनती है। उन्होंने कहा कि वार्तालाप व परस्पर सहयोग की भावना बढाई जानी चाहिए।

सादगी, सदाचार एवं अहं के अभाव से ही सामाजिक समरसता संभव

सत्र की अध्यक्षता करते हुए जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि सामाजिक शांति स्थापना की दिशा में जैविभा संस्थान लगातार प्रयासरत है। यहां अहिंसा एवं शांति विभाग की स्थापना व पाठ्यक्रमों के साथ अहिंसा प्रशिक्षण, विभिन्न समुदायों-सम्प्रदायों की एकता के लिए प्रयास एवं अहिंसा यात्रा के रूप में सामाजिक समरसता व नशामुक्ति के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। उन्होंने संवाद और संचार को वैमनस्यता मिटाने के लिए महत्त्वपूर्ण बताया और आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के दौरान गुजरात दंगों के बावजूद उनके हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में जाने और शांति स्थापना करने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मनुष्य को स्वयं के, प्रकृति के और

समाज के अलगाव से बचना चाहिए। विश्रृंखलता और नकारात्मकता से समस्याएं आती हैं। व्यक्ति को सभी प्रकार की असंगतता से बचना चाहिए। व्यक्ति में सादगी, सदाचार भाव एवं अहं का अभाव होने से ही सामाजिक समरसता संभव है। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु शैफाली के मंगल संगान से किया गया। प्रारम्भ में प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने अतिथि परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में अहिंसा व शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। डा. लिपि जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं विषय प्रस्तुतिकरण किया।

इस अवसर पर काठमांडू नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय से डॉ. रोशन पोखरेल, गांधी दर्शन समिति नई दिल्ली के प्रो. ज्वाला प्रसाद, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के पूर्व कुलपति प्रो. रूपसिंह बारैठ, केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ हरियाणा के प्रो. राजीव सिंह, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतीहारी बिहार के प्रो. जुगल किशोर दाधीच, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के निदेशक प्रो. संतेष कुमार सिंह, प्रो. बजरंग सिंह राठौड़, बीकानेर, डूंगर कॉलेज बीकानेर की प्रो. साधना भंडारी, सुबोध कॉलेज जयपुर की प्रो. शैफाली जैन, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. आभासिंह आदि प्रमुख विद्वान उपस्थित रहे।

सामाजिक व वैश्विक शांति का आधार हैं परिवार, शिक्षा व विकास का मॉडल-प्रो. बारैठ

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का समापन 24 फरवरी को सेमिनार हाल में किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के पूर्व कुलपति प्रो. रूपसिंह बारैठ ने विश्वविद्यालयों को समाज का दिशा-निर्देशक के रूप में मानते हुए कहा कि राजनीतिक तंत्र केवल समस्याओं के समाधान का काम करता है, लेकिन विश्वविद्यालयों से भविष्य की नवीन विचारधारा का निर्धारण भी होता है। सामाजिक स्थितियों के बदलने से ही शांति स्थापित हो सकती है। समस्त प्रकार की उन्नति हो जाने के बाद भी सामाजिक शांति नहीं बन सकती है, तो इसके लिए तीन सेक्टर जिम्मेदार हैं, जिनमें परिवार, शिक्षा व विकास का मॉडल शामिल है। परिवार संस्था की भूमिका सामाजिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण होती है। प्राचीन भारत में पारिवारिक संगठन शक्तिशाली होता था, जिसे समाप्त किया जाने लगा है। इसी तरह शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों के बजाए पैसों को महत्त्व दिया जाना भी खतरनाक है। ज्ञान, व्यक्तित्व विकास और सामाजिक व्यवस्था की प्राप्ति शिक्षा से ही संभव है। इसके अलावा विकास के मॉडल के रूप में पश्चिम का अंधानुकरण भी घातक साबित हो रहा है। इस मॉडल से जब पश्चिम को भी शांति नहीं मिली, तो हम शांति की उम्मीद नहीं कर सकते। हमें इसके लिए गांधीवादी मॉडल को अपनाना होगा, जिसमें प्रति व्यक्ति उपभोग के बजाय जैसा विचार-वैसा आचार की पद्धति होगी।

आंतरिक द्वंद्व को शांत करने से होगी विश्व शांति

मुख्य वक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के सेंटर फॉर इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, आर्गेनाईजेशन एंड डिजारमामेंट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के संतेष कुमार सिंह ने कहा कि अपने हितों के लिए दूसरे के हितों की अवहेलना करना गलत होता है। अपने अंदर के द्वंद्व को शांति करने पर ही दुनिया में शांति की जा सकती है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के तीन चरणों की बात रखते हुए उन्होंने कहा कि व्यक्ति के कारण ही सामाजिक द्वंद्व पैदा होता है और सामाजिक संघर्ष से राष्ट्र अशांत होता है। दुनिया के संघर्ष में व्यक्ति की ही भूमिका रहती है। मांग, लोभ व लालच से ही समस्त प्रकार की अशांति व संघर्ष पैदा होता है। मूल्यों की अवहेलना के कारण ही समस्त समस्याएं बढती जा रही हैं। हमने गुरूकुल परम्परा को छोड़ कर व्यक्तिगत मूल्यों में गिरावट पैदा कर दी है। नई शिक्षा नीति की सराहना करते हुए उन्होंने भारतीय मूल्यों के प्रतिस्थापन और वसुधैव कुटुम्बकम की नीति को विश्व-शांति के लिए जरूरी बताया। विशिष्ट अतिथि गांधी दर्शन समिति नई दिल्ली के ज्वाला प्रसाद ने कहा कि युद्ध से शांति नहीं हो सकती, इसके लिए जरूरी है कि हमारा साधन शुद्ध व पवित्र हो, तभी साध्य शांति भी पवित्र होगी। उन्होंने तकनीक के बजाय पारिवारिक शांति, सहभोज की प्रवृत्ति के बढने से शांति स्थापना को संभव बताया।

सामाजिक शांति के लिए विकास नहीं, समन्वय आवश्यक

अध्यक्षता करते हुए जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि विकास अवश्य हुआ है, लेकिन व्यक्ति के अंदर की खुशियां व आपसी प्यार लुप्त हो रहा है। जबकि, खुशी से ही शांति संभव है। उन्होंने बताया कि रतन टाटा ने कहा था कि बच्चे को अमीर बनना नहीं बल्कि उसे खुश रहना सिखाएं तथा अगर तेज चलना हो तो अकेले चलें, लेकिन अगर लम्बा चलना हो तो सबके साथ चलना चाहिए। खुश रहने एवं सामूहिकता ही शांति के कारक होते हैं। उन्होंने अनेकांत के सिद्धांत की चर्चा करते हुए कहा कि एक-दूसरे के विचारों को महत्त्व दें और एक-दूसरे का सम्मान करें, यह आवश्यक है। जगत की विविधता में ही सौंदर्य है, सामाजिक शांति के लिए अतीव विकास नहीं, बल्कि पड़ौसी तक समन्वय आवश्यक है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण से किया गया। डा. समणी रोहिणी प्रज्ञा ने अतिथि परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने दो दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार की गतिविधियों का सारांश प्रस्तुत किया। अंत में डा. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। समापन सत्र का संचालन संयोजिका डा. लिपि जैन ने किया।

इन सब विद्वानों ने किए पत्रवाचन

इस दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में आयोजित विभिन्न सत्रों में अध्यक्ष, अतिथि व मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. बजरंग सिंह राठौड बीकानेर, डा. जुगलकिशोर दाधीच केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार, डा. आरएस राठौड़, प्रो. साधना भंडारी बीकानेर, डा. रोशन पोखरेल नेपाल, प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा, प्रो. जिनेन्द्र जैन, कमांडर भूषण दीवान मुम्बई, डा. मधुबाला जयपुर, डा. एसएन भारद्वाज, प्रो. राजीव सिंह हरियाणा, डा. शैफाली जैन जयपुर, डा. मुकेश कुमार वर्मा जयपुर, डा. मनीषा जैन आदि रहे। इनमें सम्बद्ध विभिन्न विषयों पर डा. शत्रुघ्न, डा. सुषमा मौर्य, डा. संजय भारद्वाज, डा. निर्मल कुमार जैन, डा. सुनीता इंदौरिया, डा. दशरथ डार, डा. एसएन भारद्वाज, श्वेता खटेड़, गोपीराम, नरेन्द्र सिंह राठौड़, डा. संदीप कुमार सिंह, डा. अतुल गर्ग, गजेन्द्र सिंह, डा. मृदुला शर्मा, मनोज कुमार शर्मा, शकुंतला जोशी, सोनू कंवर, संतोष गहलोत, निधि राठौड़, प्रो. सुनीता गोयल, डा. गिरधारीलाल शर्मा, डा. सव्यसांची सारंगी, प्रमोद ओला, दशरथ सिंह, शबाना यास्मीन, रूपल राठौड़, डा विनोद कस्वा, डा. प्रगति भटनागर, पिंकी गुलेछा, प्रगति चौरड़िया, स्नेहा शर्मा, अपराजिता, डा. अमिता जैन, रमेश सोनी, सपना कंवर, सोजी सेम्युअल, डा. नमामि शंकर आचार्य, डा. ऋचा उपाध्याय, डा. समणी संगीत प्रज्ञा, डा. गोविन्द सारस्वत, डा. सरोज राय, डा. आयुषी शर्मा, उज्ज्वल डागा, अभिषेक चारण, खुशाल जांगिड़, सुनेयना, नन्दिनी काशलीवाल, सीमा कांवट आदि ने अपने पत्र वाचन किए।

विश्व दार्शनिक दिवस पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

सतत चलना, खोजना, जानना, सीखना सिखाती है भारतीय संस्कृति- प्रो. दीक्षित

प्रायोजक - भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (ICPR)
परियोजना स्वीकृत - विश्व दार्शनिक दिवस पर राष्ट्रीय सेमिनार
विभाग - अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर) के प्रायोजन में भारतीय संस्कृति में निहित मूल्यों के संवर्धन व प्रचार-प्रसार में सहायक कार्यक्रम का आयोजन 27 जनवरी को संस्थान के महाप्रज्ञ ऑडिटोरियम में किया गया। जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में विश्व दार्शनिक दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित थे और मुख्य वक्ता राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अरविन्द विक्रम सिंह थे। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस राष्ट्रीय सेमिनार में वक्ताओं ने 'भारतीय संस्कृति में सन्निहित बुनियादी मूल्य और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता' पर अपने विचार व्यक्त किए। विश्व दार्शनिक दिवस के उपलक्ष में इस कार्यक्रम के आयोजन की वित्तीय स्वीकृति भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन को प्रदान की गई।

कर्त्तव्य-पालन है सबसे महत्त्वपूर्ण

मुख्य अतिथि प्रो. मनोज दीक्षित ने सेमिनार को सम्बोधित करते हुए बताया कि भारतीय संस्कृति 'चरैवेति चरैवेति' की है, जिसमें सतत चलते रहने की महत्ता है। चलने को जीवन की प्रवृत्ति और नियति तक माना जाता है। जिस प्रकार सूर्य और पृथ्वी आदि सतत चलते रहते हैं, वैसे ही व्यक्ति को अपने जीवन में लगातार चलने की प्रवृत्ति रखनी चाहिए। उन्होंने खोजना, जानना और सीखना को भारतीय संस्कृति और दर्शन की विशिष्टता बताते हुए जीवन में इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला और बताया कि भारत में सबके लिए अपने धर्म अर्थात् कर्तव्यों के पालन को आवश्यक माना गया है। भारत ने दुनिया को त्याग और संतोष का मार्ग दिखाया। उन्होंने भारत के शिक्षा के इतिहास के बारे में बताया कि यहां 1824 में 7 लाख गुरुकुल मौजूद थे, लेकिन मैकाले ने षड्यंत्र पूर्वक गुरुकुलों को मिटाया, ताकि भारतीय संस्कृति को हीनता की संस्कृति बनाया जा सके। उन्होंने सेमिनार में उपस्थित विद्यार्थियों को जीवन के लिए आवश्यक मंत्र देते हुए कहा कि 'पढिए और लिखिए' यानि कि प्रतिदिन 10 पृष्ठ पढने और 1 पृष्ठ लिखने की आदत डाल लेनी चाहिए। यह आसान सा काम जीवन को बदलने में समर्थ है।

बदलाव के समय में जीवन मूल्यों का संरक्षण आवश्यक

सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समय के साथ बदलते जीवन मूल्यों के बारे में बताया कि पहले परिवारों में मुखिया के आदेश का अनुसरण करने की प्रवत्ति होती थी। बाद में बदलाव आया और परस्पर विचार-विमर्श के मूल्य सामने आए। इसके बाद वाद-विवाद ने जगह ले ली और परिणामतः परिवारों में झगड़े शुरू हो गए। लेकिन अब तो स्थिति पूरी ही उलट चुकी है। आज के परिवेश में तो नकारने की स्थिति बन चुकी है। बड़ों की बातों को नकारने की हालत मूल्यों की अवनति है। हम जो कुछ भी देते हैं, लौट कर वही हमारे पास वापस आता है। इसलिए अपने को सुधारना और जीवन मूल्यों के बदलते इस काल में अपने आपको संभाल कर रखने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति के कण-कण में मूल्य रचे-बसे हैं।

भ्रातृत्व भाव से ही संभव है राष्ट्र का विकास

मुख्य वक्ता प्रो. अरविन्द विक्रम सिंह ने अपने सम्बोधन में भारत को अध्यात्म की भूमि बताते हुए कहा कि यहां परस्पर बातचीत के दौरान भी हमारी संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों की झलक दिखाई देती है। उन्होंने बदलते भारत की तस्वीर प्रस्तुत करते हुए 2040 में विकसित भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक-आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने बताया कि हमारी सनातन संस्कृति में वैश्विक दृष्टि निहित है। राष्ट्र की मूल इकाई व्यक्ति होता है, उसे चरित्रवान, करूणामय, मैत्रीपूर्ण आदि भावनाओं से संयुक्त बनाने से और भ्रातृत्व भाव को पनपाने से ही राष्ट्र का विकास संभव है। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने सर्वांगीण विकास में मूल्यों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और जीवन निर्माण व राष्ट्र निर्माण में मूल्यों की प्रासंगिकता बताई। प्रारम्भ में कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. लिपि जैन ने सेमिनार की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए अतिथियों का परिचय दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सिमरन एंड ग्रुप द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान पुष्पगुच्छ, शॉल व साहित्य भेंट कर किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के समस्त संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दो दिवसीय व्याख्यान

वैश्वीकरण में भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों-परम्पराओं को बनाए रखना होगा- प्रो. आशुतोष प्रधान

ICPR के आर्थिक सौजन्य से 'वैश्वीकरण की नैतिकता' विषयक द्विदिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

प्रायोजक - इंडियन कौंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च (ICPR)
परियोजना स्वीकृत - वैश्वीकरण की नैतिकता विषयक द्विदिवसीय व्याख्यान
विभाग - शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

इंडियन कौंसिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च (आईसीपीआर) नई दिल्ली के सौजन्य से संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा वैश्वीकरण की नैतिकता विषय पर 4 मार्च को आयोजित एक व्याख्यान में मुख्य वक्ता केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला हिमाचल प्रदेश के प्रो. आशुतोष प्रधान ने कहा कि भारत के लिए वैश्वीकरण की नीति कोई नई नहीं है। उन्होंने नैतिक मूल्यों के आधार पर विकास की अवधारणा और वैश्वीकरण में नैतिकता की प्रतिस्थापना के बारे में बताया कि हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं आदि की आवश्यकता को समझना चाहिए और उन्हें कायम रखते हुए ही वैश्विक विस्तार के ख्याल को भी पनपाना चाहिए। उन्होंने बताया कि यातायात के साधनों के बाद टीवी आदि मीडिया और सोशल मीडिया आदि ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढावा दिया है। डिजीटलाईजेशन का प्रभाव काफी हुआ है, फिर भी हमें अपनी भौगोलिक आवश्यकताओं, सांस्कृतिक विशेषताओं आदि को बनाए रखना होगा। उन्होंने राष्ट्रीय नीतियों, ज्ञान के प्रसार, प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के विश्व की अन्य प्रमुख भाषाओं में अनुवाद करने और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्राचीन काल से चली आ रही विश्वमानव की परिकल्पना को साकार बनाने की आवश्यकता बताई।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगल-प्रार्थना से किया गया। रजिस्ट्रार प्रो. बीएल जैन ने अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. जिनेन्द्र जैन ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया। कार्यक्रम समन्वयक डा. अमिता जैन ने विषय प्रस्तुतीकरण किया। अंत में डा. गिरीराज भोजक ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. लिपि जैन, डा. प्रमोद ओला, डा. विनोद कस्वा, डा. हेमलता जोशी, डा. सरोज राय, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, डा. बलवीर सिंह, डा. विष्णु कुमार, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, डा. जेपी सिंह, डा. मनीष भटनागर, डा. रामदेव साहू, जगदीश यायावर आदि उपस्थित रहे।

सुख, आनन्द और प्रसन्नता का विज्ञान है नैतिकता- प्रो. बीएम शर्मा

दो दिवसीय व्याख्यान के दूसरे दिवस मुख्य वक्ता आरपीएससी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बीएम शर्मा ने कहा है कि नैतिकता के चारों और समस्त चीजें घूमती है, लेकिन आज नैतिकता की ही कमी नजर आ रही है। लोकसेवाओं में नैतिकता के पेपर को अनिवार्य बनाया गया है। आईपीएस और आरएएस के लिए यह जरूरी है कि वे समाज के नैतिकता को कैसे कायम रख पाएं। उन्होंने बताया कि नैतिकता दर्शनशास्त्र का विषय है, लेकिन यह एक विज्ञान भी है। सामाजिक विज्ञान में आदर्शमूलक व्यवस्था नैतिकता के बलबूते पर ही संभव है। नैतिकता आदर्श समाज व आदर्श राजनीति के लिए आवश्यक है। हमें इसके लिए अपने मूल्यों, संस्कृति व धर्म की रक्षा करनी होगी, तभी स्थिति में सुधार हो पाएगा। उन्होंने वैश्वीकरण के प्रभावों को बताते हुए उसके दुष्परिणाम भी गिनाए और कहा कि बदलते और वैश्विक बनते रहन-सहन, ब्रांडेड वस्त्रों, एक जैसी सोच आदि वैश्वीकरण का परिणाम है। लेकिन, विकृत होते समाज, विखंडित होते परिवार, क्षीण होती मर्यादाओं और अनिर्णय की स्थिति में परस्पर सम्मान और एक दूसरे की प्रगति में सहभागी बनने की नीति को नैतिकता के बलबूते पर ही हासिल किया जा सकता है। नैतिकता सुख, आनन्द और प्रसन्नता का विज्ञान है।

वैश्वीकरण से सुविधाओं के साथ मुश्किलें भी बढी

उन्होंने अपने व्याख्यान में राष्ट्रों की सम्प्रभुता के भी वैश्वीकरण

के दौर में नष्ट-प्रायः होने की ओर संकेत किया और बताया कि आज जी-7, जी-20, आईएमएफ, यूएनओ आदि के प्रभाव में राष्ट्रों की नीतियां बनने लगी हैं। आज राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक बन गई है। वैश्वीकरण से सुविधाएं बढी हैं, तो मुश्किलें भी पैदा हुई हैं। युवाओं को शिक्षा, संगठन व प्रतिबद्धता की सीख दिए जाने से ही देश की उन्नति संभव है। हमारे युवाओं को देश के विकास में काम लिया जा सके, ऐसी नीति देश के लिए तैयार होनी चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर जैन विश्वभारती संस्थान की सराहना की और इसे नैतिकता के लिए अपनी तरह से काम करने वाला एकमात्र संस्थान बताया और कहा कि राजस्थान में सबसे अधिक विश्वविद्यालय हैं और कालेजों की संख्या में भी राजस्थान चौथे नम्बर पर है, लेकिन इन सबके बीच यह संस्थान तपस्वी मुनियों-आचार्यों के अनुशासन में इस क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रहा है।

नैतिकता में है समस्त समस्याओं का समाधान

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि मानवीय सम्बंधों की विसंगतियों का समाधान ढूंढना ही 'एप्लाइड एथिक्स' है। वैश्विक सम्बंधों में इस विषय का प्रादुर्भाव हुआ है और इसमें एथिक्स के अनेक विषय सामने आए हैं। आज ग्लोबल विलेज और ग्लोबल सोसायटी की स्थिति साकार हुई है। विश्व के एक परिवार के रूप में सामने आने से हम दुनिया के किसी भी हिस्से में घटने वाली घटना से अछूते नहीं रह सकते। यह ग्लोबल इफेक्ट है कि कहीं एक पत्ता भी टूटता है, तो उसका प्रभाव हम पर होता है। उन्होंने ग्लोबाईजेशन के दुष्परिणाम भी बताए और कहा कि परिवार और वैवाहिक स्थितियों तक में बदलाव आ गया है। इस सारे प्रभाव को रोकने का काम एथिक्स करता है। नैतिकता ही समस्याओं का समाधान कर सकती है, हमारा आचरण सबके लिए स्वीकार्य बने, हम युद्ध की स्थिति से बच सकें, यह सब नैतिकता द्वारा ही संभव है। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा सरस्वती पूजन और ऐश्वर्या व समूह के स्वागत गीत से किया गया। प्रारम्भ में रजिस्ट्रार प्रो. बीएल जैन ने अतिथि परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में डा. गिरधारीलाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डा. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. रामदेव साहू, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. आभासिंह, श्वेता खटेड़, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. जेपी सिंह, डॉ. आभासिंह, डॉ. विनोद कस्वां, डा. बलबीर सिंह, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, जगदीश यायावर आदि सहित संस्थान के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एंटी रैगिंग सेल और एंटी रैगिंग स्क्वॉड

एंटी रैगिंग सेल एवं एंटी रैगिंग स्क्वॉड समिति ने किया विश्वविद्यालय का औचक निरीक्षण

संस्थान में एंटी रैगिग सेल और एंटी रैगिंग स्क्वॉड समिति के संयोजक प्रो. बी.एल. जैन ने अधिकारियों के साथ 9 मई को विश्वविद्यालय के हॉस्टल, शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कैंटीन का औचक निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने हॉस्टल में छात्राओं से रैगिग सम्बन्धी जानकारी प्रदान की और बताया कि प्रत्येक शिकायत तत्काल करनी चाहिए, ताकि उसका निराकरण किया जा सके। उन्होंने बताया कि इस विश्वविद्यालय में रैगिग के लिए कोई स्थान नहीं है।

अध्ययनरत विद्यार्थियों को नव प्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत व सम्मान किए जाने की परम्परा का निर्वाह होना चाहिए, जो इस संस्थान की परम्परा बन चुकी है। संयोजक प्रो. बीएल जैन ने बताया कि छात्राओं के लिए एंटी रैगिंग की जानकारी संस्थान के प्रॉस्पेक्ट्स में भी प्रकाशित हैं। इस सम्बंध में सभी विभागों, कैंटीन और छात्रावासों में दिशा-निर्देश प्रदर्शित भी किए गए हैं। प्रकोष्ठ की गतिविधियों का जायजा लेने के लिए समिति की नियमित बैठक होती है। संस्थान में अभी तक रैगिंग की कोई घटना सामने नहीं आई है।

उन्होंने बताया कि रैगिंग रोधी प्रकोष्ठ के चेयरमैन, संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड और संयोजक प्रो. बी.एल. जैन हैं तथाएंटी रैगिंग स्क्वॉड के संयोजक संस्थान के कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक हैं। निरीक्षण के समय छात्राओं से उनकी रैगिग सम्बंधी शिकायत या समस्या पूछे जाने पर उन्होंने प्रकट किया कि ऐसी कोई शिकायत नहीं है। यहां सभी कार्य सुचारू ढंग से एवं परस्पर स्नेह-प्रेम पूर्वक होने की संचालित होने की जानकारी छात्राओं ने इस एंटी रैगिंग टीम को दी।

दूरस्थ शिक्षा पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

सीखने वालों की आवश्यकताओं और सुविधाओं का दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत रहता है विशेष ख्याल - प्रो. विनय कुमार

दूरस्थ शिक्षा की चुनौतियों व अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

संस्थान के सेंटर फोर डिस्टेंस एंड ऑनलाईन एजुकेशन (सीडीओई) के तत्त्वावधान में 'मूक्सः चुनौतियां और अवसर (दूरस्थ शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में)' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 10 फरवरी को किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता सीडीओई के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। वेबिनार के मुख्य वक्ता व विषय विशेषज्ञ ग्राफिक इरा यूनिवर्सिटी (जीईयू) देहरादून के एसोसिएट प्रोफेसर डा. विनय कुमार जैन ने नियमित अध्ययन एवं ऑनलाईन व दूरस्थ शिक्षा के भेद बताते हुए कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाया गया है। उच्च शिक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षण के साथ सीखने की प्रक्रियाएं सुदृढ़ बनी हैं, इनसे वैश्विक ऑनलाइन शिक्षण में सीखने की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। मूक्स माध्यम से ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था से शिक्षण में सुधार आने के साथ ही छात्र सहभागिता बढ़ पाई है।

उन्होंने दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा की चुनौतियों के बारे में बताते हुए कहा कि दूरस्थ शिक्षा को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए। दूरस्थ शिक्षा प्रबंधन को छात्रों से ट्यूशन या शिक्षण शुल्क के अलावा अन्य विभिन्न शुल्क बिल्डिंग फंड आदि लेने से वंचित करती है और विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियों पर सरकारी शिक्षा अनुदान का भी नुकसान होता है। इसमें अध्यापक और विद्यार्थी के बीच सम्मुखता, सम्पर्क और व्यक्तिगत प्रभाव का लाभदायक व्यवहार समाप्त हो जाता है। इससे व्यक्तिगत मार्गदर्शन का अभाव होता है और विपरीत मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी सामने आए हैं। ऑनलाईन शिक्षा में इंटरनेट की बाधाएं भी समस्या खड़ी करती हैं। इसके बावजूद यह दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था मूक लोकप्रिय भी हुई है।

वर्तमान में इस व्यवस्था में 50 हजार से अधिक समुदाय सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। इसमें फायदा यह है कि विश्व में कहीं भी बैठ कर पढाई की जा सकती है। इसमें समूह चर्चा व सामूहिक विचार भी संभव है और समयबद्ध कार्यक्रम के साथ 24 घंटों में कभी भी कहीं भी अध्ययन की सुविधा मिलती है और अपनी स्वयं की ग्रेडिंग की व्यवस्था भी इसमें उपलब्ध है। यह सीखने वालों की आवश्यकताओं के अनुरूप है और इसमें लचीलापन उपलब्ध होने से विद्यार्थियों के लिए लाभदायक है। इसके साथ ही उन्होंने नई पीढी के लिए इस क्षेत्र में मौजूद अवसरों की जानकारी भी प्रदान की।

सुझावों से संभव होता है सुधार

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने वेबिनार में रखे गए विषय पर प्रस्तुत चिंतन की सराहना की और कहा कि इससे दूरस्थ व ऑनलाईन शिक्षा में सुधार की संभवनाएं बनेंगी। कार्यक्रम की संयोजिका सुश्री प्रगति चौरड़िया ने वेबिनार का संचालन किया। अंत में सीडीओई के सहायक निदेशक पंकज भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. एमके दास, डा. लक्ष्मी नारायण, डा. राजेश बयाना, डा. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़, कुशाल जांगिड़, डा. अमिता जैन, प्रियंका, बजरंग पुरी, रेखा, जगदीश यायावर, पवन सैन, अभिषेक चारण आदि 50 से अधिक की सहभगिता रही।

15 दिवसीय सम्पर्क एवं योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्कार निर्माण के साथ योग शिक्षा रोजगार प्राप्ति का भी साधन- प्रो. त्रिपाठी

एम.ए. योग एवं जीवन विज्ञान का 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र द्वारा एमए योग एवं जीवन विज्ञान के आयोजित 15 दिवसीय संपर्क एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 31 मार्च से किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युमन सिंह शेखावत के नेतृत्व में डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. अशोक भास्कर, डा. हेमलता जोशी, डॉ. विनोद कस्वां एवं दशरथ सिंह द्वारा विद्यार्थियों को अध्ययन और प्रशिक्षण कराया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने योग को आधुनिक समय की मांग बताया और कहा कि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा, जिसमें आज योग की दखल नहीं हो। योग सर्वांगीण विकास का आधार है, इससे व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास संभव होता है। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान को योग शिक्षा के लिए समर्पित विश्वविद्यालय बताते हुए कहा कि यहां योग का पाठ्यक्रम सबसे पुराना है और प्रारंभ से ही यहां योग का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। योग में कैरियर के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जैविभा विश्वविद्यालय से योग के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सेवा, वैकल्पिक चिकित्सा आदि क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि योग विषय से संस्कार निर्माण के साथ रोजगार प्राप्ति भी आसानी से उपलब्ध होती है। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. जे.पी. सिंह ने किया। उन्होंने 15 दिवसीय कार्यक्रम की निर्धारित समय-सारणी प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष प्रस्तुत की। पंकज भटनागर, प्रगति चौरडिया एवं डॉ. आयुषी शर्मा इस कार्यक्रम में सहयोगी रहे।

ग्रंथ/साहित्य समीक्षा

बिना इन्द्रिय और मन की सहायता से प्राप्त ज्ञान ही अतीन्द्रिय ज्ञान है- प्रो. जैन

प्रो. बच्छराज दूगड़ की 'अतीन्द्रिय ज्ञान' पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत

'अतीन्द्रिय ज्ञान' पुस्तक को लेकर संस्थान के शिक्षा विभाग में पुस्तक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि यह पुस्तक अतीन्द्रिय ज्ञान के विश्लेषण को प्रस्तुत करने वाली पहली महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा को मजबूती मिलेगी। उन्होंने बताया कि पुस्तक में बताया गया है कि अतींद्रिय ज्ञान का अनुभव किसी भी व्यक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य के अंदर छिपी हुई अनेक अमूर्त शक्तियां, दिव्य शक्तियों की अनुभूति प्रतिनिधि ज्ञान की अवस्था में ही होती है। अतींद्रिय ज्ञान आत्मा को असीम ज्ञान, असीम शक्ति, असीम शांति, असीम आनंद का बोध कराता है। जो ज्ञान बिना इन्द्रिय और मन की सहायता से वस्तुस्थिति का ज्ञान कराता है, वह ज्ञान अतींद्रिय ज्ञान कहलाता है। इस ज्ञान को भारतीय दर्शन में अलौकिक ज्ञान कहा गया है। यह गौरवपूर्ण कृति शिक्षा, ज्ञान, दर्शन और मनोविज्ञान के क्षेत्र में विपुल योगदान देगी। पुस्तक में दर्शन और परामनोविज्ञान दोनों का स्पर्श किया गया है। बताया गया है कि परमाणु विज्ञान के अनुसार मस्तिष्क में विद्यमान अल्फा तरंगे अतींद्रिय व्यवहार का कारण होती हैं। चिंतन के समय यह सबसे अधिक गतिशील होती हैं और जब चिंतन शांत होता है तो यह भी शांत हो जाती हैं और उस समय पर मन की अव्यक्त शक्तियों के उभरने की संभावना होती है।

11 अध्यायों में सभी दर्शनों के स्वरूप को प्रकट किया

प्रो. जैन ने बताया कि 'अतींद्रिय ज्ञान' नामक पुस्तक के लेखक जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. डॉ. बच्छराज दूगड़ हैं। यह पुस्तक के. जैन पब्लिशर्स उदयपुर द्वारा 1992 में प्रकाशित हुई थी। 176 पृष्ठों की इस पुस्तक में 11 अध्यायों में विभिन्न दर्शन में ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान में इंद्रिय व मन की भूमिका, मीमांसक और चार्वाक दर्शन में अतींद्रिय ज्ञान, वेदों में अतींद्रिय ज्ञान, उपनिषदों में अतींद्रिय ज्ञान, त्रिपिटक साहित्य एवं बौद्ध दर्शन में अतींद्रिय ज्ञान, जैन आगम एवं दर्शन में अतींद्रिय ज्ञान, न्याय-वैशेषिक दर्शन में अतींद्रिय ज्ञान, अद्वैत वेदांत में अतींद्रिय ज्ञान, सांख्य-योग में अतींद्रिय ज्ञान, परामनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन के अतींद्रिय ज्ञान की अवधारणा विषयों की विवेचना की गई है। इसमें गूढ़, सूक्ष्म एवं रहस्यमयी विषयों को विश्लेषित रूप में विवेचित किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रसार में सहायक

प्रो. जैन ने समीक्षा प्रस्तुत करते हुए बताया कि भारतीय दार्शनिक ज्ञान परंपरा को सुदृढ़, सशक्त व मजबूत बनाने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को गति-प्रगति प्रदान करने में यह पुस्तक अमूल्य अवदान प्रदान करेगी। यह पुस्तक भारतीय दार्शनिक ज्ञान परम्परा में अत्यंत ज्ञानवर्धक है। चार्वाक दर्शन साक्षात् इंद्रिय से संबंध विषय को ही ज्ञान का विषय मानता है और उसे ही सत्य मानता है। अतींद्रिय ज्ञान को वह नहीं मानता है। वेदों में प्राकृतिक शक्तियों की स्तुति पर विशेष बल दिया, प्राकृतिक शक्तियों को जाना और उन्हें अपने वशीभूत किया गया। अतींद्रिय ज्ञान हेतु आत्मालोचन, निष्काम कर्म और मन शुद्ध, शारीरिक नियंत्रण एवं इंद्रिय नियमन से अतींद्रिय ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उपनिषदों में पराविद्या को अतींद्रिय ज्ञान के रूप में माना गया है और पराविद्या से अतीन्द्रिय ज्ञान की शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। यह अतींद्रिय ज्ञान अक्षर, आत्मा का साक्षात ज्ञान कराता है। इसके लिए शौनक ऋषि, महर्षि अंगिरा, ज्ञान ऋषि एवं नचिकेता संवाद प्रमाण स्वरूप हैं।

अतीन्द्रिय ज्ञान के स्वरूप

उन्होंने बताया कि पुस्तक में आया है कि जैन दर्शन ने अतींद्रिय ज्ञान को आत्मा से उत्पन्न ज्ञान माना है। वह ज्ञान मन और इंद्रियों की सहायता के बिना होता है। ज्ञान आत्मा का स्वरूप है। अतींद्रिय ज्ञान प्राप्ति के लिए जैन दर्शन त्रिरत्न के अभ्यास पर विशेष बल देता है। बौद्ध दर्शन ने अतींद्रिय प्रत्यक्ष को निर्विकल्प माना है, क्योंकि जो ज्ञान विकल्प होता है, वह स्पष्ट प्रतिभास नहीं हो सकता है। न्याय-वैशेषिक अतींद्रिय ज्ञान को अलौकिक सन्निकर्ष से उत्पन्न मानता है। अद्वैत वेदांत दर्शन में ब्रह्म ज्ञान को ही अतींद्रिय ज्ञान माना गया है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, सुश्री प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड़, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि उपस्थित रहे।

संस्कार-निर्माण के लिए एकाग्रता, संकल्प शक्ति व आवेश पर नियंत्रण का अभ्यास जरूरी

आचार्य महाप्रज्ञ के लेख की समीक्षा प्रस्तुत

संस्थान के शिक्षा विभाग में आतंरिक व्याख्यान-माला के अंतर्गत 20 जनवरी को डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के लेख 'कैसे करें संस्कारों का निर्माण' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि व्यक्ति में अच्छाई तथा बुराई दोनों के बीज विद्यमान रहते हैं। जीवन का अच्छा पक्ष प्रकट हो या बुरा, यह हमारे पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। बच्चा क्या लेकर आया है, इस पर हमारा कोई वश नहीं है, करना इतना ही है कि उसमें जो अच्छाई के बीज विद्यमान हैं, उन्हें उभार कर ऊपर लाया जाए। डा. शर्मा ने बताया कि आचार्यश्री ने संस्कार निर्माण के कुछ प्रमुख सूत्र बताये हैं, जिनमें स्वार्थ का सीमाकरण, उदार दृष्टिकोण, हीन तथा अहम् भाव से मुक्ति का अभ्यास, संगठन तथा अनुशासन के प्रति विश्वास एवं आहार शुद्धि व नशा मुक्ति आदि प्रमुख हैं। माता-पिता, बच्चों को संस्कारित करने के प्रश्न पर आचार्यश्री कहते हैं कि आवेश पर नियंत्रण का अभ्यास, एकाग्रता बढाने का अभ्यास एवं संकल्पशक्ति का विकास, यदि ये तीन बातें अभिवावक बच्चों को सिखा पाएं, तो वे बच्चों का भरपूर भला कर पाएंगे। इन संस्कारों को देने का अनुभवसिद्ध प्रयोग आचार्यश्री बताते हैं कि दीर्घ श्वांस का अभ्यास, दीर्घ श्वांस के प्रयोग से क्रोध-आवेश पर नियंत्रण, एकाग्रता में वृद्धि, मादक व्यसनों से दूरी के साथ स्वर्गिक आनंद की प्राप्ति होती है। अनेक बुरी आदतों से बचने का यह एक अचूक उपाय है। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ. गिरिराज भोजक द्वारा किया गया।

विकसित भारत 2047 कार्यक्रम श्रृंखला

सामुदायिक सहभागिता विकास कार्यक्रम में राष्ट्र विकास के विभिन्न पहलुओं पर किया चिंतन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) नई दिल्ली के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में 'विकसित भारत- 2047' थीम पर अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की गई। कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'सामुदायिक सहभागिता विकास कार्यक्रम' का आयोजन 15 अप्रेल को किया गया। जिसमें लाडनूं एवं आसपास के क्षेत्र से समाज के लोगों को आमंत्रित किया जाकर उनके साथ राष्ट्र विकास के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में सामुदायिक सहभागिता, सांप्रदायिक सद्भाव, शासन सत्ता एवं नागरिकों के मध्य समन्वय की भावना, सामाजिक न्याय, सत्ता में उत्तरदायित्व की भावना तथा नागरिकों में कर्तव्य-परायणता का दृष्टिकोण आदि राष्ट्र के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण आयामों पर विचार-विमर्श किया गया। विकसित भारत कार्यक्रम के आयोजक तथा समन्वयक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी व कार्यक्रम सह-समन्वयक डॉ. बलबीर सिंह के अलावा इस दौरान सुरेंद्र सिंह जोधा, नीतू शेखावत, राजकुमार पाटनी, उर्मिला भंसाली, नरेंद्र मेघवाल, बालसिंह गहलोत, कैलाश लोहिया आदि प्रबुद्धजनों के साथ संकाय सदस्य प्रो, रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि संकाय सदस्य एवं संस्थान के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारत की वैश्विक साख एवं धाक दोनों बढ़ी- डॉ. गजादान चारण

'वैश्विक स्तर पर तीव्रता से भारत की बढ़ती पहुंच' विषय पर 3 अप्रेल को 'विकसित भारत 2047 थीम पर आयोजित कार्यक्रम में राजकीय महिला महाविद्यालय लाडनूं के प्राचार्य प्रो. गजादान चारण मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता कार्यक्रम समन्वयक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रो. गजादान चारण ने कार्यक्रम में कहा कि भारत में विकसित राष्ट्र बनने की अपार संभावनाएं मौजूद हैं और इस दिशा में भारत तीव्र गति से प्रयासरत है। आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्र के साथ सैन्य क्षमता की दिशा में भी भारत आत्मनिर्भर बन चुका है और दूसरे राष्ट्रों को सैन्य सहायता उपलब्ध करवाने में सक्षम बनता जा रहा है। हमने अपने सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्रतिष्ठापित करने में सफलता पाई है। योग, आयुर्वेद, चिकित्सा एवं ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में आज का भारत तीव्रगति से बढ रहा है और देश अब विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। भारत की धाक और वैश्विक साख दोनों बढ़ी है, जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। अध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि विकसित राष्ट्र के सपने को साकार करने के लिए हमें अधिकारों के स्थान पर कर्तव्यों को ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानना होगा। प्रारम्भ में प्रो. जैनेंद्र कुमार जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सह समन्वयक डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

'विकसित भारत अभियान' के तहत ग्राम खानपुर व भियाणी में निकाली रैली

संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा निकटवर्ती ग्राम खानपुर तथा भियाणी में 'विकसित भारत अभियान' के तहत जागरुकता रैली का आयोजन 25 जनवरी को किया गया। रैली को विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने रवाना किया। रैली का नेतृत्व डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभा सिंह एवं सुश्री प्रमोद ओला द्वारा किया गया। रैली के पश्चात छात्राओं द्वारा दोनों गांवों खानपुर एवं भियाणी के घर-घर जा कर सर्वे किया गया और भारत सरकार द्वारा प्रायोजित संकल्प विकसित भारत अभियान के अंतर्गत ग्राम की विशेषताओं का अवलोकन किया गया। रैली में छात्राओं ने शिक्षा, साक्षर, स्वच्छता, सरकार की योजनाओं, कौशल आदि पर जागरूकता पैदा की। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. आभा सिह, स्नेहा एवं शिक्षा विभाग की बी.ए.-बी.एड एवं बी. एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

महिलाओं के नेतृत्व में देश विकसित व समर्थ बनेगा

'विकसित भारत 2047' थीम पर 9 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य एवं दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य महिलाओं की सक्रिय एवं सार्थक भागीदारी पर भी निर्भर करता है। उन्होंने पूर्व रक्षामंत्री एवं वर्तमान वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आदि देश की अनेक शक्तिशाली महिलाओं की मिसाल देते हुए महिलाओं के नेतृत्व को बेहतरीन बताया और कहा कि यदि राष्ट्रीय नेतृत्व महिलाओं के हाथ में हों तो निश्चित ही भारत सक्षम एवं शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा। उन्होंने छात्राओं से सदैव अदम्य साहस के साथ आत्मसम्मान से जीने की सीख दी। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सह-समन्वयक डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

संयमित दिनचर्या, आहार एवं व्यवहार से ही संभव है व्यक्तित्व विकास- सारिका गिड़िया

'व्यवस्थित दिनचर्या एवं संयमित आहार' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान में 'व्यवस्थित दैनिक दिनचर्या एवं संयमित आहार' पर विषय विशेषज्ञ बेंगलुरु निवासी सारिका गिड़िया ने 2 मार्च को अपना अतिथि व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान में सारिका ने जीवन के प्रतिदिन के क्रियाकलापों की सहजता से अवगत करवाते हुए छात्राओं से दादी-नानी के उदाहरण प्रस्तुत किए एवं उनके जीवन की कठिन साधना एवं परिश्रम के महत्त्व को उजागर किया। उन्होंने इस दौरान संयमित आहार, संयमित दिनचर्या एवं संयमित व्यवहार की उपादेयता पर भी प्रकाश ड़ाला और उसे ही सफल जीवन की सच्ची साधना माना। व्याख्यान के दौरान उन्होंने मोटे अनाज को दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता बताते हुए मोटे अनाज के गुण और महत्त्व बताया। अध्यक्षता करते हुए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने जीवन में बदलाव लाने के लिए स्वस्थ शरीर को आवश्यक और सर्वांगीण प्रतिभा का आधार बताया। उन्होंने सारिका गिड़िया द्वारा बताए गए समस्त दैनिक उपायों को व्यक्ति के दृढ़ निश्चय एवं घरेलू नुस्खों में समाहित करने की जरूरत बताई।

कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं व्याख्यानकर्ता का परिचय प्रस्तुत करते हुए सारिका गिड़िया के व्यक्तित्व को बहुआयामी बताया। प्रारम्भ में व्याख्यानकर्ता गिड़िया को संस्थान का प्रतीक चिह्न, शॉल एवं पुष्पगुच्छ प्रदान करके सम्मानित किया गया। इस दौरान प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. प्रगति भटनागर, मधुकर दाधीच, प्रेयस सोनी, श्वेता खटेड़, अनूप कुमार आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में महावीरसिंह एवं हीरालाल देवासी ने सहयोग प्रदान किया।

काम छोटा या बड़ा नहीं होता, बशर्ते ईमानदारी से किया जाए- प्रो. प्रदीप कुमार जैन

'जीवन में सफलता के मंत्र' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन 13 मार्च को किया गया, जिसमें लोंगेवाला विश्वविद्यालय पंजाब के प्रो. प्रदीप कुमार जैन ने 'जीवन में सफलता के मंत्र' पर आधारित व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. जैन ने जीवन में संयम एवं विकास की जरूरत बताते हुए कैरियर को लेकर बचपन से बुने छात्राओं के सपनों को सकारात्मक के साथ आगे बढ़ाने का हौंसला भी दिया। कहा कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता, बशर्ते उसे ईमानदारी से किया जाए। उन्होंने जीवन में प्रगति के पथ को प्रशस्त करने हेतु केएसए का मंत्र देते हुए बताया कि के का मतलब नोलेज, एस से स्किल डवलेपमेंट और ए से एटीट्यूड होता है। उन्होंने छात्राओं को सदैव बेहतरीन नॉलेज के साथ अच्छी स्किल का उपयोग करते हुए सकारात्मक एटीट्यूड को अपनाने की नसीहत दी तथा कहा कि इस फार्मूले को अपनाकर कोई भी विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण कैरियर के साथ एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है, जो उसके स्वयं के लिए और समूचे राष्ट्र हेतु हितकारी होगा।

मिटाई छात्राओं की झिझक

इस दौरान प्रो. जैन ने मन की झिझक को मिटाने के लिए उपस्थित छात्राओं में से पांच ऐसी छात्राओं को चुना, जिन्होंने कभी सार्वजनिक मंच पर अपने आप को अभिव्यक्त न किया हो। इन छात्राओं से सीधे संवाद करते हुए प्रो. जैन ने उन्हें प्रेरित किया। व्याख्यान के बाद अनेक छात्राओं ने प्रो. जैन से कैरियर से सम्बंधित विभिन्न शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने ज्ञान के साथ संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता, लेकिन आत्मविश्वास एवं स्वावलंबन की पृष्ठभूमि पर ही मेहनत की जा सकती है। प्रारम्भ में अभिषेक चारण द्वारा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अतिथि वक्ता प्रो. जैन का पुष्पगुच्छ, शॉल और प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मान भी किया गया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, देशना चारण, घासीलाल शर्मा, हीरालाल देवासी आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम

देश को वैश्विक महाशक्ति बनाने की ओर अग्रसर करती है NEP-2020

नई शिक्षा नीति को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार नई शिक्षा नीति एनईपी- 2020 के विभिन्न प्रावधानों के बारे में छात्रों व संकाय सदस्यों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए जैन विश्वभारती संस्थान में जागरूकता कार्यक्रम 30 जनवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एनईपी सारथी खुशी जोधा ने बताया कि एनईपी 2020 का लक्ष्य भारत को वैश्विक ज्ञान के क्षेत्र में महाशक्ति बनाना है। एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) की महत्ता के बारे में भी उन्होंने बताते हुए मल्टीपल एंट्री एंड मल्टीपल एग्जिट सिस्टम व 360 डिग्री असेसमेंट बेस्ड रिपोर्ट कार्ड की विशेषताओं को दर्शाया। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत '5 प्लस 3 प्लस 3 प्लस 4' के पैटर्न के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि एनईपी व्यापक आधार वाले बहु-विषयक पाठ्यक्रम पर जोर देता है। उन्होंने कई निकास विकल्पों के साथ 4 वर्षीय स्नातक कार्यक्रम की विशेषताओं के बारे में भी जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि नई शिक्षा नीति छात्राओं को अध्ययन में आजादी और फ्लैक्सिबिलिटी प्रदान करती है। छात्राओं को सर्विस कर्त्ता ना बनाकर सर्विस प्रदाता बनने की राय दी। नई शिक्षा नीति के तहत स्कूल में 5वीं तक शिक्षा मातृभाषा या फिर क्षेत्रीय भाषा में दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. सरोज राय, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड़ व संस्थान के अन्य संकाय सदस्यों के साथ शिक्षा विभाग व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की समस्त छात्राएं उपस्थित रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में एनईपी-2020 पर 6 अप्रेल को व्याख्यान का आयोजन किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर शिक्षक को शिक्षा की गुणवत्ता के लिए एनईपी-2020 के प्रावधानों के अनुसार उठाए जाने वाले कदमों के बारे जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि इसमें राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा प्रवेश परीक्षा करवाई जाएगी। 2030 तक सभी एकल शिक्षक शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक कॉलेज और विश्वविद्यालय में शामिल किया जायेगा।

4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री 2030 तक न्यूनतम डिग्री योग्यता होगी। शिक्षक भर्ती में टीईटी या एनटीए परीक्षा के अंकों को शामिल किया जाएगा। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में साक्षात्कार अथवा कक्षा में पढाने का प्रदर्शन देखना, शिक्षकों के ऑनलाइन के लिए 'स्वयम्' व 'दीक्षा' जैसे पोर्टल से ज्ञान बढाया जाएगा, बहु-विषयक और एकीकृत उच्चतर गुणवत्तायुक्त विषयवस्तु, शिक्षक समुदाय से जुडे, छात्रों को पारम्परिक स्थानीय कला, व्यवसायिक शिल्प, उद्यामिता, कृषि या कोई अन्य विषय से जोड़ना शामिल होगा। इसमें स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों या विशेषज्ञों को आमंत्रित करना, शिक्षक का नवीनतम तकनीकी में प्रशिक्षण, पर्यावरण शिक्षा, राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (एनपीएसटी) के आधार पर वेतनवृद्धि, पदोन्नति और पहचान किया जाना, शिक्षण की विविध विधियां का अध्ययन, शोध प्रलेखन, बेहतरीन मेंटरों का निर्देशन, भारतीय मूल्यों, भाषाओं, ज्ञान, लोकाचार और परम्पराओं के प्रति जागरूकता पैदा करना, सामुदायिक सेवा, व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करना, शिक्षक शिक्षा में अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बढ़ावा देना शामिल है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ.अमिता जैन, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़, प्रमोद ओला, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि के साथ विभाग की बी.ए. -बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यपिकाएं भी उपस्थित रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में जागरुता कार्यक्रम का आयोजन 18 मार्च को किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारत को विश्वगुरु बनाने की कल्पना को साकार करने में सर्वाधिक कारगर होगी, इसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के उन्नयन के साथ राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला दर्शित होती है। एन.ई.पी. सारथी खुशी जोधा ने नई शिक्षा नीति के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह नये भारत की शिक्षा नीति है, जो पुरातन के साथ नवीनता का समन्वय प्रदर्शित करती है। इसमें भारतीय मूल्यों के समावेश का प्रावधान वर्तमान में सर्वाधिक प्रासंगिक है। छात्राधापिका दिव्या पारीक ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा हेतु विभिन्न प्रावधानों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि अधिकतम विद्यार्थी, शिक्षक व जनसमुदाय इसके प्रति जागरूक हो सके। कार्यक्रम में 'मेरा पहला वोट देश के लिए' अभियान के अंतर्गत हुई प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा सना, कान्ता सोनी, ललिता बिडियासर और आशना को सम्मानित किया गया। अंत में डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सामूहिक रूप से किया गया अणुव्रत महासंगान

कुलपति ने बताया अणुव्रतों को समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना का माध्यम

संस्थान के आचार्य महाप्रज्ञ ऑडिटोरियम में नैतिकता के जागरण का अनूठा प्रयोग आजमाते हुए अणुव्रत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन 19 जनवरी को किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समूचे स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों ने मिलकर सामूहिक रूप से अणुव्रत गीत का गायन किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर यह गायन अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के देशव्यापी अणुव्रत संगान कार्यक्रमों के एक साथ आयोजन के आह्वान पर किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि अणुव्रत के कारण सामाजिक बदलाव संभव होता है।

आचार्य तुलसी ने कहा था कि सुधार अपने आप से करना चाहिए, इससे पूरे समाज व युग का सुधार संभव है। उन्होंने समूची मानवता को संदेश दिया था, वे किसी भी तरह की धार्मिकता या साम्प्रदायिकता से पूरी तरह से मुक्त थे। उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी के स्वप्नों पर बना जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय उनके विचारों का अनुगामी है और देशभर में नैतिक मूल्यों को सिखाने वाला प्रमुख विश्वविद्यालय बना हुआ है। इस 300 लोगों के सामूहिक अणुव्रत संगान कार्यक्रम में ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री, कुलसचिव प्रो. बीएल जैन, दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, असिस्टेंट रजिस्ट्रार दीपाराम खोजा, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, मोहन सियोल, राकेश कुमार जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. लिपि जैन, डा. युवराज सिंह खंगारोत, डा. गिरीराज भोजक, डा. अमिता जैन, डा. आभा सिंह, डा. विनोद कस्वां, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, विजयकुमार शर्मा, डा. सरोज राय, डा. प्रगति भटनागर, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, डा. अशोक भास्कर, डा. जेपी सिंह, प्रगति चौरड़िया, श्वेता खटेड़, देशना चारण, डा. आयुषी शर्मा, निरंजन सिंह सांखला, डा. वीरेन्द्र भाटी, अभिषेक चारण, भुवनेश शर्मा, रमेशदान चारण, दीपक माथुर, प्रकाश गिड़िया, अमीलाल चाहर आदि उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों की शिकायतों के निवारण के लिए यूजीसी द्वारा की गई नई व्यवस्था के अन्तर्गत संस्थान में लोकपाल की नियुक्ति

प्रथम लोकपाल प्रो. के.एन. व्यास ने छात्राओं को समझाया लोकपाल का दायरा व शिकायत निवारण प्रक्रिया

संस्थान के प्रथम लोकपाल के रूप में नियुक्त जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर के.एन. व्यास यहां पहुंचे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विद्यार्थियों की शिकायतों के निवारण हेतु विनियम 2023 के तहत लोकपाल की व्यवस्था की गई है। उनके कार्य को सुचारू रूप से संपादित करने एवं लोकपाल के सहयोगार्थ विश्वविद्यालय में एक विशेष समिति का भी गठन किया गया है, जो कि संबंधित शिकायत पर 15 कार्य दिवसों के भीतर लोकपाल को रिपोर्ट करेगी एवं 30 दिनों के भीतर समस्या का समाधान संभव हो सकेगा।

लोकपाल के दायरे को समझाया

इस नई लोकपाल व्यवस्था के तहत यहां प्रथम लोकपाल के रूप में आए प्रो. व्यास ने संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अपने सम्बोधन में लोकपाल के विद्यार्थियों के हितार्थ कार्यों को विश्लेषित करते हुए कहा कि प्रवेश प्रक्रिया संबंधित गड़बड़ी, फीस, सर्टिफिकेट वापस नहीं करने, यौन उत्पीड़न, परीक्षा संचालन में अनियमितताओं के होने, छात्रावास में दाखिले के लिए अलग से पैसे की मांग करने, आरक्षण नियमों का पालन न होने आदि अन्य शिकायत होने पर लोकपाल की शरण ली जा सकती हैं। लोकपाल सदैव प्रक्रिया की निष्पक्षता और स्वस्थ संघर्ष समाधान के लिए प्रयास करते हैं। वक्तव्य के दौरान छात्राओं एवं लोकपाल के बीच हुए संवाद में प्रो. व्यास ने समस्याओं को प्रकृति आधारित मानते हुए व्यक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक तीन प्रकार के दायरे में समस्त समस्याओं को अभिव्यक्त कर विद्यार्थियों एवं संस्थान कर्मचारियों की समस्याओं के निपटारे हेतु अपनी ओर से प्रतिबद्धता जाहिर की।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जैनेंद्र कुमार जैन एवं अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्रसिंह राठौड़ ने भी सम्बोधित किया। प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने लोकपाल प्रो. व्यास का स्वागत किया और उनका परिचय प्रस्तुत करते हुए स्वागत-वक्तव्य रखा। इस अवसर पर समस्त विद्यार्थियों के साथ संकाय सदस्य डॉ. बलवीर सिंह, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि उपस्थित रहे।

दो दिवसीय प्राणिक हीलिंग कार्यशाला आयोजित

आभामंडल को ऊर्जस्वित कर स्वास्थ्य-लाभ की नई चिकित्सा पद्धति का अभ्यास करवाया

संस्थान के योग और जीवन विज्ञान विभाग में दो दिवसीय प्राणिक हीलिंग कार्यशाला (1-2 मार्च) में नई प्राणिक चिकित्सा विद्यार्थियों को सिखाई गई। कार्यशाला में अपनी ऊर्जा शक्ति को सक्रिय करने, आभामंडल की जांच करने, आभामंडल को पहचानना, मुख्य 11 चक्रों को जानने और उनको पहचानने, उनकी सफाई करने, उनको उर्जित करने आदि प्रयोगों द्वारा प्राणिक हीलिंग के विभिन्न प्रयोग करवाए गए। साथ में उन्हें ध्यान का प्रयोग भी करवाया गया। प्राणिक हीलर डा. रेणु चिंडालिया ने सभी विद्यार्थियों को नई चिकित्सा पद्धति प्राणिक हीलिंग के बारे में प्राथमिक जानकारी दी और इससे संबंधित अनेक प्रयोग करवाए। कार्यशाला के दो दिनों में प्राणिक हीलर चिंडालिया ने सामुहिक रूप से प्रार्थना एवं ध्यान के साथ कार्यशाला का आरंभ करवाया और आभामंडल को ऊर्जावान करने के तीन प्रकारों के बारे में बताया व श्वास की क्रियाएं सिखाई। साथ ही स्वयं के आभामंडल को जानने, जांच करने और उसे ऊर्जावान बनाने के तरीकों को बताया।

दूर बैठे व्यक्ति की चिकित्सा भी संभव

डा. रेणु ने कार्यशाला में आभामंडल को ठीक करके स्वयं का उपचार स्वयं द्वारा ही करने एवं दूर बैठे व्यक्ति का उपचार करने की पद्धति के बारे में भी बताया। कार्यशाला में डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. हेमलता जोशी, डॉ. विनोद कस्वा, दशरथ सिंह आदि ने अपनी सेवाएं प्रदान की। कार्यशाला के समापन सत्र में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि योग के साथ त्याग जुड़ा होता है। त्याग को अपनाने से योगाभ्यास सुलभ होता है। प्रो. जिनेंद्र जैन ने योग के बारे में विस्तार से बताते हुए योग एवं प्राणिक हीलिंग का संबंध समझाया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य भी मौजूद रहे। अंत में डॉ. रेणु चिंडालिया ने कार्यशाला की उपयोगिता और आवश्यकता बताते हुए विद्यार्थियों को सतत अभ्यास के लिए प्रेरित किया। अंत में डॉ. विनोद कस्वा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दो दिवसीय आर्ट एंड क्राफ्ट कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 26-27 अप्रेल को दो दिवसीय आर्ट एंड क्राफ्ट कौशल विकास कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आर्ट और क्राफ्ट के काम को व्यक्तिगत स्वावलंबन और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने वाला बताया और कहा कि इससे सृजनात्मक सोच का विकास होता हैं तथा अवसाद, तनाव और चिंता कम हो सकती है। उन्होंने कौशल विकास कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना, सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना और अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाना बताया।

इस दो दिवसीय आर्ट एंड क्राफ्ट कौशल विकास कार्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा सजी हुई पूजा की थाली, पेन स्टैंड, दीवार पर टांगने की चीजें, डॉल, बेड, साईकिल, पेपर आर्ट आदि अनेक सजाने की वस्तुएं आदि का निर्माण किया गया, जो छात्राओं के लिए रुचिकर होने के साथ रोजगारपरक व जीवनोपयोगी भी है। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. अमिता जैन ने पाठ्येत्तर विषयों के प्रति रूचि उत्पन्न की जानी विद्यार्थियों के लिए आवश्यक बताई और कहा कि एकेडमिक शिक्षा से विद्यार्थी ज्ञान के साथ सर्टिफिकेट और डिग्री होल्डर बनता है, जबकि इन कौशल विकास कार्यक्रमों से उसकी सृजनात्मक अभिरुचि में वृद्धि होती है और वे छात्रों को बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी बनाते हैं। कार्यशाला के दौरान सभी संकाय सदस्य एवं बी.ए.-बीएड एवं बी.एससी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में C.A. फाउण्डेशन कोर्स का शुभारंभ

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में 2 मई को 12वीं कक्षा उतीर्ण छात्राओं के लिए निःशुल्क सीए फाउण्डेशन कोर्स का आयोजन किया गया। वाणिज्य संकाय सदस्या श्वेता खटेड़ एवं मधुकर दाधीच द्वारा प्रारम्भ किए गए इस कोर्स के पहले दिन श्वेता खटेड़ ने कहा कि सीए फाउण्डेशन का यह कोर्स लाडनूं एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के हितार्थ निःशुल्क प्रारंभ किया गया है, जिसके तहत वर्तमान में सीए फाउंडेशन की तथा आगे सीए इंटरमीडिएट के दोनों ग्रुप्स की कक्षाएं संचालित की जाएगी। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन के सभी विषयों लेखांकन के सिद्धांत और व्यवहार, व्यावसायिक सन्नियम, व्यावसायिक गणित, तर्क, सांख्यिकी और व्यावसायिक अर्थशास्त्र, व्यावसायिक अर्थशास्त्र और व्यवसाय व वाणिज्यिक ज्ञान आदि सभी की नियमित कक्षाएं विधिवत् आयोजित की जा रही हैं। इस दौरान मधुकर दाधीच ने छात्राओं को संस्थान में आयोजित हो रहे सीए फाऊंडेशन कोर्स की विस्तृत जानकारी दी। शुभारम्भ कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित इस निःशुल्क सीए फाउंडेशन कोर्स को एक महत्त्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने संस्थान के शैक्षिक वातावरण एवं उसमें संचालित गतिविधियों को देश, समाज एवं छात्राओं के हितानुकूल बताया। कार्यक्रम में सीए फाऊंडेशन कोर्स की नवागंतुक छात्राओं के साथ संकाय सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलवीर सिंह, अभिषेक चारण, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा आदि मौजूद रहे।

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

शोध में गुणवत्ता के साथ जवाबदेही और उपयोगिता के गुण भी आवश्यक- प्रो. दूगड़

तीन दिवसीय शोध उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन, शोधार्थियों ने शोध प्रगति विवरण प्रस्तुत किए

संस्थान के शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय शोध उन्मुखीकरण कार्यक्रम (14-16 मई) का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से आए 70 शोधार्थियों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने शोधार्थियों की बैठक लेकर शोध-प्रक्रिया और शोध को उच्च गुणवत्ता-सम्पन्न बनाने के बारे में उनका मार्गदर्शन किया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि शोध का उद्देश्य हमेशा नवीन विषयों की खोज करना होना चाहिए, जिससे मनुष्य समुदायों के बीच के तनाव और टकराव को कम करके जीवन को सुगम बनाया जा सके। शोध में गुणवत्ता लाने की तरफ भी शोधार्थी को ध्यान रखना चाहिए।

शोध में साक्ष्यों-तथ्यों की मजबूती, नैतिकता और नीति निर्माण में सक्षमता आवश्यक है, जो सदैव उपयोगी सिद्ध हो सके। शोध में पारदर्शिता, जवाबदेही, व्यावसायिकता, उपयोगिता आदि का पालन आवश्यक है। उन्होंने विषय-चयन को महत्त्वपूर्ण बताया तथा कहा कि उसके बाद संदर्भों की खोज और गहन अध्ययन-चिंतन के बाद उनका प्रस्तुतीकरण महत्त्वपूर्ण होता है। इसके लिए एक अच्छे शोधार्थी में गृहीत विषय का ज्ञान, क्षमता, कार्य-संलग्नता, कृतज्ञता, लेखन-क्षमता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तटस्थता, सकारात्मकता और सहनशीलता के गुण आवश्यक हैं।

छह सत्रों में शोध-प्रगति प्रतिवेदन के साथ शोध-पत्र प्रस्तुत

यह रिसर्च ओरिएंटेशन कार्यक्रम छह सत्रों में सम्पन्न किया गया, जिसमें सभी शोधार्थियों ने अपनी शोध की प्रगति सम्बंधी प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के साथ ही एक-एक शोध-पत्र का वाचन भी किया। इसमें जैन विश्वभारती संस्थान के जैन विद्या विभाग, प्राकृत व संस्कृत विभाग, अंग्रेजी विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, जीवन विज्ञान एवं योग विभाग, शिक्षा विभाग, समाज कार्य विभाग के विभिन्न विषयों में शोध कर रहे शोधार्थियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। कुलसचिव डा. अजयपाल कौशिक ने शोधपत्र वाचन सत्र की अध्यक्षता करते हुए शोधार्थियों के लिए रिसर्च को एक चुनौती मानते हुए विषय चयन, डेटा संकलन, विश्लेषण, तार्किक प्रस्तुतीकरण के बारे में बताते हुए कहा कि प्रत्येक कार्य में समयबद्धता व अनुशासन बहुत जरूरी है। गुणवत्ता के साथ भी किसी तरह का समझौता नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की विशेषताओं, यहां के विशाल पुस्तकालय आदि के बारे में जानकारी दी।

विभिन्न सत्रों में शोध निदेशक प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. समणी अमलप्रज्ञा, डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा, डॉ. रामदेव साहू, प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा, प्रो. समणी श्रेयश प्रज्ञा, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. आभा सिंह, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. लिपि जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज आदि विद्वानों ने शोधार्थियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। शोध निदेशक प्रो. जिनेन्द्र जैन ने बताया कि 22 मई को विदेशस्थ शोधार्थियों के लिए भी ऑनलाईन ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित किया गया।

साईबर जागरूकता वेबिनार

साइबर जागरूकता दिवस पर 'उच्च शिक्षण संस्थानों में साइबर हाईजीन' विषयक वेबिनार का देश के समस्त उच्च शिक्षण संस्थानों में सीधा प्रसारण

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र द्वारा 3 अप्रेल को आयोजित 'उच्च शिक्षण संस्थानों में साइबर हाईजीन' विषयक वेबिनार में संस्थान के समस्त शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक सदस्यों एवं विद्यार्थियों के सहभागिता की। इसका सीधा प्रसारण यू.जी.सी. के मीडिया चैनल्स द्वारा देश के समस्त उच्च शिक्षण संस्थानों में किया गया।

वेबिनार में प्रारंभिक वक्तव्य विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार ने प्रस्तुत किया तथा मुख्य वक्ता भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र, नई दिल्ली के निदेशक निशांत कुमार थे। इस अवसर पर संस्थान के कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि दिनों-दिन बढ़ रहे साइबर अपराधों के प्रति विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को जागरूक करने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, ताकि वे स्वयं किसी भी प्रकार की फ्रॉड्स से बच सकें और साथ ही अपने परिजनों एवं समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक कर सकें। प्रो. जैन ने अपने निजी अनुभव साझा करते हुए साइबर अपराधियों द्वारा अपराधों को अंजाम देने के तरीकों से आगाह किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के

निर्देशानुसार जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में प्रत्येक माह के प्रथम बुधवार को साइबर जागरूकता दिवस कार्यक्रम का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। उन्होंने साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता को वर्तमान में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बताया।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने दिखाया अपनी प्रतिभा का कौशल

आशु भाषण, पोस्टर पेंटिंग, एकल गायन व कविता प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान में चल रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में 8 फरवरी को एकल गायन, पोस्टर प्रतियोगिता और आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एकल गायन प्रतियोगिता में निशा स्वामी, दिव्या भारती, प्रगति, नेहा पारीक, रेणु मुहणोत, अनिशा, सुनिता काजला, सुमन रैगर, भाविका जोशी, मुस्कान बानो, मीनाक्षी भंसाली, कोमल प्रजापत, कविता रैगर, धापूदेवी, दीपिका भाटी, मोनिका बुरड़क, वंदना, आशा, हर्षिता पारीक, अनोखा व टीना ने भाग लिया। आशु भाषण प्रतियोगिता में आकांक्षा शर्मा, राजुल, हर्षिता पारीक, वीनू, कोमल, अभिलाषा स्वामी, हेमपुष्पा चौधरी, साधना, कांता सोनी, आईना, खुशी, रश्मि, भावना, प्रेरणा, चंदन, तानिया खान, माया कंवर व अनोखा ने भाग लिया। इसी प्रकार पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में भाग लेने वाली छात्राओं में दिव्या भास्कर, प्राची सैन, अपर्णा, मिताली सोनी, ममता, तनुश्री, चंचल कंवर, हर्षिता सोनी, ललिता बिड़ियासर, मेघा वाधवानी, स्नेहा बोहरा, साना, निकिता प्रजापत, शालू प्रजापत, नाज बानो, कौशल्या सैनी, मंजू, चंदा, खुशी, स्नेहा सोनी, नजमा बानो व दिपाली शामिल रही। प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. मधुकर दाधीच, प्रेयस सोनी, देशना चरण, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, हर्षिता सेठी, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. मनीषा जैन व डॉ. मनीष भटनागर रहे।

वाद-विवाद, सामूहिक वेस्टर्न नृत्य, कविता, मेहंदी एवं अनुपयोगी सामग्री का उपयोग प्रतियोगिताओं का आयोजन

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत वाद-विवाद, सामूहिक वेस्टर्न नृत्य, कविता, मेहंदी एवं अनुपयोगी सामग्री का उपयोग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन 10 फरवरी को किया गया, जिनमें छात्राओं ने उत्सुकतापूर्वक हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों ने पक्ष और विपक्ष में विषय को प्रस्तुत किया। सामूहिक वेस्टर्न नृत्य में लगभग 40 प्रतिभागियों ने अपने-अपने समूह में हिस्सा लेकर प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कविता प्रतियोगिता में लगभग 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया और अलग-अलग मुद्दों पर कविता के माध्यम से भावों को प्रकट किया। अनुपयोगी सामग्री का उपयोग प्रतियोगिता में लगभग 10 प्रतिभागियों ने भाग लेकर विभिन्न चीजों का निर्माण किया। मेहंदी प्रतियोगिता में लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग लेकर हाथों पर कला को उभार कर रंग प्रदान किया।

इन सभी प्रतियोगिताओं के लिए निर्णायक मोबिन आगवान, डॉ. श्रद्धा सिन्हा, दशरथ सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, डॉ. गरिमा, डॉ. सरोज राय, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. प्रगति भटनागर, खुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा व महिमा जैन रहे। प्रारम्भ में डॉ. अमिता जैन एवं सुश्री श्वेता खटेड़ ने निर्णायकों का स्वागत एवं परिचय करवाया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. विनोद कस्वा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन चिंकी एवं कोमल प्रजापत ने किया। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. लिपि जैन, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. प्रगति भटनागर, प्रमोद ओला, देशना चारण, प्रगति जैन, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा आदि संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सुख और दुःख के कारण रूप में मन के विचार निहित रहते हैं

आध्यात्मिक मनोविज्ञान विषय पर व्याख्यान आयोजित

शिक्षा विभाग में 3 फरवरी को 'आध्यात्मिक मनोविज्ञान' पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि लोग सुख पाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, लेकिन उनको सुख नहीं मिल पाता। व्यक्ति के सुखी नहीं बन पाने का कारण है कि संसार जैसा चल रहा है, वैसा मन नहीं बनाना चाहते, बल्कि हम अपने मनोनुकूल संस्कार को बनाना चाहते हैं और यह संभव नहीं हो पाता। मन को नहीं बदले बिना हम संसार के व्यक्तियों को अपने अनुसार पलटने की कोशिश करते हैं, इससे कभी-कभी निराशा, असंतोष, ग्लानि व हताशा मिलती है, जिससे हम विचलित हो जाते हैं या तनाव में आ जाते हैं। दुःखी होने की अपेक्षा अधिक मेहनत व प्रयास की जरूरत रहती है। अगर हम परस्पर दोष देखने की बजाय अच्छाई देखेंगे तो हमें दूसरों से भी अच्छा ही मिलेगा और सुख की अनुभूति होगी।

कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़ आदि एवं बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएँ आयोजित

बैडमिंटन में तनु यादव, ऊंची-कूद प्रतियोगिता में निशा, लंबी-कूद में अनीता तथा गोला फेंक में विद्या प्रथम रही

संस्थान में तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन 27 से 29 फरवरी को किया गया। प्रतियोगिताओं में बैडमिंटन में तनु यादव प्रथम स्थान पर रही। खो-खो के फाइनल मैच में शिक्षा विभाग की टीम प्रथम विजेता रही। 100 मीटर दौड़ में महिला वर्ग में भूमिका सेठी प्रथम तथा पुरुष वर्ग में कृष्ण जाखड़ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खो-खो खेल में शिक्षा विभाग की टीम द्वितीय को योग और जीवन विज्ञान विभाग की टीम ने पराजित किया और प्रथम स्थान बनाया। कबड्डी खेल में शिक्षा विभाग की टीम प्रथम तथा टीम द्वितीय के बीच हुए मुकाबले में टीम प्रथम विजेता रही। ऊंची-कूद प्रतियोगिता में निशा प्रथम स्थान पर रही। लंबी-कूद प्रतियोगिता में अनीता प्रथम रही तथा गोला फेंक में विद्या ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खेलों का आयोजन खेल कोच दशरथ सिंह के मार्गदर्शन में किया गया।

खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि प्रतियोगिताओं के शुभारम्भ समारोह एवं समापन समारोह की अध्यक्षता आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन रहे। शुभारम्भ समारोह की विशिष्ट अतिथि प्रो. रेखा तिवारी रहीं।

अंत में खेल समन्वयक डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया। डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, खेल समन्वयक डॉ. रवीद्र सिंह राठौड, डॉ. अमिता जैन, डॉ. लिपि जैन, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. सरोज राय, डॉ. सुनीता इंदोरिया, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. विनोद कस्वा, प्रमोद ओला, अभिषेक चारण, कुशाल जांगिड़, अनूप कुमार, मधुकर दाधीच, स्नेहा शर्मा, घासी लाल शर्मा, देशना चारण आदि तीन दिवसीय प्रतियोगिताओं के दौरान उपस्थित रहे।

फिट इंडिया सप्ताह आयोजित

फिट इंडिया सप्ताह के अन्तर्गत सामूहिक योग एवं ध्यान के प्रयोगों का आयोजन

यूजीसी के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के निर्देशन में मनाए जा रहे सात दिवसीय फिट इंडिया सप्ताह के अन्तर्गत हर दिन एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। सप्ताह के दूसरे दिन 19 जनवरी को योग एवं ध्यान के विभिन्न प्रयोग करवाए गए। विद्यार्थियों को योग अभ्यास करवा कर डॉ. आभा सिंह ने छात्राओं को इसके महत्त्व और युवतियों में इसकी खास आवश्यकताओं को बताया। साथ ही योग मुद्राओं के अभ्यास को सम्पन्न कर इसे दैनिक जीवन मे अपनाने का संकल्प भी दिलाया गया। कार्यक्रम की अतिथि व मुख्य वक्ता डॉ. कृतिका व डॉ. नीलेश ने छात्राओं को प्राकृतिक रूप से शरीर को स्वस्थ रखने के गुर बताए। साथ ही खेलकूद, योग आदि द्वारा होने वाले मानसिक विकास तथा एकाग्रता बढाने के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने शुद्ध शाकाहारी भोजन के सेवन और संतुलित भोजन की बात पर जोर दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. जैन ने इस अवसर पर कहा कि शारीरिक क्रियाओं का

दैनिक जीवन में बहुत महत्त्व होता है। पढाई-लिखाई के साथ विद्यार्थी जीवन मे खेलकूद, योग आदि के प्रति जागरूक होने का संदेश दिया। अंत में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आभा सिंह, खुशाल जांगिड़ तथा स्नेहा शर्मा ने छात्राओ को आगामी दिन के खेल आदि कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक दिवसीय युवा अहिंसा-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा निम्बी जोधां स्थित टैगोर महाविद्यालय में 12 जनवरी को युवा दिवस पर एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। शिविर के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में व्याख्यान द्वारा अहिंसा की अवधारणा का सैद्धांतिक पक्ष युवाओं के सामने रखा गया और अहिंसा के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए योग एवं प्रेक्षाध्यान की पद्धति के माध्यम से अहिंसक बनने का संदेश दिया गया। इस एक दिवसीय शिविर में विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने युवा वर्ग के राष्ट्र-निर्माण में योगदान विषय पर व्याख्यान देते हुए युवाओं को राष्ट्र का भविष्य बताया। अहिंसा प्रशिक्षण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने बताया कि अहिंसा प्रशिक्षण वर्तमान परिवेश में व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हर प्रकार की समस्या के निराकरण हेतु महत्त्वपूर्ण आयाम है, जिसको सहज रूप से जीवन में अपनाया जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने किया। इस अवसर पर टैगोर महाविद्यालय के प्राचार्य बाबूलाल कंडावरिया, टैगोर उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य सूर्यप्रकाश, महाविद्यालय के एनसीसी प्रभारी रविंद्र सिंह जोधा तथा विभाग व महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संकाय-सवंर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान आयोजित कर जीवनोपयोगी तत्त्वों पर चर्चा की

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 'जीवन संवारने के साधक और बाधक तत्त्व' विषय पर 18 अप्रेल को आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. अमिता जैन ने जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों से निजात पाने के लिए कुछ साधक तत्त्वों की चर्चा करते हुए उत्साह, साहस, धैर्य, तत्त्वज्ञान, दृढ़ निश्चय को बताया और बाधक तत्त्वों में अत्याहार, अत्यधिक परिश्रम करना, अत्यधिक बोलना, नियमाग्रह, अनियमित जीवन शैली, मानसिक चंचलता आदि पर प्रकाश डाला और कहा कि अगर बाधक तत्त्वों से हम दूर रहें तो हम सुखानुभूति कर सकते हैं। अपने जीवन को संवारने में साधक तत्त्वों को अहमियत देनी चाहिए। साधक तत्त्वों को यदि अपनी अन्तःचेतना में परिलक्षित करते हैं तो हमारा जीवन सुख-समृद्धि की ओर प्रस्थान करता है। विषम परिस्थितियों से कभी घबराना नहीं चाहिए और उत्साह, साहस, धैर्य, आत्मविश्वास आदि रखते हुए जीवन जीना चाहिए।

उन्होंने इन तत्त्वों को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया। अन्त में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि इन साधक तत्त्वों को अपनाने से हम प्रगति की ओर उन्मुख होते हैं और जीवन को साकार रूप प्रदान कर सकते हैं। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़ आदि संकाय सदस्य एवं बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

डॉ. भाटी की पुस्तक 'अंतर्मन के दीप' राज्यपाल को भेंट

संस्थान के कार्यालय सहायक डॉ. वीरेन्द्र भाटी ने जयपुर के राजभवन में राज्यपाल कलराज मिश्र को अपनी नव-प्रकाशित पुस्तक 'अन्तर्मन के दीप' भेंट की। डा. भाटी ने मिश्र को बताया कि पुस्तक के 47 अध्यायों में अनैतिकता की धुंध, संयम है समाधान, सोशल मीडिया की बढती लत आदि एवं धर्म-संस्कृति, अध्यात्म व सम-सामयिक विषयों को समाहित किया गया है। राज्यपाल ने इसे उपयोगी बताया। इस अवसर पर साहित्यकार डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार भी उपस्थित रहे। गौरतलब है कि डॉ. भाटी पूर्व में लिखित शोध-परक पुस्तक 'घरेलू हिंसा' का प्रकाशन जैन विश्वभारती संस्थान ने किया था, जिसे भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

एनसीसी

एनसीसी कैडेट्स को दिए 'बी' सर्टिफिकेट्स

संस्थान में संचालित एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन की 15 कैडेट्स को उनके सफल प्रशिक्षण व परीक्षण के पश्चात् 9 अप्रेल को उन्हें 'बी' सर्टिफिकेट्स प्रदान किए गए। ये सभी प्रमाण पत्र उन्हें 3 राज बटालियन, जोधपुर के सुबेदार मेजर धर्मपाल सिंह ने प्रदान किए। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि एनसीसी कैडेट्स अनुशासित, चरित्रवान होने के साथ ही सहयोग व साहस की भावना से युक्त होते हैं। कैडेट्स को अपने जीवन में भी एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में समुदाय की सेवा के लिए तत्पर व समर्पित रहना चाहिए। सूबेदार मेजर धर्मपाल सिंह ने सभी कैडेट्स को ए, बी, सी सर्टिफिकेट्स के लिए होने वाले एक्जाम और सर्टिफिकेट के महत्त्व के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने उनका स्वागत-सम्मान किया।

एनसीसी कैडेट्स छात्राओं को मिले सफल प्रशिक्षण सर्टिफिकेट्स

संस्थान में संचालित एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन के अन्तर्गत कैडेट को प्रशिक्षणोपरांत 15 मई को 9 कैडेट्स को 'सी' प्रमाण पत्र तथा शेष को 'सी' प्रमाण पत्र दिए गए। इन सर्टिफिकेटस में एनसीसी की 5 कैडेट्स को 'ए' ग्रेड मिली है और शेष 4 कैडेट्स को 'बी' ग्रेड प्राप्त हुई है। 3 राज गर्ल्स बटालियन के हवलदार संदीप कुमार एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने सफल कैडेट्स को इन प्रमाण पत्रों का वितरण किया। इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने एनसीसी के प्रशिक्षण को जीवनपर्यन्त काम आने वाला बताया तथा कहा कि अनुशासन, चरित्र, साहस व सहयोग की भावना एनसीसी के प्रशिक्षण में कैडेट्स में आती है। अंत में एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डा. आयुषी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

नई शिक्षा नीति जागरूकता क्विज प्रतियोगिता में 6 छात्राओं ने किया टॉप

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार जैन विश्वभारती संस्थान में नई शिक्षा नीति एनईपी- 2020 जागरूकता क्विज प्रतियोगिता का आयोजन 13 फरवरी को किया गया। ऑनलाइन मोड में हुई, इस प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। क्विज के परिणाम घोषित करते हुए प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने यूजीसी द्वारा निर्धारित एनईपी-2020 जागरूकता कैलेंडर के अनुसार यहां आयोजित की जा रही सभी प्रतियोगिताओं को ज्ञानवर्धक होने के साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भी सहायक बताया। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि क्विज प्रतियोगिता में कुल 127 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से लक्ष्मी कंवर, ज्योति पारीक, ललित गोस्वामी, स्नेहा बोहरा, योगिता जांगिड़ व ईशा प्रजापति ये 6 छात्राएं शत-प्रतिशत अंक प्राप्त कर टॉपर रहीं। 95 से 80 प्रतिशत अंक हासिल करने वाले 21 विद्यार्थी रहे। 80 से 60 प्रतिशत अंक वाले 35 विद्यार्थी और न्यूनतम अंक 60 प्रतिशत लाने वाले 65 विद्यार्थी रहे। कार्यक्रम की संयोजिका व एनईपी सारथी खुशी जोधा ने कहा कि इस क्विज प्रतियोगिता का उद्देश्य एनईपी 2020 के विभिन्न प्रावधानों से विद्यार्थियों को अवगत करवाना है। खुशी ने बताया कि इस क्विज के माध्यम से छात्राओं को एनईपी 2020 से संबंधित प्रश्न पूछे गए। एनईपी 2020 जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा संस्थान में विद्यार्थियों को 5334 के पैटर्न, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) व एनईपी 2020 के अन्य प्रावधानों के बारे में जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की गतिविधियाँ

एन.एस.एस. की स्वयंसेविका खुशी जोधा का युवा संसद के लिए राज्य स्तर पर चयन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की स्वयंसेविका खुशी जोधा का 'युवा संसद-2024 प्रतियोगिता' के लिए 19 फरवरी को राज्य स्तर पर चयन किया गया है। प्रभारी डा. बलबीर सिंह ने बताया कि इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए प्रदेश भर से कुल 32 प्रतिभागी चयनित किए गए। सभी जिलों से 2-2 विद्यार्थियों का चयन किया जाना था, जिनमें से नागौर जिले से चयनित दो विद्यार्थियों में जैन विश्वभारती संस्थान की यह छात्रा सम्मिलित है। दूसरी छात्रा कुचामन महाविद्यालय की है। गौरतलब है कि जैन विश्वभारती संस्थान की छात्रा स्मृति कुमारी इससे पूर्व नई दिल्ली में भारतीय संसद में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए सम्बोधित करके अपने विचारों की अभिव्यक्ति दे चुकी है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में द्वितीय एकदिवसीय शिविर का आयोजन 7 फरवरी को किया गया। शिविर में व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में आयोजित व्याख्यान में प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र कुमार जैन ने राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवाओं को समाज सेवा करने के लिए प्रेरित किया और बताया कि युवाओं का समाज सेवा में योगदान देना एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है, जिसका हमें ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिए। द्वितीय सत्र में स्वयंसेविकाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रतिभा व कौशल का परिचय दिया गया।

एन.एस.एस. छात्रा मीरा बेंदा ने राष्ट्रीय एकता शिविर में किया योग का प्रदर्शन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका ने सीकर में 1 से 7 मार्च तक आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में देश भर के चुनिन्दा एन.एस.एस. प्रतिनिधियों के साथ हिस्सा लिया।

भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय तथा क्षेत्रीय निदेशालय राष्ट्रीय सेवा योजना, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सीकर के विश्व भारती पीजी कॉलेज में आयोजित इस सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर में संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए योग व जीवन विज्ञान विभाग की स्नातकोत्तर छात्रा एवं स्वयंसेविका मीरा बेंदा ने अपनी योग गतिविधियों का प्रदर्शन करके सभी का मन मोहा। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि इस शिविर में संपूर्ण देश भर से 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

सातदिवसीय शिविर में अलग-अलग संस्कृतियों का प्रदर्शन हुआ और प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दी, जिनमें संस्थान की छात्रा मीरा बेन्दा अपनी योग-गतिविधियों को प्रदर्शित किया। योग की उसकी प्रस्तुति को देखकर सभी अतिथिगण ही नहीं, बल्कि सारे प्रतिभागी भी प्रभावित हुए।

'मेरा प्रथम वोट- मेरा देश' अभियान के तहत एन.एस.एस. स्वयंसेविकाओं ने ली शपथ

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 मार्च को 'मेरा प्रथम वोट- मेरा देश' अभियान के तहत कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन द्वारा सभी स्वयंसेविकाओं को शपथ दिलवाई गई। इस अवसर पर प्रो. जैन ने मतदान का महत्त्व समझाया और बताया कि देश को प्रगति पथ पर आगे ले जाने के लिए जनप्रतिनिधि के रूप में हमेशा ईमानदार, अहिंसक, समर्पित व राष्ट्रभावना का ही चुनाव करना चाहिए। उन्होंने एक-एक वोट की कीमत बताते हुए लोकतंत्र के लिए उसके महत्त्व पर प्रकाश डाला। प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. आभासिह व द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह उपस्थित रहे। इस शपथ ग्रहण कार्यक्रम में एन.एस.एस. स्वयंसेविकाओं के साथ बीएड की छात्राध्यापिकाएं भी उपस्थित रहीं। साथ ही शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभासिंह, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा आदि भी उपस्थित रहे।

स्वच्छता एवं मतदान जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 30 मार्च को स्वच्छता जागरूकता व मतदान जागरूकता के लिए सफाई अभियान तथा व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वच्छता जागरूकता अभियान के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने छठी पट्टी तथा उसके आसपास के क्षेत्र में सफाई की और श्रमदान के महत्त्व को उजागर किया। इसके अलावा मतदाताओं में जागरूकता बढ़ाने के लिए आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम के तहत कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने मतदान की प्रक्रिया को लोकतंत्र का प्राण बताते हुए कहा कि मतदाताओं में जागरूकता आने पर ही मतदान प्रतिशत बढ़ाया जाना संभव हो सकता है। लोकतंत्र में मतदान प्रत्येक मतदाता का अधिकार ही नहीं, यह प्रमुख दायित्व भी है। कार्यक्रम का संचालन इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने किया और अंत में इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

सप्तदिवसीय शिविर में रैली निकाली, श्रमदान कर दिया स्वच्छता का संदेश

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में 23 जनवरी से प्रारम्भ किए गए सातदिवसीय विशेष शिविर के के तहत 24 जनवरी को विकसित भारत संकल्प रैली का आयोजन किया गया तथा शिविर के तीसरे दिन 25 जनवरी को गोद लिए गए गांव भियानी तथा खानपुर में सार्वजनिक तालाब के नजदीक साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। सफाई अभियान के दौरान स्वयंसेविकाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया और सफाई करके ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक व इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह व राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह उपस्थित रहे।

स्वयंसेविकाओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन कार्यक्रम 29 जनवरी सोमवार को आयोजित किया गया। समापन समारोह की मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा तिवारी थीं। उन्होंने बताया कि युवाओं में राष्ट्र सेवा की भावना का जागरण आवश्यक है। राष्ट्र सेवा के लिए किए गए हमारे प्रत्येक कार्य का प्रतिफल हमें अवश्य मिलता है। उन्होंने स्वयंसेविकाओं से कहा कि हमेशा राष्ट्रहित की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए और अपने दायित्व का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए। शिविर के दौरान की गई विभिन्न गतिविधियों के बारे में स्वयंसेविका नजमा बानो ने समारोह में अपने अनुभव साझा किये और शिविर को व्यक्तित्व विकास एवं राष्ट्रीय सेवा की भावना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण बताया। समापन कार्यक्रम में ऐश्वर्या सोनी, मोनिका, तनु यादव, पायल मीणा, कृष्णा जेतमाल आदि स्वयंसेविकाओं ने अपनी रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी। एनएसएस इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने शिविर के 7 दिनों में आयोजित विभिन्न गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेविका खुशी जोधा ने किया।

एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने पेड़ों पर लटकाए मिट्टी के परिंडे

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेविकाओं ने भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए पक्षियों को पानी पीने के लिए 10 मई को विभिन्न पेड़ों पर मिट्टी के बर्तन लटकाए तथा उन परिंडों में राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने प्रतिदिन नियमित पानी भरने का संकल्प लिया, ताकि गर्मियों में पक्षियों को पानी के लिए बिलखना नहीं पड़े और पेड़ पर अपने पास ही छाया में पानी मिल सके। इस अवसर पर एनएसएस संयोजिका डा. आभा सिंह ने स्वयंसेविकाओं को पक्षियों, पेड़-पौधों, जानवरों को गर्मी में संरक्षण दिया जाने की आवश्यकता बताई तथा उनके लिए किए जा सकने वाले उपायों की जानकारी भी प्रदान की। एनएसएस की द्वितीय इकाई के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने स्वयंसेविकाओं को अपने घर के आस-पास भी पशुओं एवं पक्षियों हेतु पानी एवं छायादार जगह की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित किया।

एन.एस.एस. का तृतीय एक दिवसीय शिविर आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में तृतीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन 7 मार्च को किया गया। शिविर में मुख्य वक्ता वित्ताधिकारी आर.के. जैन ने राष्ट्रीय सेवा योजना को युवा वर्ग में समाज सेवा तथा समाज में जागरूकता व चेतना लाने के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने युवा वर्ग में उभरते असंतोष को राष्ट्र विकास में बाधक माना और कहा कि प्रत्येक युवा को अपने जीवन में लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए और किसी ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व को अपना आदर्श मानकर अपने जीवन के विकास का प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने पहली बार मतदान का प्रयोग करने वाले युवाओं को मतदान प्रक्रिया के बारे में बताया और निष्पक्ष एवं निर्भय होकर मतदान करने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक तथा इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में दोनों इकाइयों के स्वयंसेविकाएं व स्वयंसेवक उपस्थित रहे। शिविर के प्रथम सत्र में श्रमदान किया गया तथा तृतीय सत्र में स्वयंसेविकाओं ने दैनिक जीवन में तकनीकी प्रयोग विषय पर आपस में समूह चर्चा की।

पर्व/जयंती/दिवस विशेष

संस्थान में देश के हर पर्व, महापुरुषों की जयंतियों, पुण्यतिथियों, राष्ट्रीय पर्वों, विशेष दिवसों और केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा घोषित विशेष अवसरों पर कार्यक्रमों और समारोहों का आयोजन किया जाता है। पर्वों-त्यौंहारों को परम्परागत ढंग से भी मनाया जाता है। इन अवसरों पर संस्थान के हर विभाग द्वारा शानदार आयोजन किए जाते हैं। इससे विद्यार्थियों को देश की संस्कृति, परम्पराओं, महापुरुषों एवं राष्ट्रीय गौरव के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती है। इन पर्वों-उत्सवों-कार्यक्रमों के आयोजन के संदर्भ में कुछ चयनित जानकारियां प्रस्तुत हैं-

महावीर जयंती समारोह

आंतरिक कषायों को जीतना ही वास्तविक वीरता- प्रो. शास्त्री

भगवान महावीर जयंती समारोह का आयोजन

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग तथा प्राकृत व संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 20 अप्रेल को भगवान महावीर जयंती समारोह आयोजित किया गया। समारोह के प्रथम चरण में विद्यार्थियों ने अपने पत्रों का वाचन प्रस्तुत किया और दूसरे चरण में विभिन्न विभागों के शिक्षकों ने भगवान महावीर के विभिन्न आयामों पर विचार व्यक्त किए। समारोह के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की और द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. दामोदर शास्त्री ने की। प्रो. त्रिपाठी ने भगवान महावीर के जीवन की घटनाओं के बारे में विवरण प्रस्तुत करते हुए उनके बाल्यकाल से ही सिद्धांत प्रियता के बारे में बताया तथा उनके विचारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पुरूषार्थ के बल पर स्वयं को उन्नत बनाया जा सकता है। प्रो. शास्त्री ने महावीर शब्द की सार्थकता बताते हुए आंतरिक कषायों को जीतने को ही वीरता बताया तथा कहा कि आधि-व्याधि एवं रोग-क्लेश से मुक्ति पाने के लिए आंतरिक दुश्मनों का शमन करने की आवश्यकता है। प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने भगवान महावीर के तीन अकार-अहिंसा, अनेकांत व अपरिग्रह के बारे में बताते हुए उन्हें समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि जीवन में इन तीनों को अंगीकार करने से जीवन धन्य हो सकता है।

अहिंसा व अनेकांत से संभव है समस्याओं का समाधान

प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने अहिंसा व अनेकांत को व्यावहारिक जीवन में उतारे जाने के सम्बंध में सुझाव दिए तथा परमाणु, पर्यावरण व तकनीक के सम्बंध में बढते खतरों से आगाह करते हुए उनमें अहिंसा व अनेकांत से समाधान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि समझ के विकसित होने पर ही अहिंसा का उपयोग संभव होता है। उन्होंने महावीर को समझने के लिए स्वतंत्र चिंतन व स्वतंत्र निर्णय की आवश्यकता बताई। समारोह में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. हेमलता जोशी, श्वेता खटेड़ आदि ने आगमों के सम्पादन, महावीर की साधना के विभिन्न पहलुओं, महावीर के अर्थशास्त्र आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। विद्यार्थियों में मुमुक्षु चंदना, मुमुक्षु साधना, मुमुक्षु रश्मि, आकर्ष जैन, माया कंवर, दीपांशी चितलांगिया, रमा कंवर, प्रिया शर्मा, रतन कंवर, कंचन, खुशी जोधा, कांता स्वामी आदि ने महावीर के विविध आयामों पर अपने-अपने पत्र-वाचन किए। प्रारम्भ में मीनाक्षी भंसाली व डा. मनीषा जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अंत में प्रो. जिनेन्द्र जैन व डा. सव्यसाची सारंगी ने आभार ज्ञापित किया। समारोह में रजिस्ट्रार अजयपाल कौशिक, डा. लिपि जैन, डा. विनोद कस्वा, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, दीपाराम खोजा, डा. गिरीराज भोजक, डा. मनीष भटनागर, डा. प्रगति भटनागर, डा. अशोक भास्कर, डा. सुनीता इंदौरिया, डा. आयुषी शर्मा, डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल, जगदीश यायावर आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज व डा. मनीषा जैन ने किया।

पर्यटन दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

शिक्षा विभाग में 25 जनवरी को आयोजित पर्यटन दिवस पर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने भारत को विविधताओं का देश बताते हुए भारतीय संस्कृति की जानकारी का विविध पर्यटन स्थलों पर जाने से मिलना बताया। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों के अलावा सभी छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित कर किया याद

संस्थान के शिक्षा विभाग में तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य एवं महान दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण दिवस पर 4 मई को कार्यक्रम आयोजित किया जाकर उनके जीवन व कृतित्व को याद किया गया एवं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के बताये मार्ग पर चलने की आवश्यकता बताई। उन्होंने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ का दर्शन पांच सूत्रों को अपनाने पर विशेष बल देता है, जिनमें सहन करने, श्रम करने, सेवा करने, संयम करने व स्वस्थ रहने को महत्त्व दिया गया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने गुरु के द्वारा उलाहना देने पर भी उनके प्रति प्रतिक्रिया कभी नहीं की, अपितु उन्हें सहन किया, प्रतिक्रियाविरति का भाव रखा। विषम परिस्थितियों को सहन करने पर ही अपने जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।

आगम सम्पादन से लेकर समस्त साहित्य रचना श्रमसाध्य

प्रो. जैन ने श्रम का महत्त्व बताते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने श्रम के बल पर ही आगम संपादन, आगम भाष्य, काव्य साहित्य, दार्शनिक साहित्य आदि लिखे हैं। यह उनकी श्रमसाध्यता की पहचान थी। जीवन में हमेशा अथक परिश्रम करने पर ही सफलता कदम चूमती है। श्रम के अलावा सेवा का महत्त्व भी रहता है। गुरु की सेवा, बुजुर्गों की सेवा, बालकों की सेवा, रोगी की सेवा, बड़ों की सेवा, धर्म संघ की सेवा, समाज की सेवा, परिवार की सेवा, राष्ट्र की सेवा, माता-पिता की सेवा, जरूरतमंदों की सेवा, समस्याओं को सुलझाने की सेवा, प्रेक्षा, ध्यान, जीवन विज्ञान जैसे विषयों से जन-जन की सेवा महत्त्वपूर्ण रही है।

संयम की प्रतिमूर्ति थे आचार्य महाप्रज्ञ

प्रो. जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व की विशेषताएं बताते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ स्वयं संयम की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने सबके लिए जीवन में संयम को महत्त्वपूर्ण बताया तथा परिग्रह छोड़ने के साथ ही आहार-संयम, वाणी-संयम, काय-संयम, आवेग-संवेग में संयम, वस्तु संग्रह में संयम बरतने एवं संयम से जीवन जीने वाले व्यक्ति ही अहिंसा और शांतिमय होते हैं, की प्रेरणा दी थी। इसी तरह शरीर से स्वस्थ, मन से स्वस्थ, भाव से स्वस्थ रहने को आवश्यक बताते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने बताया था कि जैसा भाव वैसा मन, और जैसा मन वैसा शरीर बन जाता है। मन को स्वस्थ रखने के लिए सकारात्मक विचारों को अपनाना चाहिए। योगा, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन पद्धति को अपनाने पर बल देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था कि शरीर से स्वस्थ रहने के लिए सीमित और सात्विक भोजन करना चाहिए। सुबह का भ्रमण, आसन, प्राणायाम, ध्यान, गहरी व नियमित निद्रा आदि शरीर को स्वस्थ रखने में महत्त्व योगदान प्रदान करती है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़, प्रमोद ओला, स्नेहा शर्मा आदि उपस्थित रहे।

अम्बेडकर जयंती : सामुहिक भोज का आयोजन तथा व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का स्मरण

संस्थान के शिक्षा विभाग में अम्बेडकर जयंती पर 13 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम में उनके जीवन व कार्यों को याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर सभी प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा पंथ या जाति के भेद के बिना सामूहिक भोज का आयोजन किया तथा अम्बेडकर के सामाजिक समरसता की भावना का सन्देश प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरीराज भोजक ने अम्बेडकर के जीवन, कार्यों व विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने प्रारम्भ में कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में छात्राओं कंचन, ज्योति बुरडक, मोनिका बुरडक, प्रीती सैनी एवं प्रकृति ने कविता एवं भाषण द्वारा डॉ. आंबेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संयोजन एवं आभार ज्ञापन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया। कार्यक्रम में संकाय सदस्य डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, प्रमोद ओला, स्नेहा शर्मा, खुशाल जांगिड़, दीपक माथुर एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉ. अम्बेडकर को किया याद

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 15 अप्रेल को डॉ. अम्बेडकर जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने डॉ. अम्बेडकर को 'हर व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है' की मिसाल बताया और उनके जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में छात्रा कान्ता सोनी ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, सुश्री श्वेता खटेड़, अनूप कुमार, मधुकर दाधीच, घासीलाल शर्मा, देशना चारण आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन अभिषेक चारण द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

गणतंत्र दिवस समारोह पूर्वक मनाया

विकसित भारत बनाने के लिए सभी का योगदान आवश्यक- कुलपति प्रो. दूगड़

गणतंत्र दिवस पर 26 जनवरी को संस्थान में एनसीसी की परेड, झंडारोहण, ध्वज-सलामी आदि कार्यक्रमों के साथ उत्सव मनाया गया। गणतंत्र दिवस समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में भगवान राम के समय व लंका युद्ध को याद करते हुए कहा कि भारत में कभी किसी देश-क्षेत्र को अपने अधीन करने, अपने में मिलाने या वर्चस्व कायम करने की नीति नहीं रही। इसी कारण हम विश्वगुरू कहलाते हैं। भारत की एफडीसी 750 करोड़ ओड बिलियन डॉलर की है। भारत का विकास हुआ है। जीडीपी साढे तीन ट्रिलीयन डॉलर हो चुकी है। भारत विश्व के 10 देशों में शुमार हो चुका है और शीघ्र ही विश्व के 5 विकसित देशों में शामिल होने जा रहा है। जल्दी ही जर्मनी को पछाड़ कर भारत तीसरा देश बन जाएगा। विकसित भारत के गौरव की प्राप्ति के लिए देश के वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, वित्तीय व्यवसायी, उद्योगपति, शिक्षक आदि सभी अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

उन्होंने भारत को विश्व का सबसे युवा देश बताते हुए सभी से अपने जीवन, अपने समाज, संस्थान और देश का विकास करने व विशिष्ट बनाने के लिए जुट जाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलपति ने झंडा फहराया। एनसीसी की गर्ल्स बटालियन ने परेड के साथ सलामी दी। भाविका जोशी, सुनीता काजला व अभिलाषा ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। समारोह में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ व धर्मचंद लूंकड़ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में 7 मार्च को कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रो. त्रिपाठी ने भारतीय संस्कृति में महिलाओं को वंदनीय बताया तथा माता कौशल्या, यशोदा मैया से लेकर गार्गी, मैत्रेयी, अनुसूया, विद्यावती, महारानी लक्ष्मीबाई, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैत्रेयी पुष्पा, मेहरुन्निसा परवेज, ममता कालिया, मृणाल पांडे, बछेंद्री पाल, लता मंगेशकर, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, सुषमा स्वराज, सरोजिनी नायडू, सुचेता पलानी, द्रोपदी मुर्मू आदि के रूप में भारतीय संस्कृति की सच्ची संवाहक महिलाओं को बताया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्वेता खटेड़ एवं विशिष्ट अतिथि देशना चारण रहे। कार्यक्रम में ललिता जांगिड़, प्रकृति चौधरी, प्रियंका, सुनीता काजला, अभिलाषा स्वामी आदि छात्राओं ने भी महिला दिवस पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

वसंत पंचमी पर गीत-संगीत की सुमधुर प्रस्तुतियों से रिझाया मां शारदे को

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, शिक्षा विभाग तथा प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में मां सरस्वती के प्राकट्य दिवस वसंत पंचमी 14 फरवरी को बसंतोत्सव के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में विभिन्न छात्रा समूहों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की सरस्वती वंदनाओं की प्रस्तुतियां देकर मां शारदा के गुणों को मुखरित किया गया। इन छात्रा समूहों में कान्ता सोनी एवं समूह, मीनाक्षी भंसाली एवं समूह, छात्रा ट्विंकल भंसाली एवं समूह, खुशबू सोनी एवं समूह द्वारा सरस्वती की सस्वर-आराधना की गई। सुनीता काजला व हेमपुष्पा चौधरी ने कविताएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर पुलवामा के शहीदों के लिए भी एक देशभक्ति गीत प्रस्तुत करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. रेखा तिवाड़ी थी और अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अनूप कुमार ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया

शिक्षा विभाग में 10 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने हिंदी को हिंदुस्तान की पहचान और गौरव बताया। हिंदी दिवस प्रभारी डॉ. सरोज राय ने विश्व हिंदी दिवस को मनाने का उद्देश्य बताया। सरस्वती को माल्यार्पण कर एवं सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर समस्त छात्राध्यापिकाएं एवं संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

मकर संक्रांति पर्व पर कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षा विभाग में 15 जनवरी को आयोजित मकर संक्रांति कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि पर्व मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण गति शुरू करने पर दिन बड़े होने के प्रारम्भ के साथ इस अवसर पर किए जाने वाले दान आदि का महत्त्व बताया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

सामुहिक गान के साथ मनाया रामनवमी पर्व

शिक्षा विभाग में रामनवमी पर्व पर 16 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने मिल कर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के साथ 'मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जायेंगे राम आयेंगे.....' भजन का सामूहिक रूप से गान किया और प्रभु श्रीराम को याद किया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की छात्रा कंचन ने भी भगवान राम का भजन प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

हनुमान जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

शिक्षा विभाग में 3 अप्रेल को हनुमान जयंती पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने सामुहिक हनुमान चालीसा का पाठ किया और भगवान हनुमान को याद किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने की। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़ एवं शिक्षा विभाग की बी.ए.-बी.एड एवं बी. एससी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

भारतीय नववर्ष व नवरात्रा प्रारम्भ पर कार्यक्रम आयोजित

शिक्षा विभाग में 9 अप्रेल को भारतीय नववर्ष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने चैत्र प्रतिपदा से प्रारम्भ भारतीय नववर्ष व नवरात्रा की विशेषताएं बताई। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड़, डॉ. आभा सिह, प्रमोद ओला, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि के साथ शिक्षा विभाग की बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी. एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

मासिक व्याख्यानमाला में 'ग्लोबल वार्मिंग का विश्व पर प्रभाव' विषय पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में 18 मार्च को कला संकाय सदस्य अनूप कुमार ने 'ग्लोबल वार्मिंग का विश्व पर प्रभाव' विषय पर अपने व्याख्यान में भूमंडलीय तापमान का वैश्विक प्रभाव बताते हुए इसे 21वीं शताब्दी का सबसे ज्वलंत मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक मानव का प्रकृति से गहरा नाता रहा है, लेकिन समय के साथ-साथ विकास मार्ग पर बढ़ता हुआ मानव औद्योगीकरण की चकाचौंध में विश्व का औसत तापमान विगत कई वर्षों से बढ़ा रहा है। अतः भूमंडलीय तापमान को बढ़ने से रोकने एवं पृथ्वी को फिर से बेहतर बनाने के लिए अविलम्ब रूप से आवश्यक एवं अपरिहार्य कदम उठाए जाने चाहिए, ताकि वर्तमान के साथ-साथ भविष्य को संतुलित एवं बेहतर बनाया जा सके।

उन्होंने भूमंडलीय तापमान की बढ़ोतरी से सागर तल में आये परिवर्तनों को रामसेतु, द्वारका नगरी आदि के उदाहरणों से समझाया और भूमंडलीय तापमान का अर्थ, उद्देश्य एवं प्रभावों की विस्तृत विवेचना की। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता करते हुए विषय की गंभीरता बताते हुए भूमंडलीय तापमान को वैश्विक समस्या माना और इस बारे में सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों एवं ओजोन परत में हुए नुकसान की विस्तृत जानकारी व्याख्यानकर्ता अनूप कुमार से ली। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, सुश्री श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, आयुषी शर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रेयस सोनी ने किया और अंत में हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया गया।

'राष्ट्रीय भावबोध का अर्थ एवं महत्त्व' विषय पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अंतर्गत आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में 30 अप्रेल को को 'राष्ट्रीय भावबोध का अर्थ एवं महत्त्व' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुए इस व्याख्यान में हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने राष्ट्रीय भावबोध का अर्थ एवं महत्त्व बताया। उन्होंने विभिन्न साहित्यकारों कर उल्लेख करते हुए उनकी कृतियों में आई राष्ट्रीयता की भावना की जानकारी दी। उन्होंने वर्तमान में संस्कारों की क्षीण होती धारा के बीच नई पीढ़ी को नए सिरे से राष्ट्रीयता के भावबोध को समझने की आवश्यकता बताई। अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने राष्ट्रीयता की भावाभिव्यक्ति को आदर्श नागरिक निर्माण का पाथेय बतलाया। कार्यक्रम का संचालन श्वेता खटेड़ ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन मधुकर दाधीच ने किया। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. जे.पी. सिंह, प्रगति चौरडिया, डॉ. आयुषी शर्मा, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे

मतदान जागरूकता कार्यक्रम

मतदान जागरूकता सम्बंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने लिया हिस्सा
'मेरा पहला वोट देश के लिए' अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित

शिक्षा मंत्रालय (एमओई) द्वारा आयोजित 'मेरा पहला वोट देश के लिए' अभियान के अंतर्गत संस्थान में मतदान जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका व एनईपी सारथी खुशी जोधा ने बताया कि विद्यार्थियों को अभियान में शामिल होने और शिक्षित मतदाता बनने के लिए प्रेरित करने हेतु मतदान से संबंधित आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। खुशी जोधा ने 'माय जीओवी पोर्टल' पर होने वाली विभिन्न गतिविधियों प्रतिज्ञा लेना, क्विज प्रतियोगिता, रील मेकिंग प्रतियोगिता, राष्ट्रगान गीत का अभिनव तरीके से उपयोग करना आदि गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में छात्राओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए शपथ भी दिलवाई गई।

निबंध प्रतियोगिता में आशना, स्लोगन में ललिता, वीडियो मेकिंग में कांता, पोस्टर में सना प्रथम रही

इस अवसर पर प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को मतदान के लिए प्रेरित किया और जिनके वोटर कार्ड नहीं बने हैं, उन विद्यार्थियों को अपना कार्ड बनवाकर मत का प्रयोग करने की राय दी। प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुए उन्होंने बताया कि निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आशना, द्वितीय पर सल्लू व तृतीय स्थान पर सिमरन रही। स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ललिता बिडियासर, मेघा वाधवानी द्वितीय स्थान व प्रियंका सोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वीडियो मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कान्ता सोनी, नजमा द्वितीय व आइना तृतीय स्थान पर रही। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सना, द्वितीय स्थान पर ललिता बिडियासर व तृतीय स्थान पर निकिता रही। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि संकाय सदस्यों व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

छात्राओं ने ली जागरूक मतदाता बनने की शपथ

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 5 मार्च को छात्राओं को मतदान के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें शपथ दिलवाई गई। इस अवसर पर संकाय सदस्यों सहित प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने समस्त छात्राओं को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए जागरूक मतदाता के रूप में सक्रिय भागीदारी निभाने एवं एक सच्चे कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में अपनी भागीदारी निभाने की शपथ दिलाई। इस शपथ कार्यक्रम में छात्राओं ने नए भारत के निर्माण में अपने योगदान के रूप में वोट देने के अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करने की प्रतिज्ञा की, साथ ही सुनिश्चित करवाया गया कि प्रत्येक छात्रा अपना बहुमूल्य वोट देश के विकास एवं उसकी बेहतरी व मजबूती के लिए करेगी। इस दौरान छात्राओं ने अपने साथियों को भी लोकतंत्र के इस गणतंत्रात्मक महापर्व में अपने वोट के अधिकार के प्रति प्रोत्साहित करने की भी जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम में संकाय सदस्य प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा, देशना चारण आदि मौजूद रहे।

मतदान जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम के अंतर्गत 25 जनवरी को नजदीक के ग्राम भियाणी में मतदान दिवस के अवसर पर मतदाता जागरूकता प्रशिक्षण सेवा शिविर का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ तथा सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने भियाणी के ग्रामीणों को मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, मताधिकार का प्रयोग करने और निष्पक्ष व निडर होकर मतदान करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम

में विभाग की छात्राएं सिमरन बानो, हारूनिशा, कोमल जांगिड़, अनोखा, किरण रेगर, मुस्कान बानो आदि ने भाग लिया। संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी मतदान जागरूकता को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	डॉ. अजयपाल कौशिक
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. अजयपाल कौशिक
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. दामोदर शास्त्री
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं अजयपाल कौशिक एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

डॉ. अजयपाल कौशिक
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

प्राकृत भाषा व साहित्य पर व्याख्यानमाला

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषय के अन्तर्गत एक मासिक व्याख्यानमाला का संचालनअनवरत किया जा रहा है। इस व्याख्यानमाला में प्रत्येक महीने एक उप विषय प्रदेश के ख्यातनाम विद्वान का व्याख्यान होता है। अब तक कुल 36 व्याख्यानों का आयोजन हो चुका है। जनवरी से जून 2024 की अवधि में हुए व्याख्यानों का विवरण इस प्रकार है-

पाण्डुलिपियों के संरक्षण, सम्पादन आदि से भारतीय ज्ञान परम्परा अक्षुण्ण रही- डॉ. धर्मेन्द्र जैन

प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर आयोजित की जा रही मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 27 जनवरी को '20-21 शताब्दी की प्रमुख पाण्डुलिपियों के सम्पादन में मनीषियों के योगदान' विषयक 31वें विशेष व्याख्यान में आधुनिक विद्वानों के महनीय योगदान पर विशेष प्रकाश डाला गया। यह व्याख्यान केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जयपुर परिसर के प्राकृत अध्ययन एवं शोध-परियोजना में विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत डॉ. धर्मेन्द्र जैन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, भारतीय संस्कृति को स्थायित्व देने में पाण्डुलिपियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पाण्डुलिपियां भारत की सांस्कृतिक धरोहर है। इन पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने में अनेक ग्रंथ-भण्डारों ने अपना योगदान दिया और इन्हें समाज के सामने लाने में अनेक विद्वानों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्होंने पाण्डुलिपियों का सम्पादन-अनुवाद करके जनसुलभ बनाया है। उन्होंने मुनि पुण्यविजयजी, प्रो. राजाराम जैन, प्रो. हीरालाल शास्त्री, प्रो. एस. बी. भायाणी, ए.एन. उपाध्ये, दलसुख भाई मालवणिया, नथमल टांटिया, आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ ही अनेक साधु-साध्वियों एवं श्रमणियों का योगदान बताया और प्रो. प्रेमसुमन जैन का पाण्डुलिपि सम्पादन के क्षेत्र में दिय गये अवदानों एवं जैन विश्वभारती संस्थान के प्रो. दामोदर शास्त्री व प्रो. जिनेन्द्र जैन का उल्लेख भी किया।

उन्होंने बताया कि इन सभी विद्वानों ने आर्युवेद, आगम, दर्शन, कथा साहित्य, महाकाव्य आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों का सम्पादन व अनुवाद कर भारतीय विद्याओं एवं ज्ञान-परम्परा को जीवित रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

इस अवसर पर प्रो. जयकुमार जैन ने उन सभी विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने पाण्डुलिपियों के सम्पादन-अनुवाद में विशेष योगदान दिया।

प्रो. दामोदर शास्त्री ने इस अवसर पर साधु, विद्वान और श्रेष्ठी रूप त्रिरत्न का उल्लेख करते हुए तीनों के योगदान पर विशेष प्रकाश डाला। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने पाण्डुलिपियों के संपादन की दुरुहता का उल्लेख किया और कहा कि पाण्डुलिपियों के चयन, ग्रंथ भण्डारों से उन्हें प्राप्त करना और फिर उन पाण्डुलिपियों के सम्पादन में विषय, भाषा एवं परम्परा का ध्यान रखते हुए उनका सम्पादन करना दुरूह कार्य है। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत अध्ययन के विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राचीन काव्य-ग्रन्थों में प्राकृत भाषा की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण- डॉ. रामदेव साहू

मासिक व्याख्यानमाला के 32वं व्याख्यान में 24 फरवरी को जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के जैन विद्या व तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के सह आचार्य डॉ. रामदेव साहू ने कहा कि भारतीय साहित्य परम्परा में प्राकृत भाषा एवं साहित्य महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में प्राकृत भाषा का अत्यधिक प्रयोग हुए हैं। वेदों की भाषा भी संस्कृत व प्राकृत के सम्मिलित रूप को माना जाता है, जिससे वेदों की भाषा को छान्दस भाषा कही जाती है। संस्कृत नाटकों में भी अनेक पात्रों की भाषा प्राकृत रही है और इसका मूल कारण प्राकृत का जनभाषा और सर्वजन सुलभ होना है। उन्होंने प्राकृत के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्राकृत की रसिकता व उसके सौष्ठव के बारे में भी बताया। उन्होंने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने प्राकृत भाषा के नाटकीय प्रयोगों पर प्रकाश डाला और प्राकृत की प्राचीनता पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत अध्ययन की विद्यार्थी प्रतिभा कोठारी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

तत्त्व-विवेचन के माध्यम से आचार्य कुन्दकुन्द ने जैन दर्शन को अनेक नये अवदान दिए- प्रो. अशोक कुमार जैन

मासिक व्याख्यानमाला के 33वें व्याख्यान में 30 मार्च को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रो. अशोक कुमार जैन ने बताया कि आचार्य कुन्दकुन्द सभी परम्पराओं के सर्वमान्य आचार्य रहे हैं। उनके द्वारा लिखित साहित्य को आगमों के समकक्ष ही माना जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने जितनी सूक्ष्मता से वस्तु का विवेचन किया है, उतना किसी आचार्य ने नहीं किया। उन्होंने अपने तत्त्व-विवेचन के माध्यम से जैन दर्शन को अनेक नये अवदान दिये। प्रो. जैन ने आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों की सूक्ष्मता से विवेचन करते हुए उनमें वर्णित आत्मा के अतिरिक्त अनेक दार्शिनिक तत्त्वों को आगमों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। उन्होंने ज्ञान, दर्शन और चारित्र के साथ आचार मीमांसा का भी सूक्ष्म वर्णन किया। आत्मा को ज्ञान प्रमाण, ज्ञान को ज्ञेय प्रमाण और ज्ञेय को लोकालोक प्रमाण माना गया है। यह सिद्धान्त वस्तु-विवेचन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डा. जैन ने व्यवहार नय और निश्चय नय के माध्यम से भी तत्त्व विवेचन को सिद्ध किया। वस्तु विवेचन से पूर्व प्रो. अशोक कुमार जैन ने आगमों का परिचय एवं महत्त्व को प्रतिपादित किया।

आत्मज्ञान में रत हो जाना ही कुंदकुंद साहित्य का सार

इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने बताया कि आचार्य कुन्दकुन्द ने ज्ञानमार्ग के साथ-साथ भक्तिमार्ग को भी प्रशस्त किया। चेतन-अचेतन दोनों प्रकार की वस्तुएं ही धर्म (स्वभाव) के माध्यम से महत्त्व रखने वाली है। आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य में अध्यात्मवाद, सूफीवाद एवं भक्तिवाद की प्ररूपणा अत्यधिक सूक्ष्म रूप से की गई है। आत्मा को सब कुछ जानकर उसमें रत हो जाने को उन्होंने आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य का सार बताया। प्रो. प्रद्युम्नशाह सिंह एवं डॉ. आनन्द कुमार जैन ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। अध्यक्षता करते हुए प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन कहा कि आचार्य कुन्दकुन्द ने जो भी कहा वो अध्यात्म को आत्मा, ज्ञान और ज्ञेय के माध्यम से समझाने के लिए कहा। आचार्य कुन्दकुन्द ने चारित्र को ही धर्म माना और कहा कि वह समता में स्थित है। वस्तु उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य रूप में प्राप्त होती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने आत्मा और ज्ञान एक तत्त्व होते हुए भी संसार की परिणति में महत्त्वपूर्ण है। कार्यक्रम का प्रारम्भ आकर्ष जैन के मंगलाचरण से हुआ, स्वागत व विषय प्रवर्तन डॉ समणी संगीत प्रज्ञा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने तथा संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में देश के अनेक क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

भारतीय संस्कृति को समझने के लिए 'मागधी-प्राकृत' भाषा को समझना आवश्यक- डा. सुदर्शन मिश्र

'मागधी-प्राकृत भाषा : विकास एवं अनुप्रयोगों की विवेचना' विषय पर व्याख्यान आयोजित

मासिक व्याख्यानमाला के 34वें व्याख्यान में 27 अप्रेल को 'मागधी-प्राकृत भाषा : विकास एवं अनुप्रयोगों की विवेचना' विषय पर राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के डॉ. सुदर्शन मिश्र ने कहा कि भारतीय भाषाओं में 'मागधी-प्राकृत' का विशिष्ट स्थान रहा है। यह प्राचीन भाषा होने के साथ ही भारतीय संस्कृति को संरक्षित व संरक्षित रखने में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। उन्होंने मागधी प्राकृत के इतिहास से पूर्व मगध का परिचय व वैशिष्ट्य को बताया तथा कहा कि मागधी प्राकृत का सम्बन्ध मगध से होने के कारण इसका नाम मागधी प्राकृत पड़ा। प्राचीन होने के कारण मागधी प्राकृत का प्रभाव अन्य प्राकृत भाषाओं पर तो पड़ा, जो अन्य भारतीय भाषाओं में देखने को मिलता है। उन्होंने बताया कि इस भाषा के स्रोत वेदों में भी मिलते हैं, जो इसकी प्राचीनता को सिद्ध करते है। डॉ. मिश्र ने भगवान महावीर द्वारा भी अपने उपदेशों के लिए अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का उपयोग करना बताया। इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि मागधी प्राकृत का व्याकरणिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी ध्वनिगत विशेषताएं इसको अन्य प्राकृत भाषाओं से पृथक् करती है। अध्यक्षता करते हुए प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि प्राकृत भाषा का ही एक रूप 'मागधी-प्राकृत' है, जो एक क्षेत्र विशेष की भाषा होने कारण इसका नाम मागधी प्राकृत पड़ा। उन्होंने मागधी प्राकृत की अनेक विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर कुछ प्रतिभागियो ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आकर्ष जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत व विषय प्रवर्तन किया। अंत में डॉ. सब्यसाची सारंगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में देश के अनेक क्षेत्रों से लगभग 20 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत दार्शनिक साहित्य के पुरोधा आचार्य कुन्दकुन्द- डॉ. अशोक कुमार सिंह

शौरसेनी प्राकृत के महत्त्व पर प्रकाश डाला

मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 35वें व्याख्यान में 25 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैन अध्ययन केन्द्र, पुणे के शोधाधिकारी डॉ. अशोक कुमार सिंह ने आचार्य कुन्दकुन्द को प्राकृत दार्शनिक साहित्य का पुरोधा बताते हुए उनकी एक-एक कृति का बहुत ही सूक्ष्मता से विवेचन कियां उन्होंने बताया कि भारतीय दार्शनिक साहित्य परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उन्होंने अपने दार्शनिक साहित्य को प्राकृत जैसी सुमधुर भाषा में लिखकर उसको नीरस से सरस बना दिया। उन्होंने आचार्य कुन्दकुन्द की कृतियों में प्रयुक्त शौरसेनी प्राकृत की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला तथा शौरसेनी प्राकृत के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य कुन्दकुन्द की कृतियों में वर्णित दार्शनिक तत्त्वों की सूक्ष्मता से प्रकाश डाला। व्याख्यान के दौरान श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी उन्होंने किया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए शौरसेनी प्राकृत की विशेषताएं बताई। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत के विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विशय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत आगमों में वर्णित हैं, आर्थिक विकास के स्रोत- डॉ. दिलीप धींग

मासिक व्याख्यानमाला के 36वें व्याख्यान में 29 जून को अभूपा फाउन्डेशन, चैन्नई के शोध प्रमुख डॉ. दिलीप धींग ने प्राकृत भाषा के आगम साहित्य का परिचय देते हुए उन्हें भारतीय संस्कृति के वाहक बताते हुए कहा कि इनमें जीवन के सभी आयामों के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इन सभी विषयों में आर्थिक प्रबन्धन जैसे महत्त्वपूर्ण विषय का वर्णन आगमों में भी अनेक माध्यमों से हुआ है। उन्होंने आगमों में समागत आर्थिक आर्थिक विकास के स्रोतों का कृषि कार्य, पशु-पालन, व्यापार आदि के माध्यम से बहुत ही सूक्ष्मता से विवेचन किया। उन्होंने इस सम्बंध में श्रोताओं की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी इस अवसर पर विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने प्राकृत आगमों को भारतीय संस्कृति के संरक्षक के रूप में प्रतिपादित किया और आगमों को भारतीय संस्कृति का विश्वकोश कहते हुए इनमें वर्णित विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

शुभ भावना समारोह

मिस फेयरवेल आकांक्षा, मिस एवरग्रीन खुशी, मिस डेविल जीनत व मिस चार्मी के रूप में तेजस्विनी का चयन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में फेयरवेल पार्टी आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में तृतीय वर्ष की सीनियर छात्राओं हेतु 22 अप्रेल को फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने की। मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन थे। कार्यक्रम में सीनियर छात्राओं को कुछ विशेष टाइटल से नवाजा गया, जिनमें मिस फेयरवेल के रूप में आकांक्षा शर्मा, मिस एवरग्रीन खुशी जोधा, मिस डेविल जीनत बानो, मिस चार्मी तेजस्विनी शर्मा को चुना गया। इनके अलावा कुछ अन्य अवार्ड्स में फुल अटेंडेंस के लिए दिव्या भार्गव, मिस मल्टी टैलेंटेड हेमपुष्पा चौधरी, मिस एडरेबल के रूप में छात्रा सना खान को चुना गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में एनईपी सारथी बनी खुशी जोधा ने कार्यक्रम के दौरान एक प्रेरक वीडियो क्लिप द्वारा एनईपी के सर्वशिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और विद्यार्थियों के लिए एकाधिक प्रवेश एवं निकास आदि प्रावधानों को दर्शाया। मुख्य अतिथि प्रो. जैन ने लक्ष्य के प्रति अडिग रहने को ही सफलता प्राप्ति का मूल मंत्र बताया।

प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सीखने का अंदाज ही अपनी आगे की साधना को प्रतिफलित करता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. रेखा तिवाड़ी ने सदैव बड़ों के प्रति आदर एवं सम्मान के भाव को बनाए रखने का संदेश दिया। अतिथियों के स्वागत एवं सम्मान के पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई। डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। विदाई समारोह में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह, श्वेता खटेड़, प्रमोद ओला, मधुकर दाधीच, प्रगति चौरडिया, कुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. आयुषी शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन छात्रा मीनाक्षी भंसाली एवं कान्ता सोनी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन अभिषेक चारण ने किया।

निशा को 'मिस फेयरवेल' और सुभाष को 'मिस्टर हेंडसम' का खिताब दिया गया

संस्थान के अहिंसा और शांति विभाग में 25 अप्रेल को आयोजित विदाई समारोह में 'मिस फेयरवेल' के रूप में निशा पारीक को चुना गया, 'स्पार्कल ऑफ द डे' के रूप में संगीता जानू को खिताब मिला और 'मिस्टर हैंडसम' का खिताब सुभाष ठोलिया को दिया गया। यह समारोह विभाग के एम.ए. उतरार्द्ध के विद्यार्थियों के लिए विदाई कार्यक्रम पर रखा गया। आरम्भ में सीनियर्स द्वारा उनके लिए आयोजित कैटवॉक कार्यक्रम में अलग-अलग थीम पर अपनी प्रस्तुति देते हुए विभाग में व्यतीत किए गए 2 वर्षों की खट्टी-मीठी यादें साझा की गई। विदाई समारोह में रखे गए अनेक गेम्स में सीनियर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सीनियर्स के सम्मान में मुस्कान बानो ने पंजाबी गाने पर तथा कोमल जांगिड़ ने माधुरी मिक्सअप गाने पर अपनी प्रस्तुतियां दीं।

विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली विभिन्न चुनौतियों को लेकर कभी अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होना चाहिए और इसकी प्राप्ति के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् रोजगार के संसाधनों की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए भरसक प्रयास करने चाहिए। सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने सीनियर्स को जीवन में कामयाबी के लिए हमेशा आगे बढ़ते रहने और सफलता के लिए सतत् प्रयास करते रहने की प्रेरणा प्रदान की। सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने शुभकामनाएं देते हुए हमेशा अपनत्व का भाव रखने का संदेश दिया। विदाई के समय विद्यार्थी विभाग में अध्ययनरत अन्य विद्यार्थियों के साथ बीते स्नेह तथा प्यार को याद कर भावुक भी हो गए। कार्यक्रम का संचालन एम.ए. पूर्वार्द्ध के छात्र नरेंद्र सिंह राठौड़ ने किया।

हर क्षण का आनन्द लेते हुए जीवन का सफर गुजारें- कौशिक
दिव्या मिस फेयरवेल, ममता मिस गार्जियस व दीपिका मिस रेडियंट चुनी गई

संस्थान के शिक्षा विभाग में 29 अप्रेल को शुभ भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं ने गायन, नृत्य व अन्य रूपों में अभिव्यक्तियां प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मिस फेयरवेल का खिताब दिव्या भास्कर ने जीता, तो मिस गॉर्जियस व मिस रेडियंट का खिताब ममता गोरा व दीपिका स्वामी को दिया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलसचिव अजयपाल कौशिक ने कहा कि इस समय छात्राध्यापिकाएं एक रोड क्रॉस कर रही हैं, जिसमें उन्हें अपने जीवन का मार्ग चुनना है। यहां जिस अनुभव से वे गुजरी हैं, उन्हें उसका आनन्द लेना चाहिए और अपने जीवन को आनन्दमय बनाना चाहिए। यहां जो व्यक्तित्व निखारा गया है, उसका उपयोग जीवन भर किया जा सकेगा। उन्होंने सभी छात्राओं से अपने जीवन में परिश्रम और कर्तव्यबद्धता पूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। प्रो. नलिन के. शास्त्री ने जीवनोपयोगी सूत्र बताते हुए कहा कि जिस संस्थान ने शिक्षित व समर्थ बनाया, हमेशा उसके एम्बेसेडर के रूप में बन कर रहना चाहिए। व्यक्तित्व में यहां की शिक्षा व संस्कारों की झलक रहनी आवश्यक है।

शुभ भावना कार्यक्रम में हर्षिता पारीक, राधिका गहलोत, कंचन, ममता आदि छात्राओं ने विश्वविद्यालय में छात्र जीवन के अपने अनुभव जाहिर किए। दीपिका स्वामी व अवन्तिका शर्मा ने पीपीटी के माध्यम से अपने कालेज लाईफ के अनुभवों को सचित्र प्रदर्शन द्वारा तरोताजा किया। अन्य छात्राओं ने भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही विभिन्न मनोरंजक व ज्ञानवर्द्धक प्रस्तुतियां दी। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जीवन में कर्तव्यों पर ध्यान देने पर जोर देते हुए कहा कि कर्तव्य से ही अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का प्रारम्भ ऐश्वर्या व समूह ने सरस्वती वंदना और मेघा सोनी ने गणेश वंदना प्रस्तुत करके किया। अंत में खुशाल जांगिड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. गिरीराज भोजक, डा. लिपि जैन, डा. सुनीता इंदौरिया, डा. प्रगति भटनागर, डा. विष्णु कुमार, अभिषेक चारण, प्रमोद ओला, नेहा, डा. गिरधारीलाल, डा. आभासिंह, डा. आयुषी शर्मा, प्रगति चौरड़िया आदि समस्त संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

छात्राओं ने ली शैक्षिक भ्रमण के दौरान विश्वविद्यालय की जानकारी

श्रीमती केसरदेवी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय लाडनूं की वरिष्ठ छात्राओं के एक दल ने अपने एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत प्राचार्य ओमशंकर गर्वा के निर्देशन एवं वरिष्ठ अध्यापिका प्रेमलता जाट, शंकरलाल एवं राजनीति विज्ञान की व्याख्याता शशि शर्मा की अगुवाई में जैन विश्वभारती संस्थान पहुंच कर अवलोकन किया एवं वहां की पूर्ण जानकारी प्राप्त की। सभी छात्राएं संस्थान के मनोरम प्राकृतिक सौंदर्य को निहार कर मंत्रमुगध हो गई। उन्होंने संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित गुणवत्तापूर्ण बेहतरीन शैक्षिक उपक्रम की जानकारी भी प्राप्त की, जिसमें स्मार्ट क्लासेस के संचालन से छात्राओं का हित, कॅरियर गाइडेंस सेंटर की प्रासंगिकता, एनसीसी एवं एनएसएस इकाइयों की उपयोगिता, मेडिकल रूम की सार्थकता एवं समृद्ध कंप्यूटर लैब के साथ-साथ छात्राओं को सुरक्षित माहौल की उपलब्धता से छात्राएं काफी प्रभावित हुई।

इस दौरान प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने संबोधन में छात्राओं से विद्यार्थी जीवन को सदैव अपने संकल्प के प्रति एकाग्र रहने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि संकल्प शक्ति से ही लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। उन्होंने महाविद्यालय में वर्ष भर आयोजित होने वाले विभिन्न शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक उपक्रमों की विस्तृत जानकारी भी दी। इससे पूर्व हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने छात्राओं को स्मार्ट क्लासेस का प्रायोगिक अनुभव करवाया तथा शिक्षा जगत् में स्मार्ट क्लासेज के बढ़ते प्रचलन एवं उपादेयता के बारे में बताया। शैक्षिक भ्रमण के दौरान छात्राओं ने संस्थान में समय-समय पर होने वाले विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन-स्थल आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम का अवलोकन भी किया। शैक्षिक भ्रमण के दौरान डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, घासीलाल शर्मा, देशना चारण, हीरालाल देवासी आदि ने छात्राओं का मार्गदर्शन किया।

समाज में शांति और अहिंसक व्यवहार को कायम करने में सहायक रहती है 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली'

विश्व का पहला विश्वविद्यालय, जहां प्रारम्भ किया गया अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान को 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' का पैटेंट भी मिला

शोध, सुविधाओं और कॅरियर की संभावनाओं से भरपूर है अहिंसा एवं शांति के पाठ्यक्रम

शिक्षा के क्षेत्र में अहिंसा एवं शांति का प्रशिक्षण प्रदान करने में विश्व का सबसे अग्रणी विश्वविद्यालय लाडनूं का जैन विश्वभारती संस्थान बन चुका है। यह पहला विश्वविद्यालय है, जहां अहिंसा एवं शांति विभाग के रूप में पूर्ण विकसित एक पृथक् विभाग प्रारम्भ किया गया। युवा वर्ग को अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी सोच को बदली जाकर उन्हें पूर्ण रूप से समन्वयवादी और अहिंसक विचारधारा के पोषक के रूप में तैयार करके समूची मानवता के बदलाव की दिशा में यह अभूतपूर्व कदम बढाया गया है। अहिंसा और शांति विभाग न्याय, शांति और स्वतंत्रता का एक ऐसा समाज स्थापित करने की कल्पना करता है, जो संघर्ष और युद्ध, गरीबी और पर्यावरण क्षरण से मुक्त हो। सभी प्रकार के संघर्षों का समाधान अहिंसा के अनुकल अनेकांत, शांतिपूर्ण संवाद, मतभेदों के सम्मान, दमनकारी संरचनाओं को नष्ट करने और परस्पर सद्भाव विकसित करके करुणा, एकजुटता और सामंजस्य को बढ़ावा देने वाली मनोवृति का विकास करके मनुष्य मात्र को परिवर्तित किया जा सकता है।

अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली को सरकार ने पैटेंट किया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की सबसे बड़ी व महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि यहां आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित 'अहिंसा प्रशिक्षण' प्रणाली को लागू किया गया और उसे व्यवहार में लगातार उतारा जाकर व्यक्तित्व विकास और अध्ययन का माध्यम बनाया गया। अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेरणा से उनकी अहिंसा प्रशिक्षण की पूर्ण विकसित प्रणाली को अपनाकर बड़ी संख्या में लोगों को अहिंसा प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। संस्थान द्वारा पोषित-विकसित इस 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' को भारत सरकार के पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग द्वारा पैटेंट प्रदान किया जा चुका है। पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग के कंट्रोलर जनरल ने बायो मेडिकल इंजीनियरिंग के अन्तर्गत 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' को पैटेंट प्रदान किया है। इस पैटेंट के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की ओर से अहिंसा एवं शांति विभाग की डा. लिपि जैन, डा. बलवीर सिंह, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने भारत सरकार के समक्ष आवेदन किया था।

विश्व का पहला विश्वविद्यालय

यह विश्व का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जिसमें अहिंसा एवं शांति विभाग पृथक् बना हुआ है और इस विभाग द्वारा अहिंसा एवं शांति विषय में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्रदान की जाती है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन इस विभाग में में अहिंसक व्यवहार सम्बंधी प्रशिक्षण की प्रणाली विकसित की गई। इस परिपूर्ण प्रणाली द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन किया जाकर उसे अहिंक विचारों से दूर करके पूर्ण अहिंसक बनाया जा सकता है। व्यक्ति को मानवीय अस्तित्व और संकट की समस्याओं की गहन समझ प्राप्त करने में सक्षम बनाने, समस्याओं को हल करने के लिए अहिंसक साधनों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करने, सिद्धांत सिखाना और अभ्यास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने, अहिंसा में प्रशिक्षण प्रदान करने तथा अहिंसा, अनेकांत, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को बढ़ावा देने पर इस विभाग द्वारा मुख्यरूप से ध्यान दिया जाता है।

अहिंसा व शांति प्रशिक्षण सम्बंधी पाठ्यक्रम

इस अनूठे विभाग के रूप मे संस्थापित अहिंसा एवं शांति विभाग की मुख्य विशेषताओं में अहिंसा में प्रशिक्षण के लिए युवा शिविर आयोजित करने, पारिवारिक समायोजन और सद्भाव सम्बंधी कार्यशालाएं आयोजित करने, नशा मुक्ति, मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण नैतिकता, सापेक्ष अर्थशास्त्र आदि पर सम्मेलन और सेमिनार आयोजित करने तथा स्व-रोजगार के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने पर जोर दिया जाना है। इस विभाग द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों में डी.लिट और पीएच.डी., अहिंसा और शांति में एम.ए. एवं राजनीति विज्ञान में एम.ए. की डिग्रियां शामिल हैं। विभाग में शोध कार्य भी लगातार चलता रहता है। यहां शोध, अनुवाद और संपादन कार्य में अब तक 'घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं के लिए निवारण तंत्रः एक अध्ययन', 'अनेकान्त और पाश्चात्य दर्शनः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन', 'प्रश्न व्याकरण में अहिंसा की अवधारणा और आयाम', 'व्यवसाय प्रबंधन में अहिंसा की भूमिका का एक महत्वपूर्ण अध्ययन', 'भारत में आतंकवाद की समस्या और शांति पहल' आदि प्रमुख हैं। सतत शोध कार्य यहां इस विभाग की प्रमुख विशेषता है।

कैरियर की अथाह संभावनाएं

आजकल हर शिक्षा के पीछे कॅरियर की संभावनाओं पर सबसे पहले नजर डाली जाती है, तो अहिंसा एवं शांति विभाग से शिक्षित-प्रशिक्षित युवा के लिए अपना कॅरियर बनाने की भी अथाह संभावनाएं मौजूद हैं। अहिंसा व शांति विषय में योग्यता रखने वाले लोग गांधीवादी विचार और शांति अध्ययन विभाग, गांधीवादी और अन्य गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा ग्रामीण उत्थान, पर्यावरण संवर्धन, मूल्य-शिक्षा, संघर्ष समाधान, मानवाधिकार और अपराध रोकथाम आदि से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं में उपयोगी रूप से नियोजित हो सकते हैं। यह विषय जैन धर्म, बौद्ध धर्म और शांति अध्ययन के अंतर्गत आता है ,जिसे यूजीसी द्वारा आयोजित नेट और जेआरएफ परीक्षा में शामिल किया गया है।

विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सुविधाएं

जैन विश्वभारती संस्थान में अहिंसा एवं शांति तथा राजनीति विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर (एम.ए.) डिग्री दी जाती है। पी-एच्.डी. के लिए विषयों का विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध है यहां। अहिंसा एवं शांति को बढावा देने के लिए विद्यार्थियों के लिए आकर्षक छात्रवृति की व्यवस्था भी रखी है। यहां न्यूनतम फीस पर गुणवतापूर्ण अध्यापन करवाया जाता है। इसके लिए प्रशिक्षित, अनुभवी और योग्य संकाय सदस्यों की टीम उपलब्ध है। नवीनतम स्मार्ट कक्षाओं में अध्ययन करवाया जाता है। विद्यार्थियों के लिए खेलकूद एनएसएस, केंटीन एवं जिम की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया जाता है। अहिंसक जनचेतना के लिए अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन और सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रमों में सहभागिता के आयोजन एवं अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों के आयोजनों का लाभ भी विद्यार्थियों को प्राप्त होता है। यहां राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का अवसर विद्यार्थी प्राप्त करते हैं। इनके अलावा यहां विद्यार्थियों के लिए नेट, जे.आर.एफ., पी.एचडी. में प्रवेश के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन–प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाषती (न्यायप्रकाषिकाव्याख्यायुता)	पं. विष्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्षन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाष त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंष साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
17.	Psycho-Social & Psycho-Biological Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness and Academic Performance of School Children	Prof. Viney Jain	250
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोष	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोष	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोष	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
14.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
15.	Political Thought of Jainism	Naresh Dadhich	125
16.	Notion of Soul (Atma) in Jainism	Samani Rohini Prajna	150

Acharya Mahaprajna Naturopathy Centre

(A Commitment for A System of Life; Made of Humility and Empathy)

FEATURES:
- Comfortable Stay and Hospitality
- Detox and Rejuvenation
- Spiritual Environment
- Experienced Doctors
- Full Day Treatment
- Therapeutic Food
- Outdoor Gym
- Yoga Studio

THERAPIES:
- Colon Therapy
- Mud Therapy
- Hydrotherapy
- Steam/Sauna Bath
- Shirodhara, Panchkarma
- Stone Therapy
- Cupping Therapy
- Circular Jet, Spine Jet
- Jacuzzi *.....and many more*

Accommodation	Discounted Rates (Starts from)
3 - Days	Rs. 6,300/-
5 - Days	Rs. 10,500/-
7 - Days	Rs. 14,700/-

Specialized Treatment Programs:
Detox Program, Pain Management, Weight Loss Program, Allergy & Asthma Care, Diabetes Care, Wellness, Special Yoga Therapies

Separate Treatment Facility for Males & Females

Book Now

FOR REGISTRATION

+91-8209184651 ammcn001@gmail.com https://naturopathy.jvbi.ac.in